कृष्णकेलिमालानाटिकाक पात्रपरिचय

पुरुष

१	सूत्रधार	नाटक-निर्देशक ।
२	श्रीकृष्ण	अवतारी पुरुष, वसुदेवक पुत्र, नायक ।
३	हलधर	श्रीकृष्णक जेठ भाए ।
४	वसुदेव	श्रीकृष्णक पिता ।
५	नारद	देवर्षि ।
६	नन्द	गोकुलक अधिपति, गोपराज ।
७	वृषभानु	राधाक पिता, गोप ।
८	कंस	मथुराक राजा, दैत्य ।
९	केशी	कंसक सेनापति, दैत्य ।
१०	बकासुर	बगुलाक रूप मे दैत्य ।
११	अघासुर	पापस्वरूप सापक रूप मे दैत्य ।
१२	उग्रसेन	★श्रीकृष्णक भक्त, कंसक पिता ।
१३	अक्रूर	★श्रीकृष्णक भक्त ।
१४	उद्धव	★श्रीकृष्णक मन्त्री ।
१५	रजक	★
१६	मुष्टिक	★कंसक पहलमान ।
१७	चाणूर	★ ,, ।
१८	कुवलयपीड़ (कुञ्जर)	★हाथी ।

स्त्री

	नटी	सूत्रधारक पत्नी ।
२	देवकी	श्रीकृष्णक माए (जन्म देनिहार) ।
३	यशोदा	श्रीकृष्णक माए (पालन कएनिहार) ।
४	राधिका	वृषभानुक पुत्री, नायिका ।
५	विशालाक्षी	राधाक सखी ।
६	कामाक्षी	,, ,, ।
७	कलावती	राधाक माए ।
८	पूतना	राक्षसी ।
९	कुब्जिका	★ ,,
१०	मालाकारक पत्नी ★	

★नाटिकाक खण्डित भाग मे ।



श्रीः

महाकवि नन्दीपति विरचिता-

★ कृष्ण-केलिमाला नाटिका ★

(मङ्गल-श्लोक:)

सानन्दं[1] गिरिजानन्दं श्रुतिगीतं गजाननम् ।
वन्दे वन्द्यं सुराद्यं च देवदेवं जगद्गुरुम् ॥१॥

(श्लोकार्थे गीतम्) — १

हे भव-तनय भजल[2] छिअ तोहि ।
गजमुख सतत सुमुख रह मोहि ॥
गिरिजानन्दन गणनायक ।
जगत भगत अभिमत-दायक ॥
विषम-विलोचन जटा[3]-मटुक ।
संग प्रथम शिशु बाल-बटुक ॥
आखु चढ़ल शिशु चन्द क चन्द ।
विघ्न-विनाशन अति सानन्द ॥

श्री

आनन्दित, गिरिजाक पुत्र, वेदमे वर्णित, देवतामे आदि (प्रथम), देवहुक देव, जगद्गुरु, वन्दनीय गजानन (गणेश) के प्रणाम करैत छी ॥१॥

श्लोकक अर्थ मे गीत--१

भव-तनय = महादेवक पुत्र । समुख = सन्मुख (सोझाँ) । विषम-विलोचन = त्रिनेत्र (महादेव) के जटाक मुकुट छनि । आखु = मूस । कय कर = हाथ मे कमल लय, अभय सेहो दोसरा मे लेत छथि ॥

१—× × (एहि श्लोकक अभाव)—क । २—भजत क । ३—जटाकूट—ख ।

कय[४] कर कमल, अभय कर लेहु[५] ।
मोदक सहित लम्बोदर देह ॥
नन्दीपति कवि मङ्गल गाव ।
शम्भु तनय गुनमय[६] बुझ भाव ॥

(दोहा)

गिरजा-नन्दन गजवदन, विघन[७]-विदारण हेतु ।
लम्बोदर असरन सरन, भव-सागर सुख सेतु ॥१॥
तोहें तोहर सन, आन नहि, एहि कारज एहिठाम ।
करु सम्पूरन नाटिका, तें तुअ करिअ प्रणाम ॥१॥

अथ नान्दी-श्लोकः

यस्यैषा वनिता नदीपति-सुता दारिद्र्य-दैत्यार्दिनी
नीलेन्दीवर-लोचनाऽन्वित-सुधासारैकवक्त्राम्बुजा ।
उत्पत्ति-स्थितिकारकः श्रुतिमुखो नाथैकनाथप्रभु
र्देवानामधिपः पुराणपुरुषः पीताम्बरः पातु वः ॥२॥

अपि च

वक्त्रं यस्य सरोज-सुन्दरसमं वाक्यं[८] सुधामिश्रितं
हास्यं स्फीतमतीव बल्लव-सुतानेत्रस्य सौख्यप्रदम् ।

दोहा— असरन सरन = अशरणक शरण । भव-सागर = संसाररूपी समुद्र मे सुख दायक बान्ह ॥१॥

नन्दी श्लोक

जनिक ई पत्नी समुद्रक पुत्री (लक्ष्मी) दरिद्रतारूपी दैत्यक नाश कयनिहारि ओ नीलकमल सन आँखि सँ युक्त अमृतक रस सँ परिपूर्ण मुहरूपी कमल वाली छथिन्ह से संसारक उत्पत्ति ओ पालन कयनिहार, वेदरूपी मुहवला, एकमात्र महाप्रभु, देवतालोकनिक अधिपति पुराणपुरुष पीताम्बर (विष्णु भगवान्) अहाँलोकनिक रक्षा करथु ॥२॥

६—रसमय बुझाव—ख । ७—विघिन—ख । ४—एक - ख ।
५—देह - ख । ८—वाक्ये—ख ।

नेत्रं यस्य मनोहरं सुविदितं वामभ्रुवां जीवनं
तस्यैकस्य विरच्यते सुचरितं प्राक् पुण्यतो नो गुणैः ॥३॥

(नान्द्यन्ते सूत्रधारः)

सूत्रधारः—अलमतिविस्तरेण । आर्ये ! इहागम्यताम् ।

नटी—(प्रविश्य) अज्ज ! आणवेदु । [आर्य ! आज्ञापयतु ।]

सूत्रधारः— आदिष्टोऽस्मि—

नटी— अज्जउत्त ! कधं[९] अह्वाणं किदं ? [आर्यपुत्र ! कथमाह्वानं कृतम्?]

सूत्रधारः— श्रीनन्दीपति-नाटिका-नृत्येन[१०] सुजन-सभाऽनुरञ्जनाऽभिप्रायेण ।

नटी— अज्जउत्त ! [११]णन्दीवइ- कइ-किदं णाडअ-समुद्दं विसेसेण कधअ ।
[आर्यपुत्र ! नन्दीपति—कविकृतं नाटक—समुद्रं विशेषेण कथय ।]

सूत्रधार— (श्लोकेन) —

या नन्दीपति - शर्मणा विरचिता चाभ्यासिता नाटिका
किं वा शान्तिसुधामयी किमथवा शृङ्गारहारावली ।
कृष्णः केवल—नायकः सुवदना गोपात्मजा नायिका
सन्तोषाय सभाजनस्य दयिते ! नृत्येन विस्तारय ॥४॥

धाञोरी—

जनिक मुँह कमलसनक सुन्दर छनि वाणी अमृतसँ युक्त छनि, अत्यन्त परिपूर्ण हँसी गोपपुत्री-राधाक आँखिकसन सुखदायक छनि सुन्दर आँखिसुन्दरभौंहवालीक प्रसिद्ध जीवन छनि, ताहि एकमात्र व्यक्ति (श्रीकृष्ण) क सुन्दर चरित्र अपन पूर्वक पुण्य सँ बनाओल जाय रहल अछि, अपन गुण (पाण्डित्य) सँ नहि ॥३॥

(नान्दीक अन्तमे सूत्रधार)

सूत्रधार—नान्दीपाठक विस्तार उचित नहि । आर्ये ! एम्हर आउ ।

नटी—(प्रवेश कय) आर्य ! आज्ञा दिअ ।

९- कथं पुच्छ्नाण किह- ख । १०- नाटिकाभिनयः ख । ११- णन्दीवे के वेवं- क, नन्दिपेकिविदं णाटडकविसेसेन कधअ- ख ।

[कविवंशावली]

वंश [१२]पवौली वड़ विपुल[1], जगभरि के नहि जान।
मैथिल सभक मानिय[१३], पाँजि तकब परमान[१४] ॥३॥
सुनइत ई वंशावली, लागति[१५] अति अभिराम।
सिद्ध पुरुष शिवदत्त भा, वास जनिक[१६] बड़िआम ॥४॥
ताहि वंश[2] अवतार लए, सगुन सुधापति भेल।
परजापति मुनिवृन्त तह, दक्षक उपमा देल ॥५॥
तन्हिकाँ भेल पुनु दुइ तनय, अति सुबुद्धि सविवेक।
केशव रघुपति नाम तसु, सरस[१७] एक तह एक ॥६॥
रघुपति भा काँ चारि[3] सुत, गंगाधर, जयराम।
सुरगुरु[4] सम हरिपति सुधी, अतिसुबुद्धि सदु[१८] स्याम ॥७॥
हरिपति हरि अवतार तसु[5], गुरु ठाकुर गुणवृद्ध।
पण्डित गोकुलनाथ झा, जनिक[१९] शिष्य परसिद्ध ॥८॥

सूत्रधार — आदेश भेटल अछि -

नटी — आर्यपुत्र ! कियेक बजाओल ?

सूत्रधार — श्रीनन्दीपतिकृत नाटिकाक नाँचक कारणें, नीकलोकक सभाक मनोरञ्जनक अभिप्राय सँ।

नटी — आर्यपुत्र ! नन्दीपति-कवि-कृत नाटक-समुद्रकें विशेषरूपें कहू।

सूत्रधार — (श्लोक द्वारा) जे नन्दीपति शर्माक द्वारा बनाओल ओ अभ्यास कराओल नाटिका थिक वा शान्तिरूपी अमृत बनल अथवा शृङ्गार रसक मोतिक माला थिक जाहि मे केवल श्रीकृष्ण नायक छथि ओ गोपपुत्री राधिका नायिका छथि, ताहि नाटिका कें सभास्थ लोकक सन्तोषक लेल हे प्रिये ! नृत्यक द्वारा विस्तार करू ॥४॥

1 — देश। 2 — शिवदत्तक वंश पवौली — बड़िआम मे (हुनक पौत्र) सुधापति झा गुणवान् भेलाह, जे मुनिक आचरणकय प्रजापति कहओलनि ओ दक्ष

१२ - पुंगौली ख। १३ - मानिअ ख। १४ - वर मान ख। १५ - लागत ख।
१६ - ठानक क। १७ - एक एक ख। १८ - सहु ख। १९ - शिष्य जनिक।

सुकवि कृष्णपति तसु तनय, तन्हिकाँ चारि[6]कुमार।
चतुर चन्द्रपति हेमपति-अतिसर्वज्ञ पवार ॥९॥
नन्दीपति कवि, शिवभगत, लक्ष्मीपति तसु छोट।
अपन बड़ाइ की करब, जओं[२०]अछि गुण बड़गोट ॥१०॥
भाषाकवि भय संसकृत, कतहु करिअ एक बाध।
पण्डित कवि जे जतय छथि, छेमिअ[२१] हमर अपराध ॥११॥

नटी — अहो भाअधेअं। [अहो भागधेयम्।]

सूत्रधार:- एवमेव। ततः- (गद्यम्)-

जय जय जगदेकनाथ ! चतुर्वर्गविकारण[२२] ! गोविन्द ! गरुडासन ! समरवशीकृतपुण्यायुध-प्रवाहन ! पीताम्बर ! पद्माक्ष ! सदय ! दयालया-मानसैकहंस ! कंसध्वंसावतंस ! महाबंश ! वंशाऽन्वित-करकमल ! यादवेन्द्र ! जनार्दनाऽच्युत ! शङ्खचक्राब्जगदाधर ! सकल भूपाल-मुकुटमणि-भूषित पादपद्म-पवित्रीकृत-भूमण्डल ! देवदेव[२३] ! देवकीतनय ! तालाङ्कानुज[२४] ! नन्दनन्दन ! विश्वाभिराम ! विश्वविख्यातैक-पञ्चपुरुष ! पुरुषोत्तम ! पतितपावन ! शौर्यविदात ! सुरपूजित ! सकल-सुरासुर-कामना-लताधारैक[२५]-कल्पपादपो-पनिपन्नारायण ! गुणाशेष[२६]-

(महादेवक श्वशुर) क उपमा योग्य भेलाह।

3 - (1) गङ्गाधर, (२) जयराम, (३) हरिपति, (४) सदुपाध्याय श्याम।

4 - बृहस्पतिक समान विद्वान् हरिपति।

5 - ताहि चारू भाइ मे हरिपति भा विष्णुक अवतार, गौरवयुक्त, श्रीमान् (गौड़ेक अधिपति) ओ गुण सँ उत्कृष्ट छलाह, जनिक शिष्य प्रसिद्ध गोकुलनाथ उपाध्याय छलथिन, तनिक (हरिपतिक) पुत्र सुकवि कृष्णपति झा भेलथिन।

6 - (१) चतुर चन्द्रपति, (२) सर्वज्ञ हेमपति, (सर्वज्ञान गरीब)(३) नन्दीपति कवि, (४) शिवभक्त लक्ष्मीपति।

नटी — अहो भाग्य।

सूत्रधार:- से ठीके। तखन, - [गद्य द्वारा] -

२० - जौं ख २१ छेमहि — ख। २२ - हनि कारण - ख। २३ - X - ख।
२४ - तालांकानुज - ख। २५ - धार कल्प - ख। २६ - गुणदोष - ख।

तल्प-कल्पिताऽनेकपुराणकल्प ! कल्पकल्पान्तकारणैकब्रह्म ! ब्रह्मेन्द्रादिसेवित ! सुप्रभाङ्ग ! धीरातिधीर ! धर्मस्वरूप ! यशःप्रतापालङ्कार ! मानवावतारोकलि-कल्मष-नाशन ! कामकला-विलास-विन्यास-कुशल ! कुशलदायक[27]! गोपाङ्गनाचेलचौर ! नृत्यगीत-कविता-रसिक ! विबुध[28] ! विपिन-विहारोपार्जित[29]-पावकोपम ! प्रचण्डभुजदण्डो[30]-द्दण्डकोदण्ड ! विद्याविशारद ! शारद-सुचारु-चन्द्रवदन ! मधु[31]मथनाऽऽनन्दकन्द ! दुरित-तमःस्तोम[32]-सोम ! शोभासदन ! सर्वोपकारक[33] ! श्रीकृष्णदेव ! प्रचुरतरविघ्न-विघातक-कामनया तव चरण-चारु-पुण्य-पुण्डरीकमहं वन्दे ।

जय जय संसारक एकमात्र स्वामी, धर्म अर्थ काम मोक्षरूप चारु पुरुषार्थक आदिकारण, गोविन्द, गरुड़वाहन, युद्धमे वश कयल कामदेवक नाश कयनिहार (शिवरूपधारी), पीयर वस्त्र धारी, कमल सन आँखिवला, कमल युक्त, लक्ष्मीक मनरूपी मानस-सरोवरक एकमात्र हंसरूपी, कंसक नाश कयला सँ अलङ्कृत, पंच कुल मे उत्पन्न, वंश परम्परा सँ हाथ मे कमल (तत्सदृश रेखा) सँ युक्त, यादवराज, जनार्दन, अच्युत, शख चक्र कमल गदाधारण कयनिहार, सकल राजाक मुकुटक मणि सँ शोभित चरणकमल सँ भूमण्डलकेँ पवित्र कए-निहार, देवहुक देव, देवकीक पुत्र, बलदेवक छोट भाय, नन्दक पुत्र, संसार मधि मे सुन्दर, संसार मे प्रसिद्ध एकमात्र यज्ञपुरुष, पुरुषोत्तम, पतितकेँ पवित्र कयनिहार, वीरता सँ प्रशस्त, देवता सँ पूजित, सकल देवता ओ दैत्यक कामना रूपी लतीक आधारभूत एकमात्र कल्पवृक्ष, उपनिषद् मे प्रसिद्ध नारायण अशेष गुणरूपी ओछाओन रूप मे कल्पित अनेक पुराणस्वरूप, कल्प कल्पान्तक कारण भूत एकमात्र ब्रह्म ब्रह्मा इन्द्र आदि सँ सेवित, प्रकाशमान अङ्गवला, अत्यन्त धीर, धर्मस्वरूप, यश ओ प्रतापक आभूषणवला, मानवक रूप मे अवतार लेनिहार, कलियुगक पापक नाश कयनिहार, लक्ष्मीक संग विलासक विन्यास मे पटु, कुशल देनिहार, गोपस्त्रीक वस्त्र चोरओनिहार, नृत्य गीत ओ कविताक रसिक, देव, वनकेँ जरओला सँ उपार्जन कयल गेल आगिक सदृश प्रतापवला, प्रचण्ड भुजदण्डरूपी उद्दण्ड बाणवला, विद्या मे पारंगत, शरद ऋतुक सुन्दर

२७ - बहुदायक - ख । २८ विबुधारि ख; विबुधाः क । २९ विहारोपार्जित् ख । ३० भुजराज ख । मेघ सकल ख । ३१-गुणानन्द ख । ३२ —स्तोमध्वम ख । ३३—कारकारक ख ।

(इति मङ्गलपदम्[34] । इदमेव सकलमङ्गलदायकम्) ।

(ततः कृष्णादि-प्रवेशसूचनागीतम्)—२

सुन्दर सरल सबल बनमारि ।
सखी सहित वृषभानु[35]-दुलारि ॥
यशोदा नन्द देवकि वसुदेव ।
अठमाँ गरभ जनम हरि लेव ॥
कंस केसि मुष्टिक चाणूर ।
कुवलयपीड़ रजक अकरूर ॥
उद्धव उग्रसेन अवधारि ।
पुतना मालाकारक नारि ॥
नन्दीपति हरि हरथु कलेस ।
एहि नाटक[36] एतबा परवेस ॥

(ततः श्लोकः)—

उद्धवो माधवो राधा यशोदा देवकी तथा ।
वासुदेवश्च नन्दश्च कंसः केशी च पूतना ॥४॥
रजकः कुब्जिका चैव कुञ्जरासुर एव च ।
चाणूरो मुष्टिकश्चैव उग्रसेनस्तथा नृपः ॥५॥

चन्द्रमा सन मुँहवला, मधुनामक दैत्यक नाश कय आनन्द देनिहार, पापरूपी अन्धकारक समूहक हेतु चन्द्रस्वरूप, शोभाक भवन, सभक उपकारक हे श्रीकृष्ण देवता ! पर्याप्त विघ्नक नाशक कामना सँ अहाँक चरणरूपी सुन्दर पुण्यक कमल केँ हम प्रणाम करैत छी ।

(ई मङ्गल-पद थिक । इयेह सभ मङ्गल दैत अछि ।)

(तखन कृष्ण आदि पात्रक प्रवेशक सूचनाक गीत होइछ ।)

एहि कृष्णकेलिमाला नाटक मे एतबा पात्रक प्रवेश होइछः—

१ श्रीकृष्ण, २ राधिका, ३ यशोदा, ४ नन्द, ५ देवकी, ६ वसुदेव, ७ कंस, ८ केशी, ९ मुष्टिक (कंसक पहलमान), १० चाणूर (पहलमान), ११ कुवलयपीड़ (कंसक हाथी), १२ रजक, १३ अक्रूर,

३४—पद- ३५ — वृषभानु ख । ३६-हरिनाटिक ख ।

(अथैतेषां प्रवेशः । ततः प्रसव-वेदनाऽऽकुला-देवकी-

प्रवेशिका-गीतम)--३

बेदन बेआकुलि[13] चौदिस हेरि ।
देवकी कर कहना कत बेरि ॥
जत जत गरभ अएलाहु अवतारी ।
तत तत कंस हरल मोर मारी ॥
जावत जिउत कंस निरमोही ।
प्रसव-बेदन तहि की फल मोही ॥
काहि कहब कओने राखब गोइ ।
अठमहु बेरि भरोस न होइ ॥
मन कर करिअ अगिनि परवेसे ।
एहि तह ओहि बड़ घोर कलेसे ॥
नन्दीपति भाखइ कथिलाई ।
जन्हि जनमब तन्हि करब उपाई ॥

(ततः प्रविशति देवकी)

१४ उद्धव, १५ उग्रसेन, १६ पुतना ओ १७ मालिनि ॥ ई मुख्यपात्रक सूची थिक । अन्य अनेको गौण पात्र भेटताह । जेना नारद, वृषभानु, कलावती, विशालाक्षी, कामाक्षी आदि ।

(तखन श्लोक)—

उद्धव, माधव, राधा, यशोदा, देवकी, वसुदेव, नन्द, कंस, केशी, पूतना, रजक, कुब्जा कुञ्जरासुर चाणूर, मुष्टिक एवं उग्रसेन राजा ॥५,६॥

(आब हिनका सभक प्रवेश होएत । तकर बाद प्रसव-वेदना सँ विकल देवकी प्रवेश करैछथि । तकर गीत)—३

बेदन = पीड़ा सँ । गोइ = गुप्त कय । अगिनि परवेसे = आगि मे पैसब । एहि तह = एहि सँ । भाखइ = कपाड़ धुनब ।

(तखन देवकी प्रवेश करैत छथि ।)

१३ – बेआकुल – ख ।

देवकी—(श्लोकेन) किं मे प्रसवदुःखेन, ततो गर्भेण किं पुनः ।
अथवा किन्तु[38] पुत्रेण, यावत् कंसयमो भुवि ॥७॥

(ततो देवकीगर्भ-निवासि-मायावि-जनस्य योगनिद्रया सकिङ्करः सपरिवारः कंसासुरः सुप्तः । तदनन्तरमष्टम्यां तिथौ भाद्रकृष्णपक्षे मध्यनिशायां श्रीकृष्णेनाऽवतारो[39] लब्धः । देवकी शङ्ख-चक्र-गदा-पद्माऽन्वित-चारुचतुर्बाहुं[40] देदीप्यमानं[41] बालकमवनितले पतितं दृष्ट्वा चतुर्दिशमवलोक्य सत्वरं क्रोडे कृत्वा, पुनश्च पयोधरं ददाति ।

(अथ दोहा)—

त्रिभुवनपति असरन-सरन, जे सहजक सिसुरूप ।
से कत समय बिचारिकहुँ, जे न जान अरिभूप ॥१२॥

(श्रीकृष्णः तथैव कृत्वा पयोधरं पिबति ।)

(अथ श्रीकृष्णप्रवेशिका - गीतम)...४

जनमल जदुकुल - बालक, बाल - कमलमुख रे ।
सुर-नर - मुनिगन - पालक, पालक अतिसुख रे ॥

देवकी – (श्लोक द्वारा) हमर प्रसवक दुःख सँ की ओ गर्भ सँ की ? अथवा पुत्र सँ की ? यावत् एहि पृथ्वी पर कंसरूपी यमराज जिबैत अछि ।७

(तखन देवकीक गर्भमे निवास करयवला मायावी लोकक योगनिद्रा सँ सेवक सहित सपरिवार कंसासुर सूति रहल । तकर बाद अष्टमी तिथिमे भादवक कृष्णपक्षमे मध्य रातिमे श्रीकृष्ण अवतार लेल । देवकी शंख-चक्र-गदा-पद्म सँ युक्त सुन्दर चारि बाँहिवला अत्यन्त चमकैत बालक केँ पृथ्वी पर खसल देखिकेँ चारू दिस देखि झटदय कोरा कय, फेरि दूध दैत छथि ।)

(आब दोहा) – असरन-सरन = अशरणक शरण । सहजक = स्वाभाविक । अरिभूप = शत्रु राजा (कंस) ॥१२॥

(श्रीकृष्ण तहिना कय दूध पिबैत छथि ।)

३८ किं दुःखेन – क-ख । ३९–कृष्णोऽवतारो ख । ४०–बाहु ख । ४१ – मान – क ख ।

विलप तनय देखि देवकि, देव ! कि होइति[४२] गति रे ।
भूपति भूप-तिलक कंस, तेँ डरेँ विकलमति रे ।।
जत जत सुत मोहि जनमत, जन मत इहे दहु रे ।
जञो [४३]एहि-विधि विधि भागव,[४४]की फल अबेदहु[४५] रे ।।
जोग निदेँ सब भेल बस, बस[४६] पुरजन जत रे ।
हरि अरि सबल सब ल' पुनु सुतल[४७] शिलारत रे ।।
वसुदेव आए तुलाएल, लाएल धार एक रे ।
तोरित तोरि तनय[४८] लय चलु, पथ न[४९] केओ छेक रे ।।
नाँघि अएलहु अरि दुरग, दुरग पथ पुनु रे ।
थाह रहिह जमुना जल ! जलद ! बरिस जनु रे ।।
लए सिसु पार उतारल, तारल मन दुख रे ।
आबे अएलाहुँ वल्लव पुर, पुरत सकल सुख रे ।।
जसोमति सुता सुताअलि, जननि[५०] जोगवस रे ।
वसुदेव देव बदलि करु, निजपुर परवेस रे ।।
वसुदेव देवि, देवि दए, धीरज धरु मन रे ।
चेहोँ-चेहोँ सुनि कंस तरकल, तरकल तहिखन रे ।।
नन्दीपति सुनु मानव ! मानब निरनय रे ।
कंस-गरव हरि[५१] हरिकहु, बधब बैरि लए रे ।'

(ततः कंसासुरो देवकीगृहमागत्य देवीं दृष्ट्वा गृहीत्वा पुनश्चागत्य गृह-बाह्यदेशं पश्यति ।)

(श्रीकृष्णक प्रवेश करबाक गीत)—४

बाल - कमल - मुख = सद्यः फुलायल कमल सनक मुहवला ('बालक ओ बाल - कमल' मे बालक पदक आवृत्ति भिन्न अर्थ मे यमक अलंकार भेल । एहि गीत मे प्रत्येक पद एहि सँ युक्त अछि ।) पालक = पालन कएनिहार । पालक = पलना पर ।

४२ - होमति - ख । ४३ - अ हि - ख। ४४...भागब - क । ४५ - आबहुँ - ख । ४६ बस जन परजन रे...ख । ४७ सुतल शिलावस ख ।
४८ - तोरित लय - क; तोरित तनय चलु - ख । ४९ - जनु केओ छोक । ख । ५० - जानि - क । ५१ - × (अभाव) - ख ।

(ततो नारद-प्रवेशिका- गीतम्)- ५

जानि कुमारि मगन मथुरेश[५२] ।
एहि अवसर नारद परवेश ।।
मन अवधारि अपन भल जानि ।
हमर वचन हित कए हलु मानि ।।
की[५३] होअ कखने जानि नहि[५४] जाए ।
किए न बधह एहि कहह बुझाए ।।
सिसु कन्या एहि एकओ न हेतु ।
आठम गरभ तोहर जिवकेतु ।।
मथुरापति मानल उपदेस ।
नन्दीपति हरि हरथु कलेस ।।

देवकि = देवकी, हे देव ! की होयत । भूपति = राजा कंस, राजा मे तिलक (श्रेष्ठ) । जनमत = जन्म लेत, लोकक मत । इहे दहु = दयेहु । विधि = तरहेँ, भाग्य । भागव = फूटत । अबेदहु = आबहि । बस = वश मे, बसैत । हरि अरि = हरिक शत्रु । सबल = बलवान्, सब लय । शिलारत = पाथर पर भेड़ भेल । तुलाएल = उपस्थित भेलाह । तनय = पुत्रकेँ । त.रित = त्वरित (शीघ्र) । तोरि = तिरोहित(झाँपि) कय । अरि-दुरग = शत्रुक दुर्ग । दुरग = दुरगामी । वल्लव-पुर = गोपक नगर । सुता = पुत्रीकेँ । जननि = यशोदा माता । जोगवस = योगवश भगवतीक वश (निन्द) भय गेलीह । देवि = देवकीकेँ, देवी (भगवती) = यशोदाक कन्या । तरकल = क्रुद्ध भय जोर सँ बाजल, मेघ गर्जल । मानव = मनुष्य, स्वीकार करब । गरव = गर्व । हरि = कृष्ण, हरण कय ।

(तखन कंसासुर देवकीक घर आबि देवी = कन्या केँ देखि पकडि पुनः घर सँ बाहर आबि देखैत अछि ।)

(तखन नारदक प्रवेश करबाक गीत)- ५

कुमारि = कन्या जानि । अवधारि = विचारि । बधह एहि = एकरा मारैत छह । सिसु = ई बच्चा अछि ओ कन्या थिक ताहि हेतु हमर किछु नहि

५२ - मथुरेश - ख । ५३ - की । ५४ - न ।

कंसासुरः- महर्षे ! तव भाषितमसत्यमपि सत्यं, सत्यं, सत्यमेव। (प्रणम्य आसनं ददाति।)

नारदः— सर्वदा शुभमस्तु।

(यद्यपि पितृव्यपुत्रिका-कृपाङ्केन[55] किञ्चिद् विचारविमुखोऽपि। तथापि नारदोपदेशेन शिलाशकलोपरि ताडनाऽभिप्रायेण क्षिप्ता देवी कंसकरान्मुक्ता चाऽन्तर्हिता। इत्येव दर्शनाऽनन्तरमिदमाश्चर्यं सर्वे भाषन्ते कंसासुरं प्रति— "पामर ! गतोऽसि[56], गतोऽसि"।)

(देवी गगनस्य[57] किञ्चिदूर्ध्वदेशं गत्वा अनन्तरं कंसासुरं प्रति यदीरितं तद् गीतेन समीचीनप्रकारेण गायन्ति नर्त्तकाः इत्यभिप्रायेणाऽत्र गीतं समीरितं नाटिकाकारेण[58]।)

सूत्रधारः—आर्ये ! इत्येव बोद्धव्यम्।

नटी — "[59]अज्जउत्त ! को विसेसो ? एदं जुत्तं[60] कइकिद। [आर्यपुत्र, को विशेषः ? एतद् युक्तं कविकृतम्।]

कय सकैछ से नहि बुझइ। एहि दून्नू मे एको कारण युक्त नहि। केवल आठम गर्भ तोहर जीवन हेतु केतुग्रहक समान नाशक अछि।

कंस-- महर्षि ! अहांक कहल असत्यो बात सत्य थिक, सत्य थिक, सत्ये थिक।

(प्रणाम कय आसन दैत छथि।)

नारद-- सदिखन शुभ हो।

(यद्यपि पितिऔत-बहिनिक उपर कृपा रहलाक कारणें कनेक विचारसँ विमुखो भेल तथापि नारदक उपदेश सँ पाथरक खण्ड पर पटकबाक अभिप्राय सँ फेकल गेलि देवी कंसक हाथ सँ छुटि लुप्त भए गेलीह। इएह देखलाक बाद ई आश्चर्य सभ केओ कंसक प्रति बजैत अछि-- "लंपट ! गेल छह ! गेल छह !!")

(देवी आकाश मे किछु उपर जाय कंसक प्रति जे बजलीहि से नीकजकाँ नर्तकसभ गबैत छथि-- एही अभिप्राय सँ एतय नाटिकाकार गीत कहलनि अछि।)

५५— कृपावशेन। ५६— गतासि गतासि। ५७ गगनं पश्य - क। ५८— नाटिकायां, ५९ - आर्यपुत्र। ६० जुत्तं कोवेद - ख; कं वेद - क।

(अथ[61] गीतम्)- ६

छोड़ छोड़ बहु-बकवाद रे[62]।
मन मानि रहु अवसाद रे॥
मतिमूढ़ की चिन्ह मोहि रे।
तेँ कहब की हम तोहि रे॥
जत जनमल देवकी-बाल रे।
तत बधह तोहेँ ततकाल रे॥
सुन सुन अधम असुर रे।
तोहि तोर हृदय कुरूर[63] रे॥
जदुनाथ लेल अवतार रे।
कहु आब की परकार रे॥
[64]वर-चक्र, गदा विसाल रे।
कर संख, पद्म सनाल रे॥
आब जे से आनन्दकन्द रे।
जग जितब दानववृन्द रे॥
जनि वधल छल दसग्रीव रे।
तसु आज[65] के अछि जीव रे॥
[66]वर देवि-वानी सुनि रे।
किछु कंस कहु मन गुनि रे॥

सूत्रधार--- आर्ये ! इएह बुझू।

नटी---- आर्यपुत्र, एहि मे की विशेषता अछि ? ई तँ कविक कयल युक्त (उचिते) अछि।

[गीत]- ६

अवसाद = साद, व्यथा। मतिमूढ = बुद्धिहीन। बधह = मारैत छह। कुरूर = क्रूर, निर्दय। वर चक्र = उत्तम चक्र, विशाल गदा, शंख ओ नालसहित कमल — ई चारू चारि हाथ मे धारण कयने ई भगवान् विष्णु अवतार

६१-अथ। ६२ = × (अभाव)— — क। ६३- क्रूर। ६४— × × (दू पाँतीक अभाव)— ख। ६५— आज-क। ६६— एत बाद मकानिक— ख।

हमे[६७] असुर अतिबल कंस रे।
कओन करत हमर विधंस रे।।

के विष्णु ब्रह्मा रुद्र रे[६८]।
की करत समता क्षुद्र रे।।

बल बुद्धि पद्धत[६९] हमार रे।
जबे मिलत मोहि कुमार रे।।

एहो[७०] कंस कहु जब ठानि रे।
पुनु[७१] देवि बिचारल बानि रे।।

हमे अलप बाला नारि रे।
तोहें सबल पुरुष सुरारि रे।।

बल बुझल एहिखने तोर रे।
तोहें आब कि करब[७२] मोर रे।।

कह नन्दीपति अवधारि रे।
किछु कंस मानल हारि रे।।

(गीतार्थे श्लोकः)

रे रे बर्बर ! देवकीबहुसुत-द्रोहेण दुष्टाशय-
स्तत् किं बल्गसि[७३] पौरुषं यदधुना लज्जाकरं कुत्सितम्।

लेलनि अछि। दसग्रीव = रावण। तसु = तनिक शत्रु के जीबि सकैछ। बर देवि बानी = देवीक श्रेष्ठ वाणी। अलप = अल्प, छोटि। सुरारि = दैत्य। अवधारि = विचारि।।

(गीतक अर्थ मे श्लोक)--

रे रे अत्याचारी ! देवकीक बहुतो पुत्रक द्वेष सँ दुष्ट हृदयवला तों की अपन पौरुष बजैत छह ! जे (पौरुष) एखनहि लज्जाजनक एवं घृणित सिद्ध भेलह अछि !! कमलसनक आँखिवला तेजःस्वरूप (श्रीकृष्ण) तोहर महान् शत्रु छलथुन्ह (जे आब नन्दक ओहिठाम छथि)। हमर एहि स्पष्ट वचनकें सूनि एखनहुँ की लज्जित नहि होइत छह ? ।।८।।

६७- हम अतिशूर। ६८ — (एतय सँ 'रे' क अभाव)— क ख।
६९ - हमर - क। ७० - कंस एह जब - ख। ७१ - तब - ख। ७२ - करबह क ख।

आसीत् कञ्जविलोचनस्तव रिपुस्तेजःस्वरूपो महान्
श्रुत्वा मद्वचनं च विस्फुटमिदं नाद्यापि किं लज्जसे ।।८।।

(ततो दुर्गावाक्यं श्रुत्वा अनन्तरं कंसासुरो गृहं जगाम। देवीति कथयित्वा[७४] निष्क्रान्ता।)

।। इति प्रस्तावना ।।

अथ प्रथमोऽङ्कः

[श्रीनन्दनन्दनस्य नवरात्रौ बालक्रीड़ागीतमाह] — ७

नाना-भैआ, नाना भैआ, नाना भैआ[१] भाति।
यदुपति जनमल भादवक[२] राति।।
भवनक चौदिस भमि भमि आव।
लए थारी करताल बजाव।।
कए कोलाहल मङ्गल गाव।
गए[३] घर दौड़ि कौड़ि लए आव।।

(तखन दुर्गाक = यशोदाक पुत्रीक वाक्य सुनिकें कंस घर गेल। देवी ई कहि बहार भय गेलीहि।)

।। प्रस्तावना समाप्त ।।

।। पहिल अङ्क ।।

(श्रीकृष्णक नओम राति पर बालकलोकनिक खेलक गीत कहैत छथि।)—७

नानाभैआ = नेनाक जन्मसँ नवम राति मे होबयवला जोग-टोन। भाति = भात, ध्यात, शोभा। यदुपति = श्रीकृष्ण। भाम-भमि = घूमि घूमि। कोलाहल = हल्ला। गए = जाय।।

---

७४ - × क ख।
१ - × क ख। २ - × क ख। ३ राए—ख।

नन्दीपति हरि मुख मलु[४] आब ।
जननि जसोमति कण्ठ लगाब ॥

[ततो यशोदा-प्रवेशिका-गीतम्] — ८

प्रसव भवन सओ बाहर भेली ।
वेदी निकट जसोमति गेली ॥
सङ्ग सखीगन मङ्गल गावे ।
मुनिहुक मन घन मोद बढ़ावे ॥
पुरवधु वेढ़लि अति अभिरामे ।
चौदिस उडुगन-बिच हिमधामे ॥
कनक-कलसे जल कएल सलाने ।
तनु भेल मांजल मुकुर-समाने[५] ॥
सिर[६] सिन्दुर, तनु पीअरि[७] सारी ।
तखनुक जे[८] देखल नन्दक नारी ॥
से की देखत जगत पुनु आने[९] ।
नन्दीपति कवि कह परमाने ॥

(ततो वेदिका मध्ये काऽपि [१०]न्यासकुशला कामिनी पद्मिनीपत्राकारं चित्रं लिखितवती । तस्य चित्रस्योपरि[११] सकृष्णा यशोदा मङ्गलकलशं सम्मुखीकृत्य[१२] उपविशति । ब्राह्मणवर्गेण वैदिकमन्त्रेण श्रीकृष्णस्य शीर्षोपरि दूर्वाक्षतं दत्तम् । ततः पुरवधूभिः[१३] दधिधान्यदूर्वा-पक्वकदलीफलाऽन्वितं नूतन-वंशपात्रं पुनः पुनः भूमौ निधाय श्रीकृष्णशीर्षोपरि प्रदक्षिणीकृत्य[१४] गीतं गीयते[१५]।

[तखन यशोदाक प्रवेश करबाक गीत] — ८

वेदी = आङनक बीच मे बनाओल ऊँचीय चबूतरा । घन मोद = अतिशय आनन्द । पुरवधु वेढ़लि = नगरक स्त्रीगण सँ घेरलि । उडुगन बिच = तारेगनक बीचमे । हिमधाम = चन्द्रमा । कनक कलस = सोनाक घैल । तनु = देह । मुकुर = अएना, दर्पण ॥

(तखन वेदीक बीच मे कयो अरिपन देबा मे पटु स्त्री कमलक पात सनक चित्र लिखलनि । ओहि चित्र = अरिपन पर कृष्णसहित यशोदा मङ्गल-कलसकेँ सामने कय बैसैत छथि। ब्राह्मणलोकनि वैदिक-मन्त्र सँ श्रीकृष्णक माथ पर दूर्वाक्षत देलनि । तखन नगरक स्त्रीगणलोकनि दही, धान, दूबि, पाकल केरा सभ सँ भरल नवीन बाँसक पात्र = चुमाओनक डाला केँ बारम्बार भूमि पर राखि श्रीकृष्णक माथ पर प्रदक्षिण कय गीत गबैत छथि ।)

४-मलु × - ख । ५—समाने- ख । ६ - सीर-ख । ७-पिअरि । ८ - × (अभाव) ।
९ - आने । १० - विन्यास-क। ११ - चित्रोपरि-ख। १२ - कृत्वा ।

[अथ गीतम्[१६]]--९

बाभन वेदेँ बाल[१७] चुमावे ।
व्रजवनितागन मङ्गल गावे ॥
देखि कमलमुख अतिसुख पावे ।
जननि जसोमति कण्ठ लगावे ॥
जसोमति कोर देखब जदुराजे ।
तेँ करु सहस[१८] नयन सुरराजे ॥
पटह आदि सब बाजन बाजे ।
नाच नीक नट सुन्दर साजे ॥
आनन्दे मगनि सकलि नरनारी ।
सगर नगर भरि बिलह सुपारी ॥
नन्दीपति कवि विरचलि बानी ।
देथु अभय वर सारङ्गपानी ॥

गीत--९

बाल चुमावे = बालक श्रीकृष्णक चुमाओन करबैत छथि । व्रजवनिता = व्रजक नारीसभ । जदुराज = यदुराज श्रीकृष्ण । सहस = हजार आँखि इन्द्र बनाय लेलनि । पटह = ढोल । बिलह = बँटैत छथि । सारङ्गपानी = शार्ङ्ग-पाणि, श्रीकृष्ण ।

१३ – पुरवधूभिः । १४ – प्रदक्षिणं कृत्वा ।
१५ – गायति । १६ – × । १७ – क ख । १८ – साहस – ख ।

[दोहा]--

जनम-दिवस सञो नन्दसुत, दिवस-दिवस उपचीत ।
कहए न पाविअ[19] आन किछु, उपमा इन्दु उचीत ॥१३॥
जननि जसोमति लाए तनु दिन लगबथि[20] दस तेल ।
लाग एहन दस दिवस बिच जनि[21] दुइ मासक भेल ॥१४॥
एक दिन आँग[22] उगारि कहुँ, कोर कए लेल किशोर ।
सजब तनय तनु जानि कहुँ, जननि नयन ढर नोर ॥१५॥

अथ गीतम् – १०

मोहि रोग लागओ रे मोर सोना ।
छी-छी कान्ह! करै छिअ कोना ॥
जहिखन सञो बिलहल हम[23] सोना ।
के जन कओन दहुँ कएल अछि टोना ॥
दूध-भरल थन फटइछ मोरा ।
मन उदबेग माइञो गति तोरा ॥
चारि पहर निसि कहरैत तोरा[24] ।
देखि देखि धैरज रह नहि मोरा[25] ॥

उपचीत = बढ़ैत गेलाह । उपमा इन्दु = चन्द्रमाक सदृश कहब उचित थिक ॥१३॥ लाए तनु = पुत्रक देह लय । दस = दस बेर ॥१४॥ आँग उगारि-कहुँ = देहमे उबटन लगाय । सजब तनय तनु = पुत्रक देहकेँ सजायब । नयन = आँखि ॥१५॥

गीत – १०

मोर सोना = हमर सोनाक समान पुत्र । बिलहल = बाँटल । सोना = सुवर्ण । कओनदहुँ = कोन प्रकारक । निसि कहरैत = राति मे बेचैनीक विकट शब्द करैत ।

१९ – पाबीअ । २० – दस लाउथि । २१ – जनु । २२ – आँग । २३ – सब ।
२४ – तोही । २५ – मोही ।

नन्दीपति भन हरि धन लेला ।
जसोमति मन किछु भरओस भेला ॥

(उत्तानशायी श्रीकृष्णः कतिचन मासान् नीत्वा एकवारं भूमौ सर्पाकारेण सञ्चरितः । यशोदा इदमाश्चर्यं दृष्ट्वा अनन्तरम् आमोदविशेषेण गीतं गायति ।)

अथ गीतम्---११

देखु देखु नन्द ! कान्ह कर संपा[26] ।
चुचिहुक[27] भरम चाप फुल चंपा[28] ॥
कमल-नयन[29] कर वलय विराजे[30] ।
रुनुझुनु रुनुझुनु घुघरू बाजे[31] ॥
ससरि ससरि खस, कोर न सोहावै ।
कर धरइत पुनु मुख मलु[32] आवै ॥
जे दिन तात कहत हरि तोही[33] ।
से दिन सुदिन होएत कबे मोही[34] ॥
नन्दीपति कवि कौतुक[35] गावे ।
नन्दतनय रसमय बुझ भावे ॥

कंसासुरः—(पूतनां[36] प्रति) पूतने ! त्वं याहि श्रीकृष्णवधाय नन्दगोपगृहं प्रति ।
पूतना—तथाऽस्तु । (इत्युक्त्वा[37] याति ।)

गीत---११

कान्ह कर = कृष्ण करैत छथि । संपा = सञ्चरण, साप जकाँ घुसकैत छथि। भरम = भ्रम सँ । चाप = पकड़ैत छथि । कमल नयन = कमल सनक आँखि छनि । कर वलय = हाथ मे मट्ठा । तात = बाबू, पिता ।
कंसासुर—(पूतनाक प्रति) पूतने तोँ जाह श्रीकृष्णकेँ मारबाक हेतु नन्दगोपक घर ।
पूतना—बेस । (ई कहि जाइत अछि ।)

२६—सापा । २७...चुचिक । २८ - चापा । २९ - नयेन । ३० - बिराज ३१- बाज। ३२ - मनु ३४ तोहि । ३४...मोहि । ३५ - संमल , क' । ३६ इवमुक्त' पूतनां प्रति क; इवमुक्त' पूतनां-प्रति-ख । ३७—× - क ।

अथ पूतना-प्रवेशिका-गीतम्--१२

हरिवध कसे कएल[३८] उपदेस ।
कपट-रूप पुतना परवेस ।।
कुच दुहु कालकूट लेल लाए ।
दंख जनु लेअ[३९] वेओ तें हनु छपाए ।।
राति अन्धार सुतल सबे जानि ।
पापिनि ततए तुलाइलि आनि ।।
नन्दकिसोर कोर कए लेल ।
दुहु कर धरि थन विष--दुध देल ।।
नन्दीपति कवि कह परमान ।
आबें कठिन तोर परल परान ।।

(श्रीकृष्णः करकमलेन पयोधरं गृहीत्वा मुखमारोप्य प्रहारेणाऽऽकर्षितं दुग्धं पिबति[४०] ।)

अथ पूतना विलाप-गीतमाह--१३

हमे न एहन हरि जानल, मानल अपराधे ।
न हनु, न हनु सुनु[४१] सिरिपति तिरिवध अछ बाधे ।।

(उतान सुतनिहार श्रीकृष्ण किछु मास बिताय एक बेर भूमि पर साप जकाँ घसुकलाह । यशोदा एहि आश्चर्यकें देखला पर विलक्षण प्रसन्नता सँ गीत गबैत छथि ।)

पूतनाक प्रवेश करबाक गीत--१२

हरिवध = कृष्णकें मारबाक । कुच = स्तन मे । कालकूट = विष ।
(श्रीकृष्ण अपन करकमलसँ स्तन पकड़ि मुँह लगाय आघात सँ खेंचिकें दूध पिबैत छथि ।)

---

३८ - केल । ३९ - हल - क ख । ४० - ० - क ख । ४१ - ० - ख ।

फटइछ भार कलेवर, तेवर भेल भागी ।
आबे कतिखने थन छोड़ब[४२], उर उठइछ आगी ।।
उगिलु उगिलु थन सिरिपति, पुनु हमर निहोरे[४३] ।
एहन करम पुन न करब, राखब जिव मोरे[४४] ।।
नन्दीपति कवि गाओल, हरिपद अनुरागी[४५] ।
पुतनाओ पाओल परम पद, हरि रहु उर लागी[४६] ।।

गीतार्थे श्लोकः--

पूतना पतिता भूमौ श्रीकृष्णेन विताड़िता ।
ततो हाहादि-शब्देन यशोदा शयितोत्थिता ।।१।।

यशोदा – (पूतना-वक्षःस्थलोपरि श्रीकृष्णं पतितं दृष्ट्वा सत्वरं क्रोडे कृत्वा पुनः पुनः कण्ठे निधाय) आः पाप ! आः पाप !! किं किदं विहिणा, [४७]अज्जबि एदस्स सुदस्स ण आसा ।
[किं कृतं विधिना , अद्यापि एतस्य सुतस्य न आशा ।]

(ततो नन्दप्रवेशिका-गीतम्)- १४

हाँ - हाँ सबद सुनि[४८] सविसेष ।
दरबरि नन्द देल परवेस ।।

पूतना विलाप-गीत गबैत अछि--१३

न हनु = नहि मारू । सिरिपति = श्रीपति, कृष्ण । तिरिवध अछ बाधे = स्त्रीवध निषिद्ध अछि । भार कलेवर = भार सँ देह । उर = छाती मे । निहोरे = प्रार्थना ।

गीतक अर्थ मे श्लोक—

श्रीकृष्णक द्वारा मारलि गेलि पूतना भूमि पर खसलि । तकर हहाएब शब्द सँ, सूतलि यशोदा उठि गेलीहि ।।१।।

यशोदा— (पूतनाक छाती पर श्रीकृष्ण कें खसल देखि झटदय कोरा मे लय बार-म्बार कण्ठ लगाय) हाय रे पाप ! आबो एहि पुत्रक आशा नहि बुझाइछ ।

---

४२ - छोड़ब है - ख । ४३ - निहोर - ख । ४४ - मोर । ४५ - अनुरागि । ४६ - लागि । ४७ - अज्ज विवे तस्स । ४८ - सुनि ।

महर हहर कहरब सुनि तासु ।
दुध पिबइते[४९] हरि हरु जिव जासु ।।

की परकार करब एहिकाल ।
के जन, कओन घर कामिनि बाल ।।
पड़लि पूतना दूरसञो देखि ।
निकट जाइत पुने बुझल बिसेखि ।।

नन्दकिसोर कोर कए लेल ।
कह कवि कोविद बाहर भेल ।।

(दोहा)—

बाहर कए हलु हाथ धरि, जननि सहित जदुराए ।
कृष्ण कमलमुख चूमि चुमि[५०], राखथि[५१] हृदये लगाए ।।१६।।
पापिनि सापिनि हाथ सञो, जनि[५२] राखल एहि काल ।
से तुअ दिनानाथ प्रभु, सदा करथु रछपाल ।।१७।।

गाड़क नांगरि[५३] हाथ धरि, हरि शिर चाहथु[५४] दीस ।
नेउँछि-पेउँछि दुख[५५] दूरि कए, सबहु देल आशीस[५६] ।।१८।।
छिप्र विप्र सब आनि कहु, सब सञो वेद पढ़ाए ।
सहस्र गाए सङ्कलिप कहु, सभ कें देल बटवाए[५७] ।।१९।।

(तखन नन्द-प्रवेश गीत)-१४

सबद = शब्द । सविशेष = असाधारण । दरबरि = शीघ्रता सँ । परबेस = प्रवेश । महर = गोप (नन्द) । हहर = विकल भए दौड़लाह । हरु जिव = प्राण हरलन्हि । कामिनि बाल = स्त्री ओ बच्चा ।।

जनि राखल = जे (प्रभु) रक्षा कयल । दिनानाथ = दिननाथ (सूर्य) वा दीनानाथ (दीनाक नाथ विष्णु) । रछपाल = रक्षा ओ पालन ।।१७।।

४९ – पिबइत । ५० – चूमि । ५१ – राखहि । ५२ – जति । ५३ - नागरि । ५४ – चाहह । ५५ – दुर दुरि – ,क' । ५६ – आशीश । ५७- बरताए,क' ।

(अथ[५८] नन्दभाषितं परमेश्वरस्य कीर्त्तनगीतम्)-१५

जय जय जगपति दीनदयाल ।
जनि राखल मोरि[५९] कामिनि बाल ।।
समित कएल जनि ई उतपात ।
जुग—जुग रहओ तन्हिक पक्षपात ।।
जाहि सुमर सुर—नर सबकाल ।
से तुअ सतत करथु रक्षपाल ।।
बालक—पालक पर उपकारि ।
असरन –सरन उचित असुरारि ।।
नन्दीपति कवि बिरचलि बानि ।
देथु अभय बर सारङ्गपानि ।।

(गीतार्थेन श्लोकः) :–

नांगरि = नाङरि । हरि शिर = कृष्णक माथ पर । नेउँछि-पेउँछि = हाथ घुमाय घुमाय मंगल मनाय ।।१८।।

छिप्र = क्षिप्र (शीघ्र) । विप्र = ब्राह्मण । आनिकहु = आनि कए ।।१९।।

(आब नन्दक कहल परमेश्वरक कीर्त्तन-) १५

जगपति = जगदीश । जनि = जे प्रभु । समित = शमित (शान्त) । उतपात उपद्रव । सुमर = स्मरण करैछ । सर-नर = देव ओ मानव । पालक = पालनकर्ता । पर उपकारि = परोपकारी । असुरारि = दैत्यक शत्रु । सारंगपानि = विष्णु ।।

(गीतक अर्थ मे श्लोक) –

जे देव (भगवान्) एहि बच्चाकें गर्भ मे प्रतिदिन पालन कयलथिन एखन रक्षा कयलथिन, (पूतनाक) बाँहिक पिजड़ा मे पड़ल देखि बचओलथिन तथा जाहि भगवानक पवित्र चरणकमलक ध्यान सभ देवता करैत छथि ओ जे तीनू लोक मे उच्च पदकें प्राप्त कयने छथि से भगवान् हमर एहि पुत्रक सदा रक्षा करथु ।।१०।।

५८ – अथ आह – क । ५९ – मोर ।

गर्भे च प्रतिपालितः[६०] प्रतिदिनं येनाऽधुना रक्षितः[६१]
दृष्ट्वाऽयं भुजपञ्जरे निपतितो[६२] देवेन येनाऽऽवृतः[६३] ।
यस्यैकस्य पवित्रपङ्कजपदं ध्यायन्ति सर्वे सुराः[६४]
प्राप्ता येन जगत्त्रयोच्च-पदवी[६५] पुत्रं स मे रक्षतु[६६] ॥१०॥

(दोहा)—

ओगरा[६७]सिसुगन राखिकहु, कतहु जसोमति गेल ।
एहि अवसर हरि हेरिकहु, चरणें शकट ठेलि देल ॥२०॥
टुटल शकट हरि ताहि तर, जसोमति दुर सओं देखि ।
छाती पिटइते हाथ दुहु, दौड़लि प्राण उपेखि ॥२१॥

(अथ गीतम्)-१६

कहु कहु सिसुगन मोही ।
[६८]ओगरा राखि गेलहुँ हमे तोही ॥
पलँग सुतल छल मोरा ।
के लए सकटतर गेल किसोरा ॥
सकट भंग किए भेला ।
एत उतपात कओन कए देला ॥
सिसुगन भाखल ताही ।
अपहतें दोसर न देखल काही ॥

(दोहा)—

ओगरा सिसुगन = रक्षक मे बच्चा सभकें । चरणें शकट = पयर सँ गाड़ीकें । उपेखि = उपेक्षा कय ।

गीत- १६

ओगरा = ओगरबाह, रक्षक । सकट = शकट, गाड़ी । किसोरा = बालक कृष्णकें । उतपात = उपद्रव । भाखल = कहल । हरि तह = कृष्णक द्वारा । कोहाइ = क्रोधित ॥

६०— पालितं — 'क' 'ख' । ६१— रक्षितं—'क' 'ख' । ६२—निपतितं— 'क' 'ख' । ६३- धृतं — क ख । ६४ इवराः — ख । ६५— पदवीं — क ख । ६६ — रक्षतु — ख । ६७, ६८- अगोरा ख ।

हरि तह एत[६९] उतपाते ।
ई कहि सिसुगन लगओल लाते ॥
जसोमति उठलि कोहाई ।
ऐसनि कतहु सुनल अछि माई ॥
नन्दीपति कवि गाऊ[७०] ।
लए जसोमति सुत कण्ठ लगाऊ[७१] ।

(दोहा)—

★अति तातिल हरि जानिकहुँ, कतोएक दिवस बिताए ।
जसोमति ई मन दिढ़ कए, बाँधिए[७२] उखरि लगाए ॥ २२ ॥

(ततो गीतम्)-- १७

अति तातिल हरि जानी ।
उठलि जसोमति ई दिढ़ ठानी ॥
बड़ दुख देइ छह मोही ।
अब हरि बाँधि धरब हमे तोही ॥
आनल जउड़ जत कोई ।
हरिक तिबिक[७३] सओ सबे छोट होई ॥
जसोमति रहलि लजाई ।
ई बुझि तखन हरि हलल बँधाई ॥
उखरि सहित चलु चूपे ।
जमला--अरजुन तारक[७४] रूपे ॥

(दोहा) —

तातिल = उकाठी, तंग कयनिहार । दिढ़ = निश्चय ॥ २२ ॥

गीत- १७

जउड़ = डोरी । तिबिक = त्रिवलीक स्थान (पेट ओ डाँर) । हलल = रहल । जमला-अरजुन = यमलार्जुन (अर्जुन नामक गाछ, जे यमल (जौँआ) छल,

★- उतपातिल — (एक विद्वानक दृष्टि मे) ।
६९— ई । ७०— गाउ- क ख । ७१ — लगाउ— क ख । ७२- राखिए ।
७३- तीति- क । ७४- तारक- क ।

मांझ[75] पड़लि बिह फारी[76] ।
अति कोसले दुहु हलल उपारी ॥
नन्दीपति कवि भाने ।
अधम असुर[77] उठि चहल बिमाने ॥

(दोहा)--
[78]कतोएक दिवस बितायकहुँ, जसोमति जल लए गेलि ।
पलटि पाछु[79] हरि हेरि कहुँ, अति आकुलि[80] मने भेलि ॥२३॥
देखि देखि हरि-मुख- नयन, खन विसमय खन हास ।
कोख जाँति हरि, शिर कलस, आइलि अपन अवास ॥२४॥

[अथ[81] गीतम्]-१८

आग महर[82] तोर बाँचल पूत ।
एहिखन आजु होइत[83] अजगूत ॥
हम अति अधम हमर नहि गुन ।
की तसु करम, तोहर एक पून ॥

टूटा एके ठाम संगहि जनमल छल)। तारक रूपे = तारक गाछक समान नमगर। माँझ = बीच मे, बिह = विभाग। हलल उपारी = उखाड़ि देल। अधम असुर = नीच दैत्य जे वृक्षक रूप मे छल॥

(दोहा)--

पलटि = घुड़ि। हरि हेरिकहुँ = कृष्णकें पाछू अबैत देखि ॥२३॥

हरि मुख नयन = कृष्णक मुहँ ओ आँखिकें। विसमय = आश्चर्य। शिर कलस = माथ पर घैल कय ॥२४॥

गीत- १८

महर = गोप, नन्द !। तसु करम = हुनक (कृष्णक) कर्म। पून = पुण्य। परिजन = परिवारक लोक सेवक वर्ग। परपुत लागि = आनक पुत्रक हेतु। जे मति = हिनक जे बुद्धि छनि ताहि सँ। दिनेक = कोनो दिन॥

७५— माँ। ७६- खारी। ७७— असुर चलल। ७८— कत एक बेरि। ७९- पाछु हेरि कहुँ- ख। पाछु हेरि हरि— क। ८० मनें आकुली। ८१— × —ख। ८२- हमर अबे। ८३- होएत।

मन छल विकल बूझि नहि भेल ।
पाछु लागल जमुना तिर गेल ॥
जे सिसु सहज उखरि धरि ऊठ ।
से कैसे चलत कहत सब झूठ ॥
किछु दिन कुटओ-पिसओ वरु आन ।
भानस करओ धरओ धन-धान ॥
कि करत[84] परिजन परपुत[85] लागि ।
जैं किछु होएत हमहि दुखभागि ॥
नन्दीपति हम तेजब ने पास ।
जे मति दिनेक हिनक नहि आस ॥

(दोहा)-
की बुझ अबुध गोआरगन, कान्ह करथि कत रंग ।
खन बालक, खन तरुन भए, व्रज - बनितागन संग ॥२५॥
एक दिन[86] आइत पथ कहुँ, मिलु वृषभानु दुलारि[87] ।
आँचर धए बिलमाए धरु, देखि[88] छकित सब नारि ॥२६॥

(ततो राधिका-प्रवेशिका-गीतम्) -१९

यशोमति मोर उपरागे ।
हरिक चरित्र माइ बड़ मन्द लागे ॥
कोर सुतल तोर कान्हे ।
तें जनु जानह हरि छथि नान्हे ॥

(दोहा) —

अबुध = अज्ञानी। कान्ह = कृष्ण। रंग = लीला ॥२५॥

वृषभानु दुलारि = राधा। बिलमाए = रोकि, विलम्बित कय। छकित = आश्चर्यित।

(तखन राधिकाक प्रवेशक गीत)- १९

उपराग = उलहन। मन्द — अधलाह। थन- पाने = स्तन पिबैत। कटैछथि

८४— कय। ८५- परिपुत। ८६- ०। ८७- कुमारि। ८८- देख।

एतए[89] करथि बन - पाने ।
ओतए घटै छवि तरुणक काने ।।
जाइत जमुना—पथ आजे ।
बन[90] सओं बाहर भेल यदुराजे ।।
आँचर धयलन्हि मोरा ।
काल्हुक अनमल तोर किशोरा ।।
तखनुक तसु बेवहारे ।
आबे[91] कि कहब हम अपन कपारे ।।
पुछह[92] सकल सखि आनी ।
तेहि[93] परमान होइत मोर बानी ।।
कहु[94] सखिगण मन लाई ।
जननि जसोमति नहि पतिआई ।।
नन्दीपति[95] अवधारी ।
कृष्ण चरित्र सभ छकित गोआरी ।।

(ततः प्रविशति राधिका गीतेन) - २०

हमर कहल जत[96] यदि फुसि भेला ।
कोन परि कान्ह शकट तर गेला ।।
दोसर बचन मोर[97] सुनु अवधारी ।
कहु कहु के पुतना - बध-कारी ।।

तरुणक काने = युवकहु सँ बढ़ल चढ़ल चालि रखैत । यदुराज = श्रीकृष्ण ।
परमान = प्रमाणित । अवधारी = बुझैत छथि ।।

(तखन राधिका गीतक संग प्रवेश करैत छथि)- २०

जत = जतेक । शकट तर = गाड़ीक तर । अवधारी = बुझि । असुर = दैत्य । मुगुधि = अज्ञानी ।।

८९- एतहु । ९०- सौं ९१— से । ९२- पुछह सखी सेआनी । ९३—नहि ।
९४- कहुकोविद-क, कहहु सखीगण- ख । ९५—नन्दीपति कवि- क ख ।
९६- यत यत । ९७- ० ।

असुर एक विरड़ो-रुप आई[98] ।
ताहि गगन सँ कोन गिराई[99] ।।
ऐसनि मुगुधि तोहे जसोमति माई ।
जे चिन्हह अपन बाल यदुराई ।।
नन्दीपति यशोमति चुप भेली ।
राधा उठि अपन घर गेली ।।

(दोहा)—

यशोमति देखल एक दिन, हरिकें खाइत माटि ।
अति कोपें आइलि निकट, कर[1] लय काँटक साटि ।।२७।।

(गीत)- २१

हे हरि ! पानि कयलहु[2] जिव मोरा ।
[3]हेहरि भेलहु हमे हेंटइत तोरा ।।
हमे हरि जेहन जनै छहु[4] मोही ।
उगिलहु माटि कहै छिअ[5] तोही ।।
काँटक छड़ी अनै छिअ[6] जोहि ।
रहु रहु कका[7] कहै छिअ तोहि ।।
[8]चिहुँकि उठब जबे लागत छौंकी ।
चेरिक पुत जकें हलवाहे हौंकी ।।

(दोहा)—

कोपें = क्रोध सँ । साटि = छड़ी ।।२७।।

गीत — २१

पानि कयलहु = अत्यन्त परेशान कयलहु । जिव = प्राण । हेहरि = मानहीन, अविचारी । जोहि = ताकि । कका = तोहर काका (नन्द) कें । चिहुँकि = चीत्कार कय । चेरिक पुत = दासीक पुत्र । हलवाहे हौंकी =

९८- आउ- क । ९९- गिराउ क । १- लय काँटाकें । २-करहु ।
३- हरिहि कतेक हटब हम तोरा । ४- छी । ५ छी । ६-छी ।
७- कान्ह । ८- (दू पाँतीक अभाव) ।

नन्दीपति कवि विरचल बानी ।
शिशु पैसि नुकाएल सारङ्गपानी ॥

(दोहा)—

नहि किछ, नहि किछु भाषिकहुँ, माधव हलु मुख बाए ।
देखि वदन-विस्तार अति, यशोमति उठलि डेराए ॥२५॥

(अथ गीतम्)-२२

मनमोहन मुह[१०] बाऊ ।
महिमा अपन बुझाऊ ॥
यशोमति डिठि भरि देखु ।
अति अजगुत कए लेखु ॥
शशि सूर, सागर साते ।
शम्भु सहित[१०] भृगु—ताते ॥
चौदह भुवन अकासे ।
अओर कहब कत रासे ॥
देखि भराइलि[११] महतारी ।
[१२]आनंद मुनल मुरारी ॥
नन्दीपति कवि गावे ।
नन्दतनय [१३]बुझु भावे ॥

हरवाही पेन = (छड़ी) । शिशु पैसि = बालमण्डली मे घोंसियाय । सारङ्ग-पानी = श्रीकृष्ण ॥

(दोहा) —

भाषिकहु = कहि । वदन – विस्तार = मुहुँक विशाल रूप ॥२५॥

गीत- २२

मनमोहन = कृष्ण । डिठि = दृष्टि । अजगुत = आश्चर्य । शशि = चन्द्रमा । सूर = देवता । भृगुताते = ब्रह्मा । भराइलि = डरें भारी भेल, शिथिल भेल । महतारी = माता यशोदा ।

१०- मुखा । १०- ० । ११ — डेराइलि । १२ मन मे तेहिखन मानल हारी ।
१३- नन्दतनय रसमय ।

इति द्वादश – नामाऽन्वित – महाकवि – नन्दीपति – विरचित-
कृष्णकेलिमालायां श्रीकृष्णावतारो
नाम प्रथमोऽङ्कः ॥

आनंद मुनल = आनन्द सँ मुँह मुनि लेन वा 'आनन' (मुँह) मुनल । मुरारी – श्रीकृष्ण । नन्दतनय = श्रीकृष्ण ॥

बारह गोट नाम सँ युक्त महाकवि नन्दीपतिक बनाओल
कृष्णकेलिमाला मे श्रीकृष्णावतार नामक
प्रथम अङ्क समाप्त ॥

अथ द्वितीयोऽङ्कः

(दोहा) –

नन्द विचारल सबहु मिलि, गोकुल बास पुरान ।
तेँ एतेक[१] उतपात होअ, की विचार वृषभान ॥१॥
पशु-प्राणीकाँ पानि नहि, यमुना गेलि सुखाए ।
वृन्दावन गए[२] घर करिअ, सुखहि चराबिअ गाए ॥२॥

(ततो नन्दगोप-वृषभानुप्रभृतयः वृजं विहाय गोमहिषीभिः[३] सह वृन्दावनं प्रति सर्वे निष्क्रान्ताः ।)

द्वितीय अङ्क

एते उतपात = एतेक उपद्रव । गए — जायकेँ ।

(तखन नन्दगोप, वृषभानु इत्यादि गोपसभ व्रजकेँ छोड़ि गाय ओ महिसिक संग वृन्दावनक प्रति विदा भेलाह ।)

१—एत सओँ — क । २— गए — ख । ३— भ्यां — क; भ्यः — ख ।

(दोहा)—

पाँच बरख सओ बएस किछु[४] ऊपर हरिकाँ भेल ।
सङ्ग सखागन सग दिन, एतए ओतए चलि गेल ॥३॥
कर सर धनुसी[५] तुकमा पनही पएर बिराज ।
कछुटी पाटक, हाटक, कर बलया छवि राज ॥४॥
श्रुति कुण्डल हीरा[६] चमक, पिपही बेनु बजाब ।
सगर दिवस जमुना निकट, खाएक बेरि घर आब ॥५॥

(ततो हलधर-प्रवेशिका-गीतम्) – १

चललि जसोमति हरिक उदेस[७] ।
एहि अवसर हलधर परवेस ॥
लटपटि पाग लाग बड़ नीक ।
उड़लि गुड़ी गुन गहि-गहि झीक ॥
असित अम्बर[८] तनु बलइत घूम ।
जनि भाउरि सिखि-सिखा सधूम ॥
अरुण नयन, आनन अभिराम ।
लए अरविन्द उगल हिमधाम ॥
नन्दीपति कवि कौतुक गाब ।
नन्दतनय रसमय बुझ भाब ॥

बएस—अवस्था । सगर दिन—सम्पूर्ण दिन ।३।
कर—हाथ मे । सर—बाण । धनुसी—छोट धनुष । तुकमा—तूणीर । पनही—जूता । कछुटी—कच्छी, जंघिया । पाटक—रेशमी । हाटक—सोनाक बनल मट्ठा (बलया) क कान्ति (छवि) हाथमे शोभित ।४।
श्रुति—कानमे कुण्डल. ओ ताहि मे हीरा चमकैछ ।५।

(बलरामक प्रवेशक गीत) – १

उदेस = खोज मे । गुड़ी गुन—गुड्डीक डोरी । असित अम्बर—नील वस्त्र ।

४—किछु हरिकाँ उरथ । ५ - धनमी तुकमा । ६ - चीरा । ७ - बदेस ।
८—अमर - क सा ।

(ततः प्रविशति हलधरो गीतेन)—२

हे मा ! अपन तनय हरि हुँ ट ।
पाथर दए फोरलन्हि मोर लटू ॥
बिनु अपराध सबहु सओ टूटू ।
रजहुक पुत न एहन[९] हथछुटू ॥
हमे परचारि हलइ छिअ कही ।
ई दिढ़ आबे रहब नहि सही ॥
नन्दीपति कवि कौतुक गाऊ ।
हरिपद पङ्कज हृदय लगाऊ ॥००॥

(दोहा)—

एक दिन थाक्रा हरिकाहुँ, गोविन्द गेल वन माँझ ।
कर कोलाहल बालगन, परइतेँ अबइछ साँझ ॥६॥

(ततो बकासुर-प्रवेशिका-गीतम्)—२

अतिबल बकासुर विबुधारि[१०] ।
पवन थीर कर पाँखि पसारि[११] ॥
एक ठोर मेदनि एक[१२] अकास ।
बालक सकल भेल सतरास ॥

भाउरि—चाक भर लपटैत । सिखि सिखा—आगिक धधरा । सधूम = धुआँ सहित । अरुण—लाल । आनन अभिराम – मुँह सुन्दर । लए अरविन्द – कमल लय चन्द्रमा उगलाह ।

(तखन बलराम गीत गबैत प्रवेश करैत छथि ।) – २

तनय हरि – पुत्र श्रीकृष्णकेँ । हुँटू – अपराधकर्म सँ रोकू । रजहुक – राजाक बेहो । दिढ़ – निश्चय ।

(बकासुरक प्रवेश-गीत) - ३

विबुधारि – देवताक शत्रु । पवन थीरकर – हवा केँ स्थिर कयलक । मेदिनि – पृथ्वी पर । सतरास – भयभीत । अनि परहार – अत्यधिक प्रहार करैत ।

९—बेहन । १० - री । ११—री । १२ - एक भेल अकास ।

अनि परहार आएल पुनु पास ।
हरि हेरि कएल हरख[13] परगास ॥
नन्दीपति आबे इहे विचार ।
बहुतक बइरि होएत निस्तार ॥

(दोहा)—
युद्ध भेल बड़ि काल धरि, बकासुर[14] थाकल आनि ।
दुहु फरें चीरल[15] चञ्चु धरि, सत्वर सारंगपानि ॥७॥

(बकासुरो भूमौ पपात । इति दृष्ट्वा अनन्तरं सर्वे बालकाः[16] सामोदाः) ।०।

(दोहा)—
एक दिन बालकवृन्द संग गोविन्द गेल बन माँझ ।
कर कोलाहल बालगन चरइतें अवइछ साँझ ॥८॥

(ततः अघासुर प्रवेशिका-गीतम्)—४

पथ पड़ि रहल अघासुर आए ।
बड़ गोट कए बइसल मुह बाए ॥
अति ऊँच परवत सेहओ समाए
बाघ सिंह देखि दूरहि पड़ाए
कतओक शिशु पहिनहि चलि गेल ।
हरि हेतु अघे न समटि मुख लेल ॥

हेरि—देखि । हरख—हर्ष । बइरि—शत्रुता । निस्तार—समाप्त ।
चञ्चु—चोँच । सत्वर—जल्दी । सारंगपानि—कृष्ण ।७।
(बकासुर भूमिपर खसल । ई देखला पर सभ बालक प्रसन्न भेल ।)
(अघासुरक प्रवेश गीत)—४
पथ—बाट पर । अघासुर—पापस्वरूप दैत्य सापक रूप मे । परवत—पहाड़ ।
समाए—समान लागय । अघे—अघासुर । सरप—सर्परूपी अघासुरक । एहि-तह—एहि सँ । हलथि—मारथि ।
(अघासुर भूमि पर खसल ।)

13-हास । 14-बकसुर । 15-चिर । 16-सक्ताः ।

एहि अवसर हरि कए[17] अनुसार ।
फारि सरप[18] सिर भेल बहार ॥
नन्दीपति एहितह की बाढ़ि ।
हरि निज हाथें हलथि जिव काढ़ि ॥

(अघासुरो भूमौ पपात ।)

(श्लोकः)-
वृन्दावनस्य निकटे हरिणा चार्भकैः सह ।
[19]बकासुर बधंकृत्वा अघासुरवधः कृतः ॥१॥
(इति निष्कान्तः) ॥००॥

(दोहा)—
निज निज बाछा हाँकिकहु संगे सखागन लेल ।
कतोएक दिवस बिताएकहु, बिरिदावन हरि गेल ॥९॥
उपवन बैसल नन्दसुत, पिपही बेनु बजाब ।
खने भोजन कर धाव कर, कत कत रंग लगाब ॥१०॥
चरइतें चरइतें माझ बन, कतोएक बाछा गेल ।
कृष्णक महिमा बुझइ[20] लए चतुरानन हरि लेल ॥११॥

(श्लोक)—
वृन्दावनक समीप मे श्रीकृष्ण बालकलोकनिक संग बकासुरक वध कय अघासुरक वध कयलनि ॥१॥ (ई कहि बहार भय गेलाह ।) ॥
(दोहा)—
निज निज = अपन अपन । बिरिदावन = वृन्दावन ॥९॥ उपवन = वनक समीप । धाव = दौड़धूप, खेल ॥१०॥ माझ = वनक बीच । चतुरानन = ब्रह्मा । हरि लेल = हरण कयल ॥११॥ जोहथि = खोजथि । जाओ = यावत् । जदुनाथ कृष्ण । आएकहु = आबिकें ॥१२॥ सिसु बाछा = बालक ओ बच्छाकें । बिधि = ब्रह्मा । सिरिजि कहु = बनाय कें ॥१३॥ नव कहु = नवीन बनाय कें ।

17-कएल । 18-सरप । 19—अघासुरवधं कृत्वा बकासुरघोसरम्—क, अघासुरवधं कृत्वा ''ख । 20—बुझए लाई- क. ख ।

से जोहथि गए आओ धरि, जसोदासुत जदुनाह ।
तावत् उपवन आएकहु, फेरि हरल चरबाह ॥१२॥
जे सिसु[२१] बाछा विधि हरल, सकल सिरिजि कहु लेल ।
जेहने जेहने जे अछल, तेहने तेहने भेल ॥१३॥
नव कए सिरिजल नन्दसुत, ई सबे थिक केओ आन ।
से शङ्का ककरहु नहि[२२], अपने अपने जान ॥१४॥
कतोएक दिवस बिताएकहु, विन्दावन हरि गेल ।
ओहि[२३] रूप सिसु बाछा सकल, विधि बेकत कए देल ॥१५॥

(अथ गीतम्)--५

बाछा विपिन निहारी ।
आकुल सबे धेनुआरी ॥
हुँकरि हुँकरि सबे आबे ।
[२४]दए धन दूध पिआबे ।
[२५]सिसु सिसु आनि मेराऊ ।
हरि हेरि हरख बुझाऊ ॥
नन्दीपति कवि भाने ।
कान्हे कएल परधाने[२६] ॥

(दोहा)—
जस सिसु बाछा विधि हरल, ताहि ताहि केँ देल ।
एक एक जकरा [२७]अछल, तकरा दुइ दुइ भेल ॥१६॥

नन्दसुत = श्रीकृष्ण ॥१४॥ ओहि रूप = पहिने जेहने छल ताही रूप मे ।
विधि = ब्रह्मा । बेकत = व्यक्त, प्रकट ॥१५॥

गीत- ५

विपिन = वन मे । धेनुआरी = गाय । सिसु = बालक (चरबाह) सब ।
सिसु आनि = बाछा आनि । मेराऊ = मिलओलक । हरि हेरि = कृष्ण देखिकेँ । परधाने = स्पष्टीकरण वा प्रधान ॥

२१- सिसु बाछा । २२- नहीं । २३- ओहि - क ना । २४ - दए धन ।
२५- सिसु । २६- परस्थाने । २७ - अच्छल ।

गोप—अष्टमी जानिकहु, सानन्द सकल गोआर ।
इन्द्रक पूजा करइ[२८] लए सबहुँ रचल विचार ॥१७॥
निज निज गाए दुहाए कहु, सबके देल हकार ।
भोग देल मेंहा महिस, साजल सब उपहार ॥१८॥
व्यञ्जन विविध प्रकार कए[२९], भातक भिन्न[३०] रासि ।
खीरि पुरी टका दही, एकओ वस्तु नहि बासि ॥१९॥
कथिलाइ पूजब इन्द्रकेँ, की[३२] तन्हि सह अछि काम ।
सब तह गोवर्द्धन विपुल, तन्हिकहि दिअ एहिठाम ॥२०॥
नीक[३३] कहै छथि नन्दसुत[३४], सबहुँ कएल अँगिकार ।
एहि अवसर परवत उपर, देखल एक अवतार ॥२१॥
परवत सओ हँसि हेठ भेल, विश्वम्भर अवतार ।
भात-तिमन भोजन कएल, जत छल विविध प्रकार ॥२२॥
जे जकरा ईप्सित[३५] अछल, तेँ तेँ से वर लेल ।
नन्द आदि वल्लव सकल, अपन अपन घर गेल ॥२३॥
(ततः[३६] श्लोकः)—

यदि श्रुत्वा[३७] सुरेन्द्रेण, न कृतं मम पूजनम् ।
[३८]असन्तुष्टेन सक्रोधं, नन्दादीन्[३९] वल्लवान् प्रति ॥२॥

(दोहा)—

जसु = जकर ॥१६॥ गोप-अष्टमी = भाद्र शुक्ल अष्टमी ॥१७॥ व्यञ्जन = तरकारी । रासि = ढेर ॥१९॥ कथिलाइ = कियेक । तन्हि सह = हुनका (इन्द्र) सँ । दिअ = भोग लगाउ । २०॥ अँगिकार = स्वीकार । अवतार = देवताक मनुष्य रूपमे आगमन ॥२१॥ ईप्सित = अभीष्ट । तेँ तेँ = से व्यक्ति । से वर = अभिलषित वरदान । वल्लव = गोप ॥२३॥
(ततन श्लोक)—

हमर पूजा नहि कयल गेल—ई सुनि जे इन्द्र असन्तुष्ट भय क्रोधपूर्वक नन्द आदि गोपसभक प्रति ई कहलथिन—के कृष्ण थिक ओ के बलराम

२८— करए लाइ । २९- कास । ३० भिन्निक । ३१ खिरि । ३२ - ('को' क अभाव) । ३३—निक । ३४ पूत । ३५— ईप्सित । ३६—ततो ।
३७—श्रुता । ३८—असन्तुष्टश्च-क ना । ३९ - वल्लिनः ।

इदमुक्तं तदा तेन, को हरिः, को हलायुधः ।
गोपानां गर्वनाशाय, गच्छन्तु मम किङ्कराः ॥३॥

(दोहा)

इन्द्र पठाओल मेघकें, ई कहि बारम्बार ।
कए बरखा आकुल करब, जत अछि गाए गोआर ॥२४॥
पसरल जलधर जाल जकें, बिरिदावन चहु-दीस ।
पानि पड़ल अंधकार अति पसु कें पसु धरि पीस ॥२५॥

(अथ गीतम्)–६

बासव[40] विमुख, बिषन घन, कीदहु अछि होइनिहार ।
बड़ बड़ बुन्द उजारि सन मुसर सन जलधार ॥२६॥
कपइतें धेनु धरातल, कठिन काल अवधारि ।
बाधहि रहल बछा४१ कत, आकुल गाए गोआरि ॥२७॥
बड़ कए रीस[42] बढ़ाओल, बालक भेल विचारि४३ ।
कतोएक कतहु इहओ यह, बड़ मन्द कएल मुरारि ॥२८॥
नन्दीपति कह एथि लए, जनु केओ आवे डराए[44] ।
की होअ तन४५ तारा तह, शशि अछि जनए सहाए ॥२९॥

(गीतम्)—७

पसु[46] प्राणी अति आकुल जानि ।
करें गिरिवर धह सारंगपानि ॥

थिक? गोपसभक गर्वकें नष्ट करबाक हेतु हमर सेवक सभ जाओ ॥२, ३॥
(दोहा)—जलधर—मेघ । पसुकें—मालजालकें ॥२५॥

गीत—६

बासव विमुख—इन्द्र विरुद्ध छथि । बिसन घन—विषाद (दुःख) सँ युक्त मेघ अछि ॥२६॥
धरातल-पृथ्वीपर । अवधारि—विचारि। बाधहि—खेतहि, गाम सँ हटल ॥२७॥
रीस—ईर्ष्या । मन्द- अधलाह काज । मुरारि—कृष्ण ॥२८॥

---

४० - बिमुख बरिस । ४१ - बाछा । ४२ - बेस - क । ४३ - बिचार ।
४४ - डेराए । ४५ - ततए - क । ४६ - पसू ।

ता तर राखल गाए गोआर ।
के कर केकर एहन उपकार ॥
बसुधा बुन्द परए नहि[47] पार ।
की तेज नील[48] जलद जलधार ॥
ठामहि ठाढ़ रहल जदुराए ।
परिजन कें पछपात बुझाए ॥
गाए महिंसि सभे सुखे खड़ खाए ।
एहिउँ[49] तर दिन सात बिताए ॥
नन्दीपति कह किछु नहि[50] भेल ।
इन्द्र अपन सन कए मुह गेल ॥

(दोहा)–

५१कतओक दिवस बिताएकहु, गाए चराबए गेल ।
शिशुगन बयस समान लए, यमुना तिर दिस भेल ॥३०॥
कालिन्दी कालिय५२ अछल, करइतें५३ कत उतपात ।
तें हरि कूदि कदम्ब सओ, ता सिर दए चढ़ लात ॥३१॥

गीत—७

पसु प्राणी—गाय महिंसि आदि पशु ओ मनुष्य । करें—हाथ सँ । गिरिवर—गोवर्धन-पर्वत । सारंगपानि—कृष्ण । ता—ताहि । के कर—के व्यक्ति कय सकैछ । केकर—ककर । बसधा—पृथ्वी पर । की तेज—की छोड़त ? नील जलद—नीलवर्णक मेघ । जदुराय—कृष्ण । पछपात—पक्षपात, अभिलाषा । एहिउँ—एकरहु । अपन सन कए मुहँ—अप्रस्तुत भयकें, हतप्रभ भयकें ।

(दोहा)–

कालिन्दी—यमुन नदी मे । कालिय अछल—कालिय नामक विशाल विषधर साप छल । उतपात—उपद्रव ॥३१॥

---

४७ - न । ४८ - नीलज जलज - क ख । ४९ - एहि उपर । ५०—नहीं ।
५१ - ० ० (दू पाँतीक अभाव)- क । ५२—काली । ५३- करइत - ।

ओतए कृष्ण कालिक५४ सङ्गे, जल निमगन भए गेल ।
एतए विकल बल्लव सकल, कतए गेल की भेल ॥३२ ॥
हसि हलधर कहु तात कें, हरि कौँ ककर तरास ।
कमलापति असरन सरन, मन जनु करिअ५५ उदास ॥३३॥

(ततो गीतम्)- ८

कालिय५६ बिषधर सहए न पार ।
अतिगुरुतर५७ हरि—चरणक भार ॥
खलन चरण दए चढ़ल मुरारि ।
फन फाटल जनि पङ्क दरारि ॥
जनि दल५८ कदल पसरि सिर गेल ।
दसन ओहु बेधि बाहर भेल ॥
जखने नागिनि काँदि कएल कलोल ।
तखने मानल हरि बिषधर बोल ॥
कर करुणा कत कौशल भाखि ।
जिबि६० गेल जिबि गेल हरि हलु राखि ॥
आबे नहि एतए तोहर निरबाह ।
पसु६१ मानुख जल पीउल चाह ॥
६२नन्दीपति नहि गरुड़ तरास ।
सागर सतत करहु गए बास ॥

निमगन = निमग्न, डूबि गेल । बल्लव = गोआर ॥३२॥
हलधर = बलराम । तात = पिता । तरास = त्रास, डर । कमलापति = लक्ष्मी पति, विष्णु ॥

(तखन गीत) — ८

गुरुतर = भारी । फन = फणा । पङ्क दरारि = पाँक सखयला पर जेना दरारि फाटि जाइत छैक । दल कदल = केराक पात । दसन = दाँत । काँदि =

५४- कालीक । ५५- करीअ । ५६- काली । ५७- चरण भर (एहि पाँती मे एतबहि अछि)— क ख । ५८- फना । ५९— दलक दल । ६०— जीब- क ख ।
६१— पसू । ६२— ०० (ख. पाँतीक अभाव)

(ततो६३ जलादागत्य प्रविशति श्रीकृष्णः । सर्वे साश्चर्यं पश्यन्ति।)

(दोहा)—

नन्द यशोदा आदि कए, जे केओ छल नर नारि ।
देखि सकल सानन्द भेल, अबइते निकट मुरारि ।।३४।।
ताहि दिवस सञो कृष्ण सञो६४, सबकाँ अधिक सिनेह ।
नर नारी जानल सबहु, ई केओ अपुरब देह ।।३५।।

इति द्वादश-नामाऽन्वित-महाकबि-नन्दीपति-विरचित-श्रीकृष्णकेलि—
मालाया तरुण-तामरस-लोचनो नाम
द्वितीयोऽङ्कः ।

कानिकय । कौशल = चतुरता सौं । गरुड तरास = गरुड़क डर । सागर = समुद्र मे । सतत = सदिखन ॥

(तखन जलसँ आबि श्रीकृष्ण प्रवेश करैत छथि । सभ आश्चर्य सँ देखैत छथि ।)

दोहा —

आदि कय = इत्यादि । दिवस सञो = दिन सौं । अपरुब = अपूर्व ॥३५॥

द्वादश नामाऽन्वित महाकवि नन्दीपतिक बनाओल
श्रीकृष्णकेलिमाला मे तरुण-तामरस—
लोचन (नवीन फुलायल लाल कमल सन
आँखिवला) नामक द्वितीय
अंक समाप्त ।

६३— ततः प्रविशति—क; ततो जलादागत्य श्रीकृष्णं सर्वे—ख ।
६४ — सञि- क; सञो- ख ।



अथ तृतीयोऽङ्कः

(दोहा) —

कतोएक दिवस बिताएकहुँ, हरिका यौवन भेल ।
अति सुन्दर हेरब हुँमव, गति रतिपति जिति लेल ॥१॥
सखी सहित श्रीराधिका, कर जमुना—जल केलि ।
पलटि पाछु नहि हेर केओ, रभस मगनि सभ भेलि ॥२॥
केओ शशिमुखि केओ कमलमुखि, कुरङ्गनयनि केओ नारि ।
जनि जगमग कर सहस ससि, चौदिस कला पसारि ॥३॥
एहि अवसर हरि जाएकहुँ, कौसले जमुना—तीर ।
चोली चीर चोराएकहुँ, कदम चढ़ल जदुबीर ॥४॥

राधिका — (गीतेन[1]) — 1

अम्बर धएल उतारी ।
से लए कदम तरु चढ़ल मुरारी ॥
अभरण एक न लेहे ।
हरि ! परिधान—वसन मोर देहे ॥
सबहुँ सखी पट पाऊ ।
हमरहि किए एति खन बिलमाऊ ॥
एत[2] कौतुक किए तोही ।
कारन कओन कहह दुहु मोही ॥

तृतीय अंक

(दोहा) — यौवन = युवावस्था । गति = कृष्णक चालि । रतिपति = कामदेव-कें ॥१॥ केलि = खेल । पलटि = घूरि कें पाछू क्यो नहि तकलक । रभस मगनि = हँसी—मजाक मे मग्न ॥२॥ शशिमुखि = चन्द्रमा-सन मुँहवाली । कुरङ्गनयनि = हरिण सनक आँखिवाली । सहस

१- गीतम् । २- एति ।

किए[3] तोहे[4] पारह गारी ।
हमे न सोहर हरि ! सरहौजि[5] सारी ॥
मोर[6] मुख अबइछ आगी ।
तोहुँ करह हरि ! ततबहि[7] लागी ॥
हमहुँ बुझिए तोर भावे ।
से मन बासि करह ! हरि आबे ॥
नन्दीपति कवि गावे ।
नन्दतनय रसमय बुझ भावे ॥

श्रीकृष्णः— *वल्लवसुते ! आभरणस्य किं प्रयोजनम्, तदालिङ्गनं देहि ।

राधिका[8]— (गीतेन)— 2

सखि सबे परिहरि गेली ।
ऐसनि विपति मोहि भेली ॥
हमे एकसरि जलमाँझ ।
परइते अबइछ साँझ ॥

ससि = हजारो चन्द्रमा ॥३॥ कौसले = कलकुशल, चतुरतासँ ॥४॥

राधिका— (गीतक द्वारा)— 1
अम्बर = वस्त्र । अभरण = गहना । परिधान वसन = पहिरन वस्त्र । पट = वस्त्र । कौतुक = उत्सुकता । पारह गारी = गारि पढ़ैत छह । आगी = आगि, ज्वाला । ततबहि लागी = ताही लेल । 'मन बासि करह' = नहि होयतह ॥

श्रीकृष्ण— गोपपुत्रि ! गहनाक हमरा कोन प्रयोजन अछि तें आलिङ्गन दएह ।

राधिका — (गीत सं)— 2
परिहरि = छोड़ि । जिवमार = प्राण लेनिहार । जल धीवर = पानि

३- कीए- क श । ४- सरहोज - क ख । ५—मुख—क श ।
६- तन बहि । ७—वल्लव , प- ० ।

आवे की करब परकार ।
मोरे लेखेँ भेल अन्धार ॥
तोहेँ हरि ! नन्दकुमार ।
चिन्हल चोर जीवन-मार ॥

जल धीवर, वन गोप ।
अति पौरुख अतिकोप ॥
सुनि उठलिहुँ देखि जाहि ।
पड़ओ हमर दुख ताहि ।

हमे न करिअ अंगिकार ।
जे मने आब विचार ॥
नन्दीपति कवि गाव ।
नन्दतनय बुभ भाव ॥

(ततः श्लोकः)—
एकाकिनीं विवस्त्रां च यादोगण-सुशङ्कुलाम् ।
परोक्षे तव धर्मस्य यथायुक्तं तथा कुरु ॥१॥
आकर्ण्य राधिका—वाक्यं कृतकृत्यो जनार्दनः ।
वृक्षादागत्य निकटं भाषते६ विहितं यथा ॥२॥
(ततो राधिका-करकमलं गृहीत्वा पुनः पुनः सविकारं पश्यति ।)

मे मलाह ओ वनमे गोआर विशेष बलशाली भय जाइछ । अंगिकार = स्वीकार ॥

(तकर बाद श्लोक)—
एकसरि, नाङटि ओ जलजन्तु सँ डरायलि हमरा अपन धर्मक परोक्ष मे जे उचित हो से करू ॥१॥

राधिकाक वचन सुनि सन्तुष्ट श्रीकृष्ण गाछ पर सँ लग आबि यथोचित बजलाह ॥२॥

(तखन राधिकाक करकमल पकड़ि बारम्बार देखैत छथि ।)

६— भाषितं ।

राधिका — १०कशण ! कशण !! अहं पि तुअ धम्मस्स परोक्खे; जह्ना जुत्तं तहा करेहि । वल्लह-सुअ बलक्कारेण एदं ण जुत्तं । मए वि तुअ ईरिसो पुरुसो अज्जवि कोवि ण दिट्ठो । अहवा तिअ-वेअणा-समुद्दं जलजाणेः साअरस्स अलक्खिआ णो होइ । [कृष्ण ! कृष्ण !! अहमपि तव धर्मस्य परोक्षे; यथा युक्तं तथा कुरु । वल्लभ—सुता—बलात्कारेण एतन्न युक्तम् । मयापि तव ईदृशः पुरुषः अद्यापि कोपि न दृष्टः । अथवा स्त्री-वेदना-समुद्रः जलयानैः सागरस्येव अलक्षितो न भवति ।]

(दोहा)—
राधा सओ[11] रतिरङ्ग कर, नागर नन्दकुमार।
अति अनरथ[12] करि राधिका तखनुक उचित विचार ॥४॥

राधिका— (सोइ गेन)—
जेहन तोहर भरोस करि, तेहने तोहे कए देल ।
आँगुर धरइते हाथ धर, सेहे[13] उपलक्षण भेल ॥५॥

(ततो गीतम्[14])- ३

हरि करु अम्बर दाने ।
तइअओ रमणि मन नहि परमाने ॥

राधिका— कृष्ण ! कृष्ण !! हमहूँ अहाँक धर्मक परोक्ष मे पड़लि छी, जे उचित हो से करू । गोप-पुत्रीक बलात्कार सँ ई काज ठीक नहि भय रहल अछि । हमहूँ अहाँक सन पुरुषकेँ आइ धरि ककरहु नहि देखने छलहुँ । अथवा नारीक वेदनारूपी समुद्र, समुद्रक जहाज सभ जकाँ आँखि सँ ओझल नहि होइत अछि ।

(दोहा)-
रतिरङ्ग = केलिक्रीड़ा । नागर = चतुर । अनरथ = अनर्थ ॥४॥

राधिका— (विकल भयकेँ)-
सेहे उपलक्षण = तकरे परि, सएह कहबी चरितार्थ भेल ॥५॥

१०— (दुनू पोथीक पाठ अत्यन्त भ्रष्ट ।) ११ सँ । १२- अमरथ, १३- सेह । १४- गीतेन ।

अम्बर अङ्क भरि लेला ।
दहोदिसि हेरि दौड़ि उठि देला ।।
पुरुष-हृदय नहि धीरे ।
केदहुँ पलटि पुन हरथि न चीरे ।।
पथहु परम डर माने ।
निरखि निरखि करु कान्हक भाने ।।
रसमय कए अवधाने ।
पुर परवेस पहिर परिधाने ।
[15]नन्दीपति देखि[16] नारी ।
सखि सब जाए देत परतारी ।।

(दोहा) —
दुर सओं[17] देखल सखीगण, राधा कर अतिरोष[18] ।
तोहरा सभकें की कहब, हमरा करमक दोष ।।७।।

(ततो गीतम्- ४)
चिन्हल चिन्हल सखि ! तोही, [19]हमे ओही ।
परिहरि ऐलिहि मोही ।।
सुनु सुनु संकट मोरा, नहि थोरा ।
[20]बड़ मन्द नन्दकिशोरा ।।

गीत- ३
हरि कर = कृष्ण कयल । अम्बर = वस्त्रक । रमणि = सुन्दरी । परमाते = विश्वास । केदहुँ = कहुँ, कदाचित् । चीरे = वस्त्र । पथहु = रास्तो मे । निरखि = देखि । कान्हक भाने = कृष्णक प्रतीति (कृष्ण त ने अबैत छथि से ज्ञान) । अवधाने = सम्हरि । परिधाने = वस्त्र ।।
(दोहा)-
अतिरोष = खूब तामस । करमक = भाग्यक ।।७।।

१५- ०० (द्रू पंक्तीक अभाव)- क । १६- देखि चतुरा नारी । १७- सौं- क ग । १८- अवरोध । १९—अइ सब मिलि । २०- बड़ छथि मन्द ।

आँचर [21]धएलन्हि फेरी, हेरि हेरी ।
हठहि बिलल [22]बड़ि बेरी ।।
तखन वसन हुनि देला, हमे लेला ।
भवितव छल से भेला ।।
नन्दीपति [23]कवि गावे, पछतावे ।
जावे होमए रह तावे ।।०।।
(दोहा)—
कतोएक दिवस बिताएकहुँ[24] दधि लय कएल पयान ।
सखी सहित श्रीराधिका, बाट भेटल भगवान ।।८।।
श्रीकृष्णः— (गीतेन)- ५
प्रतिदिन एहि पथे जाहे ।
दधि दुध बेचि-बेचि खाहे ।।
धरि पाउलिहुँ[25] हमे आजे ।
कए छाड़ब निज काजे ।।
ओहि[26] दिन बिसरल तोही ।
कोने परि मिललिहुँ मोही ।।
लए तरुअर चढ़ चीरे ।
सेहे हमे श्याम शरीरे ।।

गीत- ४
ओही = ओहीठाम, निर्जन बाट मे । परिहरि = छोड़ि । मन्द = अधलाह स्वभावक । भवितव = भावी ।।
(दोहा)
पयान = प्रयाण, यात्रा । भगवान = श्रीकृष्ण ।।८।।
श्रीकृष्ण— (गीतक द्वारा)-- ५
पथे = बाटें, रास्ता सँ । पाउलिहुँ = पाओल । निज = अपन । तरुअर = गाछ पर । चीरे = वस्त्र लय । तिर = तट पर ।

२१ धर फेरि-फेरी- क २२— कत । २३- कह आवे । २४— कँ° । २५- पौलिह । २६- ओ दिन ।

एहि तिर हमहि जगाती ।
के हम नह उतपाती ॥
सबहु सखो मिलि आऊ ।
दधि दूध माखन खाऊ ॥
मोरि धनि सबहु कहाऊ ।
अपन अपन घर जाऊ ॥
नन्दीपति कवि गाई ।
कान्हु उठल मनुथाई ॥

(दोहा) –
की देव उत्तर ताहि हमे, जे मोहि झाँपल जगात ।
ई कहि कान्हु पयान करु, आरम्भ भेल उतपात ॥९॥
कान्हरे कर धरु राधिका, दही देल फटकारि ।
गारि देइतेँ, सभे कृष्णकेँ, गोपी छुटलि गोहारि[27] ॥१०॥

(अथ प्रथम-गीतम्)- ६

आगाँ पाछाँ जतेक[28] छलि ।
सभे गोपी एक भेलि ॥
एकहि बेर सभे धसलि ।
कृष्णक उपर छुटि खसलि ॥

जगाती = घटवाह, खेवा लेनिहार । उतपाती = उकट्ठी । धनि = धन्या प्रेमिका । मनुथाई = उत्साहित ॥

(दोहा) —
ताहि = तनिकाँ । जगात = खेवाक रूप मे । कान्ह = कृष्ण । पयान = प्रस्थान (राधाक दिस) । उतपात = उपद्रव ॥९॥ कान्हरे = कृष्ण राधाक हाथ धयल । गोहारि = रक्षा मे ॥१०॥

पहिल गीत- ६
धसलि = आक्रमण कयलक । छुटि खसलि = टूटि पड़लि । कोनहुँ पाग = केओ गोपी कृष्णक मुड़ेठा धयलक । फाँड़ = धोतीक कसल बन्धन । उकरि = कूदि ।

27. गोआरि- क । 28— यति ।

कोनहुँ पाग, कोनहुँ फाँड़ ।
कोनहुँ धएल कृष्णक डाँड़ ॥
बफरि उकरि धरि धरि ।
कोनहुँ धएल पाँज[29] भरि ॥
केओ बाँध, केओ मार ।
केओ ककरहु हाक पार ॥
गाल ठुनुक, पीठ चाट ।
केओ गोपी चिउटी काट ॥
कोनहु झटहा, कोनहु चेप ।
केओ दही मुह लेप ॥
कान कनेठी, मुक्का धाड़ ।
ककरहु अस्त्र दूधक भाँड़ ॥
केओ धर, केओ छोड़ ।
केओ कच्छ कपाड़ फोड़ ॥
काँद बाज छाती पीट ।
केओ जोह[30] पाथर ईंट ।
दीढ़ रहल कृष्णक अड़[31],
सबहुँ देल[32] दाँत खड़ ॥

पाँज = बाहुपाश । हाक पाड़ = सोर करय (आह्वान) । ठुनुक = अङ्गुष्ठा पर तर्जनी मोड़ि गाल पर प्रहार । चिउटी = अङ्गुष्ठा पर सँ कसिकेँ त्वचा दबाएब । झटहा = प्रहारक हेतु फेकल जाइत डंटा । चेप = ढेपा । भाँड़ = भाण्ड, डाबा । काँद = कानय । जोह = खोजैत अछि । दीढ़ = दृढ़, स्थिर । अड़ = ओत, ओट मे । देल दाँत खड़ = आश्चर्यित रहल, लज्जित भेल । ढाल = शिथिल, हारल । दोहाइ = प्रार्थना । ओहाँकाँ = अहाँकेँ । पए = निश्चय । कान्ह = कृष्ण । पाओ = पाथर । बादरि = कवि नन्दीपतिक प्रसिद्ध नाम बादरि । अपात = विपत्ति । कबूल = गछल । जगात = खेवा ॥

29. पाय । 30. पोह । 31. खड़ । 32. सबहुँ लेल ।

बूझि बूझि अपन बल ।
सबहु गोपी कएल छल ॥
काँदि काँदि राधा कह ।
पुरुख पौरुख भाजगि सह[३३] ॥
हमर दोहाइ हलु छाड़ि ।
कओन फल आँचर फाड़ि ॥
जओ ओहाँकाँ इहे भए ।
ओहि पार देब गए ॥
कान्ह उठि आनल नाओ ।
सबहुँ गोपी देल पाओ ॥
कह बादरि इहे[३४] अगात ।
राधा कबूल कएल जगात ॥

(ततो द्वितीय-गीतम्)- ७

हरि हे ! अति आकुल मन मोरा ।
कतेक सहब हमे कौतुक तोरा ॥
फुटलि नाओ, टुटल करुआरे ।
कोने परि हमे धनि उतरब पारे ॥
एहि जमुना—जल कतहु न थाहे ।
देब त्रिमहार पार लए [३५]जाहे ॥
घने बुन्द बरिस[३६] दसहु दिसि मेहा ।
आजे अधिक भेल जीब सन्देहा ॥

तखन द्वितीय गीत- ७

आकुल = विकल । कौतुक = मजाक, हँसीठट्ठा । करुआर = नाओ खेबबाक काठक दण्ड । धनि = युवती । त्रिमहार = कण्ठक मोतीमाला । घने = सघन, अधिक । मेहा = मेघ । हिअ हारी = निराश भेल । पथ जनु चढ़ = रास्ता हो जनु गुजरय ।

३३- सह । ३४- एहे । ३५- थाहे । ३६ बरिस दसहु दिशि ।

सबहु[३७] सखी मिलि हलु हिअ हारी ।
बिनु रे पुरुख पथ जनु चढ़[३८] नारी ॥
नन्दीपति कह[३९] कओन उपाई ।
डगमग नाओ करइ अछि माई ॥

([४०]अथ तृतीय-गीतम्)- ८

हरि हे ! एतेक करह कथिलाई[४१] ।
आबहुँ अभिमत कहह बुझाई ॥
सभे सखि पार उतरि घर गेली ।
ऐसनि[४२] बिपति काहु नहि भेली ॥
सबकाँ चीर सबहुकाँ चोली ।
सभे परिहरि हमरहि सओ[४३] ठोली ॥
भल होअ छबिअ,[४४] होअह बधभागी ।
एत परिपञ्च भेल हमरहि लागी ॥
नन्दीपति कवि कह परमाने ।
पर रे रमनि दुख पुरुख ने[४५]जाने ॥

(श्रीकृष्णः हठात्कारेण राधिका-करकमलं गृहीत्वा पुनः पुनः सविकारं पश्यति ।)

श्रीराधिका— (सक्रोधं गीतेन कथयति)— ९

कहु कहु कइसन जगाते ।
के तोहेँ, के तोर ताते ॥

आब तेसर गीत- ८

अभिमत = अभिप्राय । चीर = वस्त्र । चोली = देहक वस्त्र (ब्लाउज) । परिहरि = छोड़ि । ठोली = ठट्ठा । बधभागी = हत्याक पापक भागी । परिपञ्च = प्रपञ्च, छल । पर रे रमनि = आनक नारीक ॥

(श्रीकृष्ण बलजोरी राधाक करकमल पकड़ि बारंबार विकार सहित देखैत छथि ।)

३७- सबहु । ३८- चहु । ३९— ० । ४०- अपि च । ४१- कथीलाई । ४२- ऐसनि । ४३- सठोली । ४४- बुझिब । ४५- न माने ।

बक देखि डेराइह बापे ।
तोहरा बड़ बल दापे ॥
छोड़ छोड़ आँचर मोरा ।
दधि दूध माखन चोरा ॥
लखते लेलाह४६ ग्रिम—हारे ।
आबे न करह किए पारे ॥
ऐसन करम मोर मन्दा ।
देलहुँ के४७ कर दन्दा ॥
ने४८ धारिअ एक कौड़ी ।
ने हमे तोहर नौड़ी ॥
किए हेरि४९ हलह डराई ।
कारन कहह बुझाई ॥
रह रह नन्दकुमारे ।
आबे करब परकारे ॥
बाप हमर दरबारी ।
भूप-भवन उपकारी ॥
कंस५० हनब जबे जानी ।
सभे दुध होएतह पानी ॥
सुनह५१ सुनह जदुराई ।
आज बुझब मनुसाई ॥

राधिका— (क्रोधपूर्वक गीतक द्वारा कहैत छथि)— ९
कइसन बगाते = केहन सातिक सेवा देब । ताते = बाप । दापे = बलक दाबी । ग्रिमहारे = कण्ठक मोती माला । करम = भाग्य । मन्दा = कमजोर । देलहुँ = देलो पर । के कर दन्दा = झगड़ा के कय सकैछ । नौड़ी = दासी । हेरि = देखि । हलह डराइ = डेराय

४६— लेलाह । ४७— ककर । ४८- न एक धारीअ । ४९- हरि हलह डेराई ।
५० कंस हलब पबे । ५१- सुनह ।

नन्दीपति कबि गाबे ।
५२आबे सहइ छिअ तावे ॥

[गीतार्थे श्लोकः]--

नो दूरादपि चागता परिचिता नो वाऽपि चौरप्रजा
नाऽहं कौतुक-भाजनं५३ तव पुनस्तातस्य चेटी न वा ।
नाऽन्या काऽपि कुटुम्ब वर्जित- ५४धरा द्रोच्या न नीचात्मजा
गोपुत्रस्य पयोऽपहारक ! हरे ! दूरं ५५ न कि तिष्ठसि ॥३॥

ततो गीतम्--१०

छोड़ु छोड़ु आँचर मोरा ।
माधव ! मोर निहोरा ॥
किए बिलमावह मोही ।
भल न कहत केओ तोही ॥
हमे बृषभान—दुलारी ।
एत नहि उचित मुरारी ॥

रहल छह । नन्दकुमारे = कृष्ण । परकारे = प्रतीकार । भूप भवन = राजाक घरक । कंस हनब = कंस मारबन्हि । दुध होयतह पानी = बदला लेल जयतह, तखन बूझि पड़तह । जदुराई = कृष्ण । मनुसाई = उत्साहित भेनाइ ॥

(गीतक अर्थ मे श्लोक) —

ने हम दूर सँ आयलि छी, ने तोहर परिचित छी, ने चोरनी छी, ने तोहर ठकवइआ छी, ने तोहर बापक दासी छी ने आन छी, ने अजाति छी आ ने नीच जातिक पुत्री छी । हे बच्छाक दुध छिननिहार हरि ! तोँ दूर हटल कियेक ने रहैत छह ॥३॥

गीत--१०

निहोर — प्रार्थना । बिलमावह — रोकि देरि लगबैत छह । भल — नीक ।

५२- पाबे सहइ । ५३ - भाजना - क; भाजनस्तव - ख । ५४ - वर्णित ।
५५ - दूरे ।

ऐसन करब मोर मन्दा ।
कि कहति[५६] सासु ननन्दा ॥

परिहरु कान्हु कुरीती ।
हठे नहि होइति पिरीती ॥

नन्दीपति कवि गावे ।
भजनहि पद भल आवे ॥

(श्रीकृष्णेन बलात्कारेणेन वल्लवसुता-सम्भोगं कृतमेव । राधिका सोद्वेगं नेत्राम्बुपूरितमुखी[५७] नखाग्रेण भूमौ लिखति ।)

श्रीकृष्णः - वल्लव-सुते ! कथं विषीदसि ? (इति उत्थाप्य[५८] सापराधं पश्यति ।)

[दोहा]--

जओं आबहु वल्लव-सुता, प्रतिदिन पास हमार ।
तओं हमे छोड़िअ तोहि पुनु, नहि तओ नहि परकार ॥११॥
मने अवधारल राधिका, इहे उचित एहि काल ।
भजनहि पओ परिनाम भल, चुप भए रहु ततकाल ॥१२॥

श्रीकृष्णः - वल्लव-सुते ! मौनं स्वीकारमेव, तथापि स्फुटमावेदयेति ।

मन्दा – अधलाह । ननन्दा – ननदि । परिहरु – छोड़ू । कुरीती – अनुचित काज । हठे – बल सँ । पिरीती – प्रेम । भजनहि – गओले सँ ।

(श्रीकृष्ण बलजोरी गोपपुत्री राधाक सम्भोग कयलनि । राधा उद्वेग सँ मुँह पर नोर भरलि नहक अगिला भाग सँ माटि पर किछु लिखैत छथि ।)

श्रीकृष्ण—गोपपुत्री ! कियैक विखिन्न होइत छी ? (उठाय अपराधी जकाँ देखैत छथि ।)

[दोहा]--

वल्लव-सुता – गोपपुत्री, राधा । परकार – उपाय ॥११॥
अवधारल – विचारल । भजनहि पओ – स्वीकारे कयला सँ । ततकाल – ओहिसमय ॥१२॥

---

५६ - करति सासु । ५७-नेत्राम्बुना मुखमापूरितं - क ख । ५८ - उत्थाय ।

राधिका - (गीतम्) - ११

सुनु[५९] सुनु नन्दकुमार ना ।
अनाइति न रह विचार ना ॥
किछु न देखिअ परकार ना ।
तें हमे करिअ अंगिकार ना ॥
एहि पथ मोर गतागत ना ।
सबे दिन तोहि समुपागत ना ॥
आवे न दोसर मन मोर ना ।
शपथ करिअ हरि तोर ना ॥
निरधन पाओल हेम ना ।
दिढ़ भेल प्रेमक नेम ना ॥
नन्दीपति हरि हेरि ना ।
रमनि हसलि मुख फेरि ना ॥

श्रीकृष्णः - प्रिये ! यासि ?

(राधिका तपन-तनया-पारमागत्य पुनः श्वासं परित्यजति । श्रीकृष्णः हारं ददाति । राधिका करकमलेनाऽऽरोपयति कण्ठे ।)

(इति निष्क्रान्तौ[६०])

॥ (प्रस्तावना वल्लवी-गृहागमनस्य) ॥

श्रीकृष्ण - गोपपुत्री ! चुप भेनाइ स्वीकारे थिक, तैयो साफ कहू ।

राधिका— (गीतक द्वारा) - ११

नन्दकुमार – कृष्ण । अनाइति – प्रतिकार नहि रहला पर । अंगिकार – स्वीकार । गतागत – अबरजात । समुपागत – आगमन । हेम – सोना । दिढ़ – स्थिर । नेम – निश्चय । रमनि – सुन्दरी ।

श्रीकृष्ण - प्रिये ! जाइत छी ?

(राधा यमुनाक पार आबि फेर श्वास छोड़ैत छथि । श्रीकृष्ण हार दैत छथि । राधा करकमल सँ कण्ठमे धारण करैत छथि ।)

(दुहूक प्रस्थान)

॥ गोपपुत्री राधिकाक घर अयबाक प्रस्तावना समाप्त ॥

---

५९ - सुनु सुनु । ६० - निष्क्रान्ता ।

(ततः श्लोकः)-

सायं च भवनं राधा सम्प्राप्ता गोगणैः सह ।
लोकेषु भौतिकक्लेश[६१] श्चच्चैरावेदितः पुनः ॥४॥

(ततो महोग्रप्रतापेन चीत्कारं कृत्वा चतुर्दिशं पश्यति । तत्क्षणं विहसति, रोदिति । इत्येवं दर्शनानन्तरं सर्वे साश्चर्यं पश्यन्ति । ततो गो-महिषी-निवास-स्थलादपि सम्प्राप्तो वृषभानुः ।)

वृषभानुः - (श्लोकेन) -

अग्निभयं राजभयं भयं चौरस्य किं न वा ।
अथवा दुःखितः कोऽपि कोऽपि रुष्टो गृहादपि ॥५॥

कलावती - अज्जउत्त ! सोको, को ऊणो ? [आर्यपुत्र ! शोकः, कः पुनः ?]

वृषभानु[६२] - (दोहा) -

धनि ! तुअ बदन मलीन देखि, नाना शङ्का बाढ़ ।
दुलहनि बेटी राधिका, की तन्हिका दुख गाढ़ ॥१३॥

(तखन श्लोक) -

साँझखन राधा गाय महिंसिक संग गाम पर पहुँचलि (तात्पर्य जे गाइयो सभ आयलि ओ ताहीकाल राधा सेहो आयलि)। लोक सभ मे जोर सँ भौतिक कष्ट (भूत लागब) केँ प्रकट कयलनि ॥४॥

(तखन बड़ जोर जोर सँ चिचिआय चारूभर तकैत छथि । लगले हँसैत छथि कनैत छथि । तखन गाय-महिंसिक घरि सँ वृषभानु (राधाक पिता) पहुँचलाह ।)

वृषभानु - (श्लोक सँ) आगि लगबाक भय थिक, कि राजाक शासनक भय थिक कि चोरक भय थिक ?अथवा केओ दुखी अछि कि केओ घर सँ रूसल अछि ? ॥५॥

कलावती - आर्यपुत्र ! शोक थिक, आर की रहत ?

वृषभानु - धनि – श्रीमती । नाना शंका – अनेक तरहक सन्देह ॥

---

६१ - संशूच्चैरावे । ६२ - - क ख ।

कलावती -- (सगद्गदाक्षरं गीतेन) - १२

सुनु सुनु पिआ; सुनु सुनु पिआ ।
आबे न जिउति मोर दुलहनि धिआ ॥
आबे की भवनपति हमरा[६३] पुछू ।
बेटीक दशा देखल[६४] अछि किछू ॥
जे मोर दुलहि[६५] लगाओल भूत ।
मञो सुनु तकर मरओ जेठ[६६] पूत ॥
एतिखने ककरहु न रह उफाट ।
थापल[६७] पए थिक ढहु[६८] मन म्राट ॥
अरिजन[६९]-परिजन आनह लेआए ।
समरथि बेटी हाथ सञो जाए ॥
नन्दीपति कबि कह परमान ।
अपनहि ई दुख छूटत[७०] निदान ।

वृषभानुः--(सक्रोधं राधा निकटं गत्वाऽनन्तरमिदमुक्तवान्[७१] राधिका प्रति) सुते ! कीदृशी रीतिरियम् ?

राधिका - (लोचने उन्मील्य तातमुखं वीक्ष्य[७२] महोग्रप्रतापेन चीत्कारं कृत्वा भूमौ निपतति ।)

कलावती - (दुःख सँ अस्पष्ट अक्षर मे गीतक द्वारा) - १२

धिआ – बेटी । भवनपति – गृहपति । दुलहि – बेटी केँ । मञो – हमरा सँ । उफाट – उपद्रव करबाक गर । थापल – स्थापित कयल, कृत्रिम, टोना कयल । म्राट – दग्ध । अरिजन परिजन – सकल परिवार केँ ।

वृषभानु - (क्रोधपूर्वक राधाक लग जाय तखन ई कहलनि राधाक प्रति) पुत्री ! ई केहन व्यवहार थिक ?

राधिका (दुनू आँखि खोलि पिताक मुँह देखि अत्यन्त जोर जोर सँ चीत्कार कय भूमि पर खसैत छथि ।)

---

६३ हमरा । ६४ देखो खिन । ६५ दुलहिके । ६६ जेठ । ६७ थापल । ६८ ई मम । ६९ अरिजन परिजन । ७० छूट । ७१ मक्त । ७२ = ० ०- (एतय सँ अग्रिम दोहा तकक अभाव) ।

कलावती - हा सुए ! गदासि, गदासि । [हा सुते ! गतासि, गतासि !!] (ततः करेण वक्षःस्थलं ताडयति) ।

(दोहा):-

की कहति राधा आएकहु, अबे कर प्रेम-प्रसंग ।
तावत तें जदुनाथ कों, प्राण७३ बढ़ल छल चङ्ग ॥१४॥
कोनटा लागल कृष्ण कहु, देखि देखि राधा—रङ्ग ।
जे अछि तसु मने काज मोर, तें एत करइछ भङ्ग ॥१५॥

(७४फरकां सव्नो सुनि हरि तखनि, करि किछ तान्त्रिक भेस ।
दोसर हमर सन के एखन, एहि अर्थक उपदेश) ॥१६॥

(ततः७५ प्रविशति श्रीकृष्णः)

श्रीकृष्णः७६- (निरीक्ष्य) इयमेव कलावतीनां रीतिः७७ । (ततः श्लोकेन)—

पुंसां किन्नु गुणेन न मय - महामन्त्रस्य पाठेन किं
किं नानारस-नृत्य-गीत-कविताभावाभियोगेन च ।
नाऽहं कोऽपि न शिक्षितं किमपि७८ वा नूनं मया ज्ञायते
सर्वं सम्प्रति विस्मृतं सुवदना७९- चेष्टा-चमत्कारतः८० ॥६॥

कलावती- हाय पुत्री ! चल गेलें, चल गेलें !! (तखन हाथसँ छाती पिटैत छथि ।)

ऐं=से (राधा) । जदुनाथ = कृष्ण । प्राण बढ़ल = अतिशय प्रेम करैत । चङ्ग = व्याकुल ॥१४॥

राधा - रङ्ग = राधाक दशा वा अनुराग । तसु = राधाक । भङ्ग = भंगक, ताल ॥१५॥

हरि = कृष्ण । तान्त्रिक भेस = कृष्ण तान्त्रिकक रूप धय झाड़बाक लेल जयबाक विचार कयल ॥१६॥

(तखन श्रीकृष्ण प्रवेश करैत छथि ।)

श्रीकृष्ण (देखि) इयेह चतुरनायिकाक चालि थिक । (तखन श्लोक सँ):—

पुरुषसभक गुण सँ की कामदेवक महान् मन्त्रक पाठे सँ की, अनेक रस, नाच गीत कविता आ भावक प्रयोगहि सँ की होयत ! ने हम केओ (विशिष्ट व्यक्ति) छी आ ने किछु शिक्षा लेने छी, परन्तु हम सभ किछु जनैत छी । से सभ एखन एहि सुन्दरीक चेष्टाक चमत्कार सँ बिसरि गेलहुँ ॥६॥

७३- प्राङ् चढ़ल । ७४ ० (दू पाँतीक अभाव)- क । ७५- ० (अग्रिम श्लोकक बाद ई पाँती अछि)- क ख । ७६- ० - क ख : ७७- कलावती निरीक्ष्य । ७८- कमपरा । ७९- मो । ८० ता. क; ते-ख । (एकर बाद "इति निष्क्रा ता:" छैक ।

(श्रीराधिका लोचन उन्मील्य ८१पश्यति । श्रीकृष्णो८२ गत्वा सक्रोधं पश्यति । सा चीत्कारं कृत्वा मूर्च्छति ।)

कलावती- कसण ! कसण !! पस्स८३, पस्स, तुअ वि पिअसही मह८४ सुआ ८५जीअणं पइहरइ । [कृष्ण ! कृष्ण !! पश्य, पश्य, तवाऽपि प्रियसखी मम सुता जीवनं परिहरति ।]

श्रीकृष्णः- (सहर्षम् उत्थाप्य) राधिके८६ ! चैतन्यं कुरु ।

वृषभानुः- (श्लोकेन)-

किं नाम तव रे प्रेत ! पश्य वा किं प्रयोजनम् ।
सत्वरं काननं गच्छ विहाय मम पुत्रिकाम् ॥७॥

श्रीराधा८७-- ब्रह्मपिशाचोऽहम् । उज्झटोऽहम । अले८८ अले वल्लह ! मयि पहालं मा कुलु यास्यामि । (अरे अरे वल्लभ ! मयि प्रहारं मा कुरु, यास्यामि ।)

(ततो ग्राम्योपचारेण अथवा मन्त्रादिनाऽतीव८९ क्लेशयति । राधिका ससंज्ञा९० लज्जया अधोमुखं पश्यति ।)

(श्रीराधिका आँखि खोलि तकैत छथि । श्रीकृष्ण जाय क्रोधपूर्वक देखैत छथि । राधा चीत्कार कय मूर्च्छित होइत छथि ।)

कलावती- कृष्ण, कृष्ण ! देखू, देखू, अहूँक प्रिय सखी हमर बेटी जीवन—त्याग करैत अछि ।

श्रीकृष्ण (प्रसन्न भय उठि) राधा ! होश मे आउ ।

वृषभानु- (श्लोकक द्वारा)-

रे प्रेत ! तोहर की नाम थिकौक ? ककर पठाओल छें ?
कोन काज छौक ? हमरा बेटी कें छोड़ि भटदय वन जो ॥७॥

श्रीराधा- हम ब्रह्मराक्षस थिकहुँ ! हम उज्झट (दुष्ट, पराक्रमी) छी । अरे अरे गोआर ! हमरा पर प्रहार जन करह । जायब ।

८१— ० - क ख । ८२ श्रीकृष्णं दृष्ट्वा क । ८३ - पश्य पश्य । ८४ - सह । ८५- जि उण येहवैमी । ८६- का । ८७-ब्रह्मपिशाच उज्झटो ब्रह्मणोऽहं - क । ८८-अहो वल्लभ हृतप्रहार मा कुरु । ८९-तं क्लेशं शमितमेव-क । ९०- ससंज्ञा ।

कलावती- [९१]सुए ! कथं तुअ ईरिसी अवस्था ? [९२]विसेसेण मां कधअ । [सुते कथं तव ईदृशी अवस्था ? विशेषेण मां कथय ।]

राधिका- (गीतेन कथयति)- १३

सुति उठि भवन छाड़लि हम छीके ।
तकर उचित[९३] फल पाओल नीके ॥
सभे सखि आउलि[९४] हुमहि पछुआऊ
एकसरि हमे धनि पथ भोतिआऊ ॥
भूतहि पाकड़ि तर जवे[९५] पगु देला ।
तेहि खने[९६] सओ मोहि कीदहु भेला ॥
कोएल चिकुर, फारल हम चीरे ।
निज नख बिकुटल अपन शरीरे ॥
भल छल मरण होइत वह आजे ।
के की कहत तकर होअ लाजे ॥
नन्दीपति जओ मोर हित होई ।
[९७]जे जनि आनलि से [९८]राखिअ गोई ॥

(तखन गमैआ उपचार सँ वा मन्त्र आदि सँ अत्यन्त कष्ट देत छथिन । राधा होश से आबि लाजेँ नीचाँ तकैत छथि ।)

कलावती- पुत्री ! कोना तोहर एहन दशा भेलह ? नीकजकाँ हमरा कहह ।

राधिका- (गीतक द्वारा कहैत छथि)- [गीत सं०- १३]

भवन = घर । छीके = ककरहु छिकला पर । नीके = पर्याप्त ।

धनि – युवती । पथ – बाट । भूतहि पाकड़ि – जे पाकड़िक गाछ भूताहि अछि । पगु – पाएर । कीदहु – किदन, अज्ञात व्यथा । चिकुर – केश । चीरे – वस्त्र । निज नख – अपन नह सँ । बिकुटल – नछोड़िकेँ घयल । जनि – नारी। गोई – गुप्त ।

९१- ए । ९२- सी कि- क; सा विसेसो माकध- ख । ९३- ० । ९४- आऊँ हम पछिआऊँ । ९५ -जे - क; जब - ख । ९६ खनहिँ । ९७-से आनल । ९८-राखब ।

(दोहा९९)--

वृषभानु आदि गोप सकल, महिमा कृष्णक देखि ।
शीश नमाओल सबहि जन, भेष अपुरब देखि ॥१७॥
... ... ।
क्षणमे सबहु[१००] पयान कर, जत छल गोप गोआर ॥१८॥
×× ×× ××
अति उत्कण्ठा मिलन लाइ[१], विकल राधिका प्राण ।
कतएक दिअस बिताएकहु, दशि लए कएल पयान ॥१९॥
प्रातहिँ बैसल [२]अछल, यदुपति यमुना तीर ।
देखि दूरहि सँ राधिका, पुलकित भेल सरीर ॥२०॥

(अथ [३]सन्देहोद्भावना गीतम्---१४)

जगमग जोति [४]अधिक झलकाती ।
कतए[५] दिवस शशि ऐसन काँती ॥
अनल शिखा सेहो मन नहि आवे ।
पवन परसि शीतलता लावे ॥
जओ कहु ई पुनि दामिनि रेहा ।
थिर होइत तओँ तकर सन्देहा ॥

दोहा--

महिमा – महत्व । भेष अपुरब – अद्भुत रूप ॥१७ १८॥
उत्कण्ठा – उत्सुकतापूर्ण इच्छा । पयान – यात्रा ॥१९॥
यदुपति कृष्ण । पुलकित रोमाञ्चित, आनन्दित ॥२०॥

[एकर बाद सन्देह होयबाक गीत – १४]

दिवस – दिन मे । शशि ऐसन = चन्द्रमाक समान । काँती = कान्ति, प्रकाश । अनल शिखा = आगिक धधरा । पवन परसि = हवा सँ स्पर्शकय ।

९९---(दुइ दोहाक अभाव) - क । १०० - ई । १- हाय । २- छल । ३ - कुवेहो । ४ - जोति अधिक भेल । ५ - कतेक ।

थल जलरुह नहि ई दिड़ जानी ।
'तें' सरसिज न हुलिअ मने मानी ॥

नन्दीपति कह की कहब आने ।
राधा पञो थिकि इह परमाने ॥

जञो मोहि पुछिअ यथारथ ।
आबे हमे भेलहुँ कृतारथ ॥

गीतार्थेन श्लोकः--

इयं दिवस - सुप्रभा भवति नैव चान्द्री कला
न वाऽपि कमलावली विचलिता च [९]नम्रानना ।
हिमाऽपि हि चिरस्थिताऽनलशिखा[१०] न सौदामिनी
तदा भवति राधिका कुवलयाऽन्विताऽऽस्याम्बुजा[११] ॥८॥

श्रीकृष्णः प्रिये ! आगम्यताम् ।

[ततो गीतेन---१५]

आज सुदिन दिन भेल मोर[१२] ।
अनेक दिवसें दरसन तोर[१३] ॥

दामिनिरेहा – बिजलीकाक रेखा । अथिर – चञ्चल । थल – पृथ्वी पर । जलरुह – कमल । दिड़ – निश्चय । सरसिज – कमल । हुलिअ – प्रकटित करैत छी।

गीतक अर्थक द्वारा श्लोक –

दिन मे प्रकाशित होइत ई चन्द्रमाक कला नहि भय सकैछ, चलैत मुड़ी झुकओने कमलो नहि भय सकैछ, शीतल ओ देरी धरि स्थिर रहने ने अग्निशिखा आ ने बिजलीका थिक । तखन ई एहि पृथ्वी पर कमलमुखी राधिका भय सकैछ ॥८॥

श्रीकृष्ण - प्रिये आउ ।

६ - औं । ७ - अति थीर होइत तें । ८ - तें शरसीज । ९ - नम्रानना । १० - ऽनलशि । ११-स्याम्बुजा । १२ - मोरा । १३ - भेल तोरा ।

एतनुक हृदय हमर सन ।
न भेल, न होएत काहु मन ॥

शशिमुखि ! करह समुख मुख ।
तोहें हमे प्रेम पहिल सुख ॥

तोहे मोरि[१४] प्रेम परसमनि ।
धरि कर धरह हमर धनि[१५] ॥

होअओ हृदय मोहि परतिति[१६] ।
वेकत करह अनुभव रिति[१७] ॥

नन्दीपति नहि निरबह ।
निञो मुखे नारि कतहु कह ॥

(ततः पूर्वक्रमेण संभोगं कृतमेव ।)

श्रीराधिका—(विहस्य) अहोऽद्य[१८] तव नियमस्य निर्वाहः !
श्रीकृष्णः—प्रिये ! [१९]कथमतीक्ष्णखड्गेन मां सन्ताडयसि ?

दोहा –

ओ रिति माधव-राधिका, कए किरिड़ा[२०] कत दीन ।
दिने दिने बाढ़लि प्रीति अति, एकओ न अपन अधीन ॥२१॥

(तखन गीतसँ) – १५

यथारथ – वास्तव मे । कृतारथ – धन्य । समुख मुख – मुँह सोझाँ । परसमनि – स्पर्शमणि । कर – हाथ । परतिति – प्रतीति, अनुभव । वेकत – व्यक्त, प्रकट । निरबह – निमहलह । निञो मुखे – अपना मुहेँ ।

(तखन पहिलके जकाँ सम्भोग कयलनि ।)

श्रीराधिका – (हँसि) अहा ! अहाँक एहि नियमक निर्वाह भेल !
श्रीकृष्ण – प्रिये ! किऐक भोथ तरुआरि सँ हमरा काटैत छी ?

दोहा--

ओ रिति – एहि प्रकारेँ । किरिड़ा – क्रीडा, विहार । दीन – दिन समय॥२१॥

१४ – मोर । १५ – धनी । १६ – तीती । १७ - रीती । १८ - अहो तव । १९ - कथं मतिक्षण । २० - क्रड़ा ।

गामहुँ कर गमनागमन, परिहरि लोकक लाज।
नर-नारी जानल सबहु, दुहु कॉ सुदिढ़ समाज ॥२३॥
राधाञो तेजल अपन घर२१, हरि तेजल घरद्वार।
सह भोजन, सह शयन पुनु, सहेँ सवतह सञ्चार ॥२४॥

\+ \+ \+

गोपसखा२२ सङ्ग एक दिन, नेञोता गोविन्द गेल।
धनि आनन२३ दिन शेष देखि, दिवसक शशि सम भेल ॥२४॥
लीखि पठाओल ओतए सञो, दिन दश अछि अटकाओ।
प्रेम परिच्छा बुझए लाइ, किदहु करै छथि ताओ ॥२५॥

(ततः प्रविशति पत्रहारकः पत्रं ददाति।)

राधिका: (पत्रं गृहीत्वा पत्रावलोकनानन्तरं२४ सखीं प्रति) सहि२५ विसाल-खि! मह पुरुस-मअणस्स पसाएण किं किं ण भविस्सदि, एदं किं? [सखि? विशालाक्षि! मम पुरुष-मदनस्य प्रसादेन किं किं न भविष्यति, एतत् किम्?]

परिहरि—छोड़ि। सुदिढ़ समाज—घनिष्ठ सम्पर्क ॥२३॥ तेजल—छोड़ल ॥

सह = सङ्गहि। शयन = सुतनाइ। सवतह = सभठाम। सञ्चार = गमन ॥२३॥

नेञोता = नोत पुरय। गोविन्द = कृष्ण। धनि आनन = राधाक मुहँ। दिनशेष = साँझ। दिवसक शशि = दिनुक चन्द्रमा ॥२४॥

अटकाओ = रुकबाक। परिच्छा = जाँच ॥२५॥

(तखन चीठी अननिहार प्रवेश करैत छथि। पत्र दैत छथि।)

राधिका: (पत्र लए देखि सखी केँ) सखी विशालाक्षी! हमरा कामदेव सनक सुन्दर पुरुष (श्रीकृष्ण)क कृपा सँ की की नहि होयत, ई की भेल अछि?

२१-घवल-क। २२—सखा। २३—जान न दिन सेष बिखि। २४ नन्तरमिद मुक्तं सखीं—क ख। २५- सही विशालक्खी पुरुषअणस्स पावेन कि कि ण भविस्सदि एदं कि।

(दोहा) –

तखनुक मोर मन तेहन छल, न गुनल निञ-कुल हानि।
धाड़ उपर काए होअ नहि तखनुकि ओहनि गलानि ॥२६॥
पहिला बएसक पहिल रस, पहिल संग सहवास।
शिव शिव!! से२६ सबे दुरि गेल, ठाम रहल उपहास ॥२७॥
उजर दसन उज्जर बसन, अभरण एकओ न अङ्ग।
कामिनि कॉ किछु साठ नहि, बढ़इते बिरह तरङ्ग ॥२८॥
घर-बाहर कर राधिका, बरिस नञोन जलधार।
पुन पुन पथ हेरि हेरि हिअ, निन्दए नन्दकुमार ॥२९॥

(ततो गीतेन – १६)

कोने मोर[२७] नारि जनम देल, कि[२८] ककर लेल,
पहिलहि बएस बिरह भेल॥
शिव शिव शाल मरम मोर, कि जीवन जोर,
जावे जनि होएत जिबहुँ ओर॥
सुनु सुनु मदन पुरुल—मनि! कि हमरि सनि,
जञो तोहँ देखह अपनि धनि॥

(दोहा)-

न गुनल = नहि विचारल। निञ कुल हानि—अपन कुलक हानि। ओहनि गलानि = एहन दुःख ॥२६॥ बएसक = अवस्थाक। शिवशिव = हाय हाय!! ॥२७॥ दसन = दाँत। बसन = वस्त्र। अभरण = गहना। साठ = सजावट ॥२८॥ नञोन = आँखि। पथ हेरि हेरि = बाट देखि देखि। हिअ = हृदय मे। निन्दय नन्दकुमार = कृष्णक निन्दा करय ॥२९॥

(तखन गीतसँ)- १६

कोने = के (विधाता)। नारि = स्त्रीक रूपमे। ककर लेल = ककरा हेतु। शाल

२६— सँ सबे दूरि। २७-मोर ओरे नारि। २८- की कर।

तञो तोहें बुझह विरह दुख, हेरि मधु मुख,
पर जिव बधइते बड़ सुख ॥
एक बेरि भयम भेलाह तोहें, कि एहि कोहें,
विरह विकल विरहिनि द्रोहें ॥
रसमय नन्दीपति कह, बड़ अनरह,
सुपुरुख सेवि जदि दुख सह[29] ॥

(इति मूर्च्छति । ततः प्रविशति विशालाक्षी ।)

विशालाक्षी- सहि वल्लभसुए[30] ! समस्ससिहि, समस्ससिहि। [सखि वल्लभसुते ! समाश्वसिहि, समाश्वसिहि !]

राधिका— (ससंज्ञ[31] लोचन उन्मील्य पुरतोऽवलोक्य गीतेन)-१७
सजल सघन घन देखि देखि।
कोने परि प्राण रहत सखि॥
शरदक शशि निशि कैसनि ।
एहि तह अधिक की ऐसनि ॥
जत जत छल मोहि शीतल ।
से सभे दए दुख बीतल ॥

= वेधैत अछि । मरम = मर्मस्थल । जिवहुँ ओर = प्राणक अन्त । मदन = कामदेव । पुरुष-मनि = पुरुष मे श्रेष्ठ । धनि = स्त्री । हेरि मधु मुख = हमर मुँह देखि । पर जिव = दोसराक जीवन केँ । बधइते = हत्या करैत । तोहें = कामदेव । कोहें = क्रोधें । द्रोहें = डाह सँ । अनरह = अनर्थ ।।

(ई कहि मूर्च्छित होइत छथि । तखन विशालाक्षी प्रवेश करैत छथि)

विशालाक्षी— सखी वल्लभ-पुत्री ! चेतना मे आउ, चेतना मे आउ ।

राधिका— (होशमे आबि आँखि ताकि आगू देखि गीत सँ)— १७

२९- बहु- क। ३०-सुये क- ख। ३१- ससंज्ञेन ।

परम बैरि पहु परतछ[32] ।
अंजलि[33] जलहुँ सन्देह अछ ॥
अवधि-दिवस धरि धनि सह[34] ।
कामिनि हृदय हाल[35] कह ॥
[36]नन्दीपति कह[37] मन गुनि[38] ।
अपनहि हरि अओताह[39] पुनि ॥

(तथ्यं राधिका-विलापवाक्यं समागता कामाक्षी द्वितीया सखी श्रीकृष्ण [40] सह ।)

कामाक्षी - हि ! सम्पत्तो वल्लह-सुओ[41]। [सखि! सम्प्राप्तो वल्लभ-सुतः ।]

(राधिका ससंज्ञं लोचने उन्मील्य श्रीकृष्णं दृष्ट्वा भूमौ निपतति ।)

श्रीकृष्णः - हा धिक् !! सन्देहे पातिता[42] मया। (इति उत्थाप्य गीतेन कथयति ।)

(अथ गीतम्)--१८

सुन्दरि ! की बोलि बोधब[43] तोही ।
बड़ कए सुख अछइत दुख आगिरल, तकर[44] उचित फल मोही[45]॥

सजल = जल भरल । सघन घन = गाढ़ मेघ । शशि = चन्द्रमा । निशि = राति मे कैसनि = केहन। एहितह एहि सँ । बैरि – शत्रु । पहु – स्वामी । परतछ = प्रत्यक्ष । अंजलि – आँजुर मे ।

(राधाक बचन सुनि दोसर सखी कामाक्षी कृष्णक संग आयलि ।)

कामाक्षी - सखी ! पहुँचलाह गोपपुत्र श्रीकृष्ण ।

(राधा होशमे आबि आँखि ताकि श्रीकृष्णकेँ देखि भूमि पर खसैत छथि ।)

श्रीकृष्ण - हाय हाय ! सन्देह मे दप देल हम हिनका । (ऊठि गीतक द्वारा कहैत छथि ।)

३२—तछ । ३३ —अंजनि । ३४—शह । ३५—हार—क ख । ३६— ० (ध्रुपतीक अभाव)—क । ३७ - कवि कह । ३८ – गुमी । ३९ – औताह । ४० – ० – क ख । ४१ – सुये । ४२ – पतिताम् । ४३ – बोधब सञो तोही ४४ – ० । ४५—मेही ।

हमरे बिरहे तोहे किबहुँ[४६] करै छह, [४७]तेँ लिखि लिखनि पठाऊ[४८]।
मनाएक लाइ[४९] मोहि तिरिवध लगइत, भागे भलहि भल आऊ ॥
काहि कहब दुख के पतिआएत, मोरि भेलि[५०] पाहुन छाती ।
हरि हरि !! हरि हमे की कएल निञ्ज करैँ, कण्ठ लगाओल काती ॥
[५१]एक रे आनि छथि तोहेँ सनि पेअसि, ता सञो कएल बेआजे ।
[५२]कसलो कनक दहन दह के देअ, धिक[५३] धिक धिक मोर काजे ॥
पड़ल हमर अपराध कमलमुखि ! तोहेँ किए तेजह पराने ।
पड़लो पुरुख मुरुख होअ कुदिवस, ई [५४]जग के नहि जाने ॥
नन्दीपति भन, बुझल तोहर मन, एतेक करह कथिलाई ।
जेँ जिबे आबे ओहन नहि करबे, बरु लेह सपथ कराई ॥

राधिका—(ससंज्ञ श्रीकृष्णमुखमवलोक्य सख्या [५५]सह निष्क्रान्ता सखीगृहं प्रति ।)

श्रीकृष्ण:—हा प्रिये ! परित्यज्यैव गतासि । सखि[५६] विशालाक्षि ! त्वं याहि प्रियानिकटं ममोपकाराय ।

गीत सं०—१८

बोयब = बौँसब । अंगिरल = अंगीकार कएल, स्वीकारल । लिखनि = चिट्ठी । मनाएक – मनयबाक हेतु । तिरिवध – स्त्रीवधक पाप । पाहुन – पाथर । हरि हरि – हाय हाय ! हरि हमे – हम श्रीकृष्ण । निञ्जकरैँ – अपना हाथेँ । काती – खड्ग । पेअसि – प्रेमिका । बेआजे – छल, वञ्चना । कसलो कनक – शान चढ़ओलो सोनाकेँ । दहन दह = आगि मे जरय । मुरुख – मूर्ख ।

राधिका—(चेतना मे आबि श्रीकृष्णक मुँह देखि सखीक संग सखीक घर दिस बिदा भय गेलीहि ।)

श्रीकृष्ण - हा प्रिये ! छोड़िये कय चलि गेलहुँ । सखी ! विशालाक्षी ! तोँ जाह प्रियाक समीप हमर उपकारक लेल ।

४६ – कीबहुँ । ४७ – तैँ । ४८ – क । ४९ – लाए । ५० – भेल । ५१ – एकेँ ।
५२ – कएलो । ५३ – अधिक अधिक धिक काजे – क । ५४ – जग जब ।
५५ – च सह । ५६ – ० ।

विशालाक्षी—(निष्क्रान्ता ।)

श्रीकृष्ण:—(श्लोकेन)

मरणं यौवनारम्भे धनारम्भे धनक्षति: ।
प्रेमारम्भे च विश्लेषो भाग्यशून्यस्य लक्षणम् ॥९॥

(ततो गीतेन[५७])—१९

के आन कञोन दोबेँ रुसि गेलि रामा ।
अपनहि आज बेकत भेलि बामा[५८] ॥I॥

(एतस्मिन्नर्थे श्लोक:)—

नो जानामि कथं रुष्टा राधिका रमणी मम ।
स्वयञ्च [५९]वामशब्दार्थम् अर्थं वा[६०]ऽऽवेदितं पुन: ॥१०॥

तइअओ तकर हमे करिअ धेआने ।
जकरे बिरहेँ मोर बिकल पराने ॥II॥

(अस्यार्थेन श्लोक:) —

जानामि नूनं न पुरेव[६१] रीतिं न [६२]वाऽऽगमिष्यत्यधुना प्रिया सा ।
ध्यानञ्च तस्या:[६३] क्रियते तथापि महाऽऽकुलोऽहं विरहेण यस्या ॥११॥

विशालाक्षी - (चलि गेलि ।)

श्रीकृष्ण - (श्लोकक द्वारा) यौवनक आरम्भ मे मृत्यु, धनक आरम्भ मे धनहिक नाश ओ प्रेमक आरम्भ मे बियोग भेनाइ अभागलक लक्षण थिक ॥९॥

(तखन गीतक द्वारा)-१९

कञोन = कोन । रामा = सुन्दरी । बेकत = व्यक्त प्रकट । बामा = सुन्दरी, विपरीत भेनिहारि ॥I॥

(एहि अर्थ मे श्लोक) —

ने जानि जे हमर सुन्दरी राधिका कियेक रुसि रहलीहि । बामा (सुन्दरी) शब्दक अर्थं केँ (विपरीत भेनाइ) आइये स्वयं आवेदित कयलनि अछि ॥१०॥

तकर = ताहि प्रियाक । धेआने = ध्यान, स्मरण ॥II॥

(एकर अर्थ सँ श्लोक)—ई निश्चय जनैत छी जे पहिलुक रीति एखन नहि अछि, आ ने ओ प्रिया एखन अयबे करतीह । तैयो हुनक ध्यान करैत छी, जनिक विरह सँ हम महान् विकल छी ॥११॥

५७ – गीतम् – क । ५८ – भामा क । ५९ – भामा । ६० – रावेदितं । ६१ – पुरेत पुर्वे – क ख । ६२ – राग मिष्यधुना । ६३ – हृदयेऽप्यधु ।

नयन काजर नहि, मुख नहि पाने ।
निज धनि ऐसनि देखथु पचबाने ।।III।।

(अस्यार्थेन श्लोकः) -

लोचने कज्जलं नास्ति, नास्ति[६४] ताम्बूलमानने ।
ईदृशं सुवध-वक्त्रं, कामः पश्यतु साम्प्रतम् ।।१२।।

[६५]नखें लिखि लिखि कए तसु निरमाने ।
[६६]चरन परल [६७]छिअ ऐसन गेआने ।।IV।।

ध्यात्वाऽऽलिख्य नखाग्रकेण पुरतः सा साम्प्रतं दृश्यते
दृष्टा मानवतीं सुमूर्त्तिमधुना तस्याः[६८]प्रियायाः पुनः ।
सोऽहं तच्चरणाम्बुजे निपतितो हा राम ! किं मे भ्रमो[६९]
विक्षेपोक्तिरियं प्रमीलितजनेनाऽऽलोकिता किं पुनः ।।१३।।

रमनि-विरह तह दुख नहि भारी ।
कखनि मिलति मोहि प्राणपिआरी ।।V।।

निज धनि = अपन प्रियाकें । पचबाने = कामदेव ।।III।।

(एहि पदक अर्थ सँ गीत)--

जकरा आँखि मे काजर नहि ओ मुँह मे पान नहि छैक, एहन अपन पत्नीक मुँह एखन कामदेव देखथु । (कामक प्रति आक्रोश थिक ।) ।।१२।।

नखें लिखि = नह सँ चित्र रूपें लिखि कय । तसु = प्रियाक । निरमाने = चित्ररचना । ऐसन गेआने = एहन बुद्धि कयल ।।IV।।

(एहि पदक अर्थ सँ गीत)---

ध्यान कय आगू मे नहक अग्रभाग सँ लीखि (चित्र बनाय) हुनका एखन देखि रहल छी । तखन तमसायल मान-करैत ओहि प्रियाक मूर्त्ति कें पुनः देखि हम हुनक चरण कमल पर खसि पड़लहुँ ! ई की हमरा भ्रम भय गेल ! ई हमर विक्षिप्तावस्थाक उक्ति थिक, आँखि मुनल व्यक्तिक द्वारा की ओ देखलि गेलि ? ।।१३।।

६४- ० । ६५- खने । ६६- धरन । ६७- अछि । (अस्यार्थेन श्लोकः)
६८- तस्याश्रियायाः । ६९- रमा । ७०- प्रेमीश्रिता । ७१- प्राणा प्रयाणोऽद्यमो ।

(अस्यार्थेन श्लोकः)—

विश्लेषादपि दुस्सहं शिव शिव !! [७०]प्रेमाश्रितानामिदं
दुःखं दीर्घतरं यथा किल तथा नाऽन्यं जगन्मण्डले ।
इत्थं पद्ममुखीं विना मम पुनः [७१]प्राणप्रयाणोद्यमो
नो जानामि समागमिष्यति कदा प्राणप्रिया राधिका ।।१४।।

भनइ[७२] नन्दीपति कवि कलानिधि ।
रसलि रमनि मिल सेहो[७३] बड़ सिधि ।।VI।।

([७४]अस्यार्थेन श्लोकः)---

यस्यापि वनिता रुष्टा समागच्छति [७५]सा यदा ।
तर्कयामि तदा तस्य सा चैवं सिद्धिरद्भुता ।।१५।।

(ततः प्रविशति राधिकया[७६]सह विशालाक्षी, राधिका[७७]-निवास-गृहद्वारे, शीतलोपचारव्यग्रा । कामाक्षी च ।)

विशालाक्षी-- सहि ! समास्ससिहि, समास्ससिहि । [सखि ! समाश्वसिहि,

---

रमनि-विरह तह = प्रियाक विरह सँ ।।V।।

एहि पदक अर्थ सँ श्लोक –

हाय हाय !! वियोगहु सँ अधिक असहनीय ई (प्रियाक रूसब) दुःख प्रेमीक हेतु जेहन पैघ होइछ, तेहन संसार भरि मे दोसर दुःख नहि अछि । एहि तरहेँ कमलमुखीक बिना हम प्राणत्यागक उद्योग करैत छी । ने जानि प्राणप्रिया राधिका कहिया अओतीह ।।१४।।

कलानिधि = कवि नन्दीपतिक नाम । रमनि = सुन्दरी, प्रिया ।।VI।।

(एकर अर्थ सँ श्लोक)- जनिक प्रिया रुसलो पर जखन आबि जाइत छथिन तेँ तर्क करैत छी जे तखन हुनका ले एक अद्भुत सिद्धि भय जाइत छनि ।।१५।।

(तखन राधाक संग हुनक घरक द्वार लग विशालाक्षी, जे ठंढा उपचारक हेतु व्यग्र कामाक्षी प्रवेश करैत छथि ।)

विशालाक्षी- सखि ! धैर्य धरू धैर्य धरू ।

७२- भन – क । ७३- इहे । ७४— × —ख । ७५— या ह्ययम् ।
७६- × । ७७- (एतय सँ पूरा पाँती विशालाक्षीक उक्तिक बाद अछि)-क ख ।

विशालाक्षी— (विहस्य) सहि ! मां पुच्छसि ? तुमं पि किं ण जाणसि ? [सखि ! मां पृच्छसि ? त्वमपि किं न जानासि ?]

राधिका— (गीतेन -- २०

सीतल भेल[७८] सभे आगि ।
साजनि ! एक जिव हमरहि लागि ॥
सबहु छाड़लि निअ रीति ।
साजनि! आबे अधिक भेल भीति ॥
सजल नलिन दल सेज ।
साजनि ! बरए विरह बहुतेज ॥
चा दने चौगुन धाधि ।
साजनि ! बड़ मन्द विरह बेआधि॥
आबे की करब परकार ।
साजनि ! हृदयक हार अंगार ॥
राखल नेह नुकाए ।
साजनि ! से आबे विरहें बेकताए ॥
नन्दीपति भन गीत ।
साजनि ! [७९]कुदिवसें केओ न हीत ॥

(इति मुर्च्छति ।)

समाश्वसिहि !]

राधिका— सहि ! विसालक्खि ! अस्स दुक्खस्स किम्मोसधं जाणसि ? [सखि विशालाक्षि ! अस्य दुःखस्य किमौषधं जानासि ?]

राधिका॰ सखि विशालाक्षि ! एहि दुःखक कोन औषध जनैत छह ?
विशालाक्षी - (हँसि) सखि ! हमरा पुछैत छी ? की अहाँ नहि जनैत छी ?
राधिका॰ (गीतक द्वारा)— २०
सीतल = ठंढो वस्तु। जिव = जीवनक। लागि = हेतु। भीति = भय। सजल = जल सहित। नलिनदल = पुरइनिक पातक ओछाओन। चान्दने - चाननहुँ। धाधि =

---

७८ - सभे मे । ७९ - कुदिवास ।

कामाक्षी—देवी ! समास्ससिहि, समास्ससिहि । [देवि ! समाश्वसिहि, समाश्वसिहि ।]

राधिका— (ससंभ्रमं नेपथ्याभिमुखमवलोक्य गीतेन)--- २१

कत उदवेग कहब तोहि, सजनि गे !
आब उचित एह थिक मोहि ॥
[८०]दरबरि प्राण उपेखिअ, सजनि गे !
[८१]पुनु न पुरुख-मुह देखिअ ॥
धाड़ उपर कए[८२] हे इते, सजनि गे !
[८३]लाजे रहइ[८४] हम [८५]मरइते ॥
पिआक पेअसि भए आबे [८६]पुनु, सजनि गे !
[८७]केओ अभिमान करए जनु ॥
आबे हम ककर विलासिनि, सजनि गे !
केओ जनु बोल[८८] बहुआसिनि ॥
नन्दीपति कह निरनय सजनि गे !
[८९]कारिअ पुरुष कपटमय ॥

ज्वाला। बेआधि = व्याधि। परकार = उपाय। हार अगार = मोतीक माला अङ्गोरा सन लगैछ। नेह - स्नेह। बेकताए - व्यक्त होइछ। कुदिवसें = अधलाह दिन भेला पर ॥ (ई कहि मूर्च्छित होइत छथि ।)
कामाक्षी—देवी ! धैर्य धरू धैर्य धरू ।
राधिका—(हड़बड़ाय नेपथ्य दिस देखि गीतक द्वारा)—२१
दरबरि - शीघ्र। उपेखिअ - उपेक्षा करिय, त्यागिअ । पेअसि - प्रेयसी, प्रेमिका। अभिमान - गर्व। बहुआसिनि - बधूटी, वधू कहि सम्बोधन। निरनय - निर्णय। कपटमय - वञ्चक, छली ।

---

८० - आब बरु । ८१ - फेरि । ८२ - हेरइति । ८३ - लाजतों । ८४ - × । ८५ - मरइति । ८६ - आब पूनु । ८७ - बरो । ८८ - कह । ८९ - कारि पुरुष ।

कामाक्षी— (गीतेन)—१२

साजनि[९०] ! आबे उचित नहि मान ।।ध्रु०।।
एखनुकि[९१] रीति हमे कोहुन देखै छिअ[९२] जागल पञ्चे[९३] पचबान ।।
[९४]कुसुम-रचित सेज [९५]दीप दिपति देखि, थिर नहि रहए गेआन ।
तखनुक धैरज धरय न पाविअ, सुनि सुनि पिक निक गान ।।
जूड़ि [९६]रयनि चकमक कर चाँदनि[९७], एहन समय नहि आन ।
एहन समय पहु मिलन जेहन पिक[९८] अकरहि होअ[९९] से जान ।।
[१००]त्रिवलि तरङ्ग सितासित सङ्गम उरज शम्भु निरमान ।
आरति पहु परतिग्रह[१] मंगइछ, करु धनि सरबसु[२] दान ।।
[३]कुसुमे कुसुमे कलि, बिलसि बिलसि अलि, करए अधर मधु-पान ।
अपन अपन पहु सबहु जेमाओल, भूखल तोर जजमान[४] ।।
[५]हम कि कहब सखि ! तोहेँ कमलमुखि, अपनहि कर समधान ।
सञ्चित मदन-वेदन अतिदारुण, नन्दीपति कवि भान ।।

कामाक्षी— (गीत सं)—१२

पचबान – कामदेव । कुसुम-रचित – फूलक बनाओल । सेज – ओछाओन पर । दिपति – प्रकाशित होइत । गेआन – ज्ञान । पिक – कोइलीक । जूड़ि रयनि – ठाढ़क राति । त्रिवलि-तरङ्ग – पेटक रेखारूपी लहरि । सितासित – उज्जर ओ कारीक (रोमावली कारी ओ पेटक चाम स्वच्छ) । उरज = स्तनरूपी शिवलिङ्गक निर्माण भेल अछि । आरति = आर्त्त, विकलता सँ । पहु = स्वामी । परतिग्रह = विधिपूर्वक दान स्वीकार । सरबसु = सर्वस्व । कुसुमे = प्रति फूलक कली पर । बिलसि = बिलास कय । अलि = भौँरा । अधर मधुपान = ठोर रूपी मधुक पान करैछ । जेमाओल = खोआओलक । जजमान = आश्रयदाता । सञ्चित = जमा कयल । मदन-वेदन = कामव्यथा ।

राधिका – विशालाक्षी ! हमरा जीवन मे कोन काज ? अथवा हुनका कोन काज ?

विशालाक्षी— सखी ! सत्ये कहैत छी

राधिका— तखन की कहैत छह ?

विशालाक्षी— कहबा = कथन, उक्त । परिच्छेद – अवधि, विराम । सार – गूढ़ अभिप्राय । पियासी – उत्कण्ठित ।।३०।।

राधिका– (हँसि दोहाक द्वारा)—अरि – कृष्ण, हमे अरि – हमर शत्रु । आन – अन्य, अनात्मीय ।।३१।। सिचह – सिञ्चन करैत छह । तातल –

९० – × । ९१ क । ९२ – छी । ९३ – पँ ९४ – कुसुमा । ९५ – दीपक देखि । ९६ – रैनि । ९७ – चानिनि । ९८ – मिलने जेहने सुख – क' । ९९-हो । १०० – ×× (दू पाँतीक अभाव) – 'क' । १ – प्रतिग्रह । २ – सर्व्वस । ३ – कुसुम कुसुम कल बिलसि बिलासिनि अलि मालति कर मधुपान । ४ – मेजमान । ५ – ×× (एतय सँ दोहा संख्या अठतीस धरिक अभाव)क– ।

राधिका— विशालाक्खी ! मां जिअइ कि पओअणं[६] अहवा तस्स कि कज्जं[७]?
[विशालाक्षि ! मां जीवितेन किं प्रयोजनम् ? अथवा तस्य किं कार्यम् ?]

विशालाक्षी— सहि ! सच्चं[८] भणसि । [सखि ! सत्यं भणसि ।]

राधिका[९]— तदो किं भणसि ! [ततः किं भणसि ?]

विशालाक्षी[१०]— (दोहा)—

कहबा कह परिछेद सखि ! हमहुँ बुझल तोर सार ।
जनिक पियासी तोहि सुनि, अपनहि छथि ऐनिहार ।।३०।।

राधिका – (विहस्य द्विपदेन[११])–

साजनि ! ओ हमे अरि नहि, दुर गेल दुर गेल आन ।
हमरा हुनकर[१२] काज नहि, जाओ कि रहओ परान ।।३१।।
की सिचह तातल तेल लए, तोहरो बुझल पिरीति ।
मुइला कैँ केओ मार नहि, इ अछि जगत भरि रीति ।।३२।।
केओ जनि आबह मोर लग, एहन होएत किए आज ।
हमरे मुइने कोन छति, के अछि ककरा लाज ।।३३।।

---

६ – प्रयोजनं । ७ – कार्यं । ८ – सत्य । ९ – × । १० – × ।
११—द्विपदेन दोहा । १२—हुनक ।

सुख लए सब केओ प्रीति कर, जगभरि के नहि आन ।
यदि जीवा सुखतैं हुनहि, तकरहु मरण निदान ॥३४॥

(ततः प्रविशति श्रीकृष्णः । श्रीकृष्णो राधिका-चरणतले उपविशति । तदाऽर्द्धोत्थिता प्रिया कुञ्चितवामहस्तव्यापारेण निवारिता ।)

विशालाक्षी—(निकटं गत्वा लोचनसंकारेण विज्ञापयति) राधिके ! चरणतले श्रीकृष्णस्तिष्ठति ।

राधिका—(सत्वरमुपविश्य वस्त्रसम्मार्जनं कृत्वा वामहस्तेन पटोत्सारणं कृतवती ।)

विशालाक्षी[१३]—(दोहा)—

लाजैं सकुच मुख तोर अकाँ, बिरह बिआकुल देह ।
आब तेजत तोर प्राण पहु, एति तिल मिलन सन्देह ॥३५॥

राधा—(दोहा[१४])—

एहि सब कहने सक्क नहि, हृदय जरल अछि मोर ।
पुरुषक परिचय देल मोहि, प्रेम कहल हम तोर ॥३६॥
[१५]पेअसि बिरह जे प्राण तेजि, से अछि जग केओ आन ।
कपटी कँ कहइत सुकर, करइत कठिन निदान ॥३७॥

तप्त ॥३२॥ जनि—नहि ॥३३॥ जीवा सुखतैं—सुख सँ जीबाक छनि। मरण निदान—हमर मृत्यु कारण थिक ॥३४॥

(तकर बाद श्रीकृष्ण प्रवेश करैत छथि । ओ राधाक पएर लग बैसैत छथि तखन कनेक उठलि प्रियाकेँ मोड़ल वाम हाथक इशारा सँ उठब सँ मना कयलनि ।)

विशालाक्षी—(लग जाय दृष्टियेँ कृष्णक सत्कार करैत कहैत छथि) राधिके ! पएर लग श्रीकृष्ण छथि ।

राधिका—झटदय बैसि कपड़ा सरियाय वामाहाथेँ घोघ ससारलनि ।)

विशालाक्षी—सकुच—संकुचित होइछ । तेजत तोर प्राण पहु—तोहर पति प्राण त्यागथुन्ह ॥३५॥

राधा—सक्क—साध्य, काज । पुरुषक—कृष्ण अपन ॥३६॥

१३—० । १४—उक्त दोहा । १५—पिअसि ।

ई सभ जानि अबहु तहु, हमहु न[१६] हुनकर नारि ।
[१७]जकरा कनइतें साठ[१८] नहि, से कर काज विचारि ॥३८॥

श्रीकृष्णः—(बद्धाञ्जलिः[१९]) प्रिये ! प्रसीद । [२०]क्षम्यतामयमेकोऽपराधः ।

राधिका—

(संक्रोधं गीतेन)—२३

आब की पेअसि[२१] नहि छथि, सजनि गे !
कोने लाजे मुह बजबैं[२२] छथि ॥
कथिलए एतय अबै छथि, सजनि गे !
देखए नहि सोहबै[२३] छथि ॥
[२४]साखी सभकेँ रखै छथि, सजनि गे !
हमै नहि काहु बजबै छथि ॥
[२५]पुरुष-प्रीति रिति मन पर, सजनि गे !
[२६]दरबरि जाथु अपन घर ॥
अपनहि अपन काट[२७] गर सजनि गे !
सै जन[२८] फिर करुणा कर ॥
नन्दीपति सुनु मोरा[२९] पहि, सजनि गे !
[३०]तोहरहु एतय कारज नहि[३१] ॥

पेअसि बिरह—प्रेमिकाक वियोग मे । सुकर—सुलभ, आसान । निदान—उपाय ॥३७॥

तहु—हुनकाँ एहन जानि । साठ—सार्थ, प्रतीकार ॥३८॥

श्रीकृष्ण—(कर जोड़ि) प्रिये ! प्रसन्न होउ । एकटा एहि अपराधकेँ क्षमा करू।

राधिका—

[क्रोधपूर्वक गीतसँ]—२३

पेअसि—प्रेयसी, प्रेमिका । सोहबै छथि—नीक लगैत छथि । साखी—साक्षी, गवाही । दरबरि—शीघ्र । पहि—पार्श्व, लग ॥

१६—० । १७—(एहि सँ पूर्व गीत सं०-२२क अन्तिम दू पाँती धरि 'क' पोथी मे नहि अछि ।) १८ कनइत साठि । १९—बद्धवाऽञ्जलि—क ख २०—क्षम्यतां मम कोऽपराधो । २१ पिअसि क ख । २२ मुह देखै । २३ - सोहाइ २४—० ० (दू पाँतीक अभाव) क ख । २५ - पुरुषक प्रीत रीति । २६ - फेरि बथ । २७...गाट । २८ - सै की आब । २९ - मोर पाही । ३० - तोरहु । ३१ - एत काज बिनाही ।

(इति निष्क्रान्ता सख्या समम् ।)

श्रीकृष्णः - प्रिये वर्तते [32]ऽद्याऽपि सा रीतिः ?

[ततो गीतेन]--२४

हरि हरि !! मलिनि[33] विलासिनि, जगभरि[34] कैओ जनु देख ।
[35]देअसि विरहे विष भोजन, एहि[36] तिल भरि ने विशेष ।।
बैसलि रह, उठि अनुसर, समुख[37] होइत मुख फेरि ।
एहितहु[38] कोन पराभव, पलटि पाछु नहि हेरि ।।
भल मन्द एकओ ने बाजए, उकुतिहि विरह बुझाव ।
मोर देल जत जत[39] अभरन, परिहरि मोरहि देखाव ।।
जे मोर करए शंभ पन, तकरहु सौं नहि बाज ।
ता सओ[40] होएत समागम, ई अछि[41] कठिन बड़ आज ।।
नन्दीपति कहु तखनुक, शिव शिव !! हमर निहोर ।
देअति पेअसि कहइत, जाइछ आब जिव मोर ।।

(ततः प्रविशति[42] सख्या समं राधा)

(सखीक संग बहार भय गेलि ।)

श्रीकृष्ण - प्रिये की एखनहुँ सएह रीति अछि ?

[गीत सौं]---२४

मलिनि विलासिनि – अपन कामिनीकेँ दुःखी । तिल भरि – थोड़बो कालक हेतु । विशेष – कोनो नव बात, परिवर्त्तन । बैसलि रह – 'बैसू' ई कहला पर उठि विदा भय जाइछ । समुख = सोझाँ । फेरि – घुड़ाय लैत छथि । एहितहु – एहि सौं अधिक । पराभव – दुःख । भल मन्द – नीक-बेजाय । उकुतिहि – उक्तिये सौं । अभरन – गहना । परिहरि – त्यागि । मोरहि – हमरहि ।।

(तखन सखीक संग राधा प्रवेश करैत छथि ।)

---

३२ - ख खोसा इति । ३३ - मिलन । ३४ - जग कैओ जर जनु - क । ३५ - पिपसि बिरह । ३६ एथि तिल परि—क । ३७—सुमुखि । ३८—कहु—क । ३९ - पूरित घत - क ख । ४० - सौं । ४१ - अछ - क; अछि कठिन पुनु - ख । ४२ - प्रविशति श्रीकृष्णः । ('सख्या समं राधा' ई कोनहु मे नहि अछि ।)

श्रीकृष्ण - विशालाक्षि ! अतः परं को विचारः ?

विशालाक्षी - देइ ! देओ[43] पुच्छइ । [देवि ! देवः पृच्छति ।]

राधा - (सक्रोधं [44]द्विपदेन)-

शीतल होअ जओ[45] सहसकर, शशि[46] शीतलता तेज ।
तैओ ने हुनि हम आब सखि ! एक संग एक [47]सेज ।।३९।।

श्रीकृष्णः - विशालाक्षि ! भवतु, भवतु । वल्लव-सुता नियमस्य निर्वाहं करोतु ।

(इति निष्क्रान्तः)

(दोहा)—

[48]तखनि बिचारिए[49] हरि बुझल, राधा कएल बड़ मान ।
सत्वर एहीं सौं निकसि पड़िअ, अपनहि पाइति निदान ।।४०।।
उपटल[50] एक फुलवाटिका, काहु अछल[51] ओहि गाम ।
झटदय से हरि ततए गए[52] सूनि रहल ओहिठाम ।।४१।।

०० ०० ००

(तया[53] वामकरेण वदनाच्छादनमुपधाय[54] अर्द्धोर्द्ध्वसञ्चरित—दक्षिणकराग्रेण सखीभ्यनाह्वानं[55] कृतमेव ।)

श्रीकृष्ण - विशालाक्षि ! एकर बाद की विचार अछि ?

विशालाक्षी - देवि ! श्रीकृष्ण पुछैत छथि ।

राधा - (क्रोधपूर्वक दोहा सौं) - सहसकर – सूर्य । शशि – चन्द्रमा । शीतलता ठंढ़इ । तेज – छोड़ि देथु । हुनि – हुनक, श्रीकृष्णक । सेज – ओछाओन पर ।।३९।।

श्रीकृष्ण - विशालाक्षि ! बेस बेस । गोपपुत्री अपन नियमक निर्वाह करथु ।

(बहार भय गेलाह ।)

हरि – कृष्ण । सत्वर – शीघ्र । निकसि – निकलि । निदान – उपाय ।।४०।।

उपटल – उजड़ल । गए – जाय ।।४१।।

---

४३ एतओ क । ४४ द्विपदेन दोहा । ४५ ० । ४६ शशि हो पावक । ४७—सेज । ४८—०० (दू पातिक अभाव)- क । ४९ - ० । ५० - उकटल- क । ५१—छल । ५२ - गेल । ५३ - तत्र । ५४—वदनाच्छाद्य सुप्ता । ५५ - सजीव-

विशालाक्षी—देइ ! किं भणसि ? [देवि ! कि भणसि ?

राधिका—(दोहा)—

सुपहुक आसन सून देखि, अति आकुल मन मोर ।
कतय गेल छथि की करय, नयन ढरै अछि नोर ।।४२।।
भल भल साजनि ! चिन्हल तोहि, तोहरे ई परिपञ्च ।
[५६]जे जन आहन अधीन रह, से की धनि कें वञ्च ।।४३।।

विशालाक्षी—(दोहा)

बड़ कठीन हमे[५७] पड़ल छिअ, एकहु न जीबक बाट ।
[५८]तखने तोहें पाहन[५९] भेलिह, आब भेलिह तोहें पाट ।।४४।।
[६०]जाह जाह' जओं ई कहिअ, लगलहु जनि तोहि भूत ।
टूटल बचन कि[६१] पुरुष सह, केहनो होए कपूत ।।४५।।

(इति सर्वे निष्क्रान्ताः अन्वेषणाय श्रीकृष्णस्य ।)

(ततः प्रविशति विशालाक्षी)

विशालाक्षी—(दोहा)—

कतए कतए नहि जोहल[६२] छिअ, कतहु न मिललाह मोहि ।
पुरुष मान बड़ कठिन सखि ! किदहु करब हुनि[६३] कोहि ।।४६।।

(श्री राधा वामा हाथें चोप उठाय आधा ऊपर उठल दहिना हाथक अग्र-भाग सँ सखी सभकें बोर कपलथिन ।)

(तखन विशालाक्षी प्रवेश करैत छथि ।)

विशालाक्षी - देवि ! की कहैत छी ?

राधिका - सुपहुक—सुन्दर स्वामीक ।।४२।।
भल—नीक जकाँ । परिपञ्च—चालि थिकहु । वञ्च—ठकत ।।४३।।

विशालाक्षी - पाहन—पाथर । पाट—रेशम ।।४४।।
कहिअ—कहयामे ।।४५।।

(सभकेओ कृष्णक खोज मे बहार भय गेल ।)

(तखन विशालाक्षी प्रवेश करै छथि ।)

नाक्षना । ५६ - जे जन एहन । ५७ - ० । ५८ - तखनि । ५९ - पाहुन भेलिह । ६० - जाह जाह जौं फरि कहब । ६१ - की । ६२—कतय कतय नहि जोहल । ६३ - हन ।

राधिका—(उद्वेगेन निद्रायां सुप्तोत्थिता, गीतेन[६४])—२४

[६५]के जन कओने दोखें तेजलन्हि हमरा[६६] ।
पर रे रमनि रस लुबुधल भमरा[६७] ।।
निज कर परस[६८] परस निज देहा ।
[६९]निन्दक भरम भेल, पिआक सन्देहा ।।
तेहि अवसर हम उठलिहु [७०]जागी ।
हरि हरि !! भेलहुँ परम दुखभागी[७१] ।।
हेरि हेरि पीन पयोधर भारे ।
कत दिन तेजब नयन जलधारे ।।
उपवन उपगत दछिन[७२]-समीरे ।
किदहु करत[७३] पुनु परसि शरीरे ।।
मन छल सुपहु होएत सुखदाता
नव परिचय, नव विरह विघाता ।।
जकर रमणि हम, कहिअह[७४] ताही ।
देखलि तोहरि धनि विकल बताही ।।
नन्दीपति इ[७५] थिकओन सन्देहा ।
[७६]जेहन विरह हो तेहन सिनेहा ।।

विशालाक्षी—जोहल—ताकल । पुरुष मान—पुरुषक मान करब, रुसब ।। ४६।।

राधिका— (विकलता सँ नीन्द मे सुतिकें उठलि गीत सँ)—२५
पर रे रमनि—दोसराक रतीक विलास मे आसक्त भौंरा । निजकर परस—अपन हाथक स्पर्श सँ अपन देहक स्पर्श भेल । निन्दक भरम—नीनक सन्देह । पिआक—ताहि मे प्रियतमक । पीन-पयोधर—पुष्ट स्तन । उपगत—प्राप्त । दछिन-समीरे—दछिनाही बसात । परसि—छुबि । विरह-विघाता—वियोग देनिहार । इ थिकओन—ई थिकनि ।

६४—सा गीतेन कथयति-क ख । ६५-की जनि । ६६—मोरा क ख । ६७-भमहरा । ६८ - परसि......(पाँती खण्डित)। ६९ - निनक । ७० - जागि - क ख । ७१-भागि—क ख । ७२ - दखिन - क ख । ७३ - होएत पुर । ७४ - कहिहह - ख । ७५ - कह तखनुक नेहा । ७६—येहन ।

(दोहा)—

अति उत्कण्ठा मिलन लाइ, बाकुल[७७] मदन विकार ।
सखी पठाओल राधिका, वेकत भेल सब भार[७८] ॥४७॥
पड़ल हमर अपराध बड़[७९] नारि नीच-मति भोरि[८०] ।
पुरुष महाशय सकल सह, विनति करबि कल जोड़ि ॥४८॥
[८१]आज बल हुनिसओं भेँट नहि, तावत रखिअह गोए ।
से कहिअहु[८२] सत्वर सखी, जिबइते दरसन होए ॥४९॥

(ततः प्रविशति विशालाक्षी)

विशालाक्षी (श्रीकृष्णस्य निकटं गत्वा गीतेन)—२६

माधव ! भल ने कहत केओ तोही[८३] ।
तेँ तोरि[८४] पिअसि पठाओलि मोही ॥
तोहेँ नहि तेहन अकर होए हँसी[८५] ।
[८६]सुपुरुष पुरुष न[८७] बिसर पेअसी ॥
राधा-करुणा सुनि ओहिठाम ।
पलओ ने[८८] पथिक करए विश्राम ॥
नीर नयन, मुख[८९] हरि हरि हरी ।
[९०]आँचरि आरसि जनि भेटलि पुतरी ॥

(दोहा)—मदन विकार – कामवासना । वेकत – व्यक्त ॥४७॥
भोरि – अज्ञानी । महाशय – उदार ॥४८॥
गोए – गुप्त । सत्वर – शीघ्र ॥४९॥
(तखन विशालाक्षी प्रवेश करैत छथि ।)
विशालाक्षी—(श्रीकृष्णक लग जाय गीतसँ)—२६
भल – नीक । पिअसि – प्रेयसी । राधा-करुणा – राधाक दुःख ।
पलओ – पलोभरिक हेतु । आँचरि आरसि – अन्हरायल अयना

---

७७ – कि । ७८ – भाव । ७९ – हमे – क । ८० – भोरि । ८१ – परबल । ८२— हह । ८३—तोहि—क । ८४—तेँ तोहि ओतए पिअसि पठाओलि मोहि । ८५— हसि क, हसी—ख । ८६—पुरुष पुरुष—क । ८७—पए । ८८—पल लेपथिक ८९—हरिहरी । ९० आध आरसि ।

सामहुँ आबे नहि रूसति राधे ।
सपुरुष खेमिए[९१] धनि अपराधे ॥
नन्दीपति कवि कह परमाने ।
पाछिल सन[९२] मोहि केओ जनु[९३] जाने ॥

(ततः श्लोकः)

श्रीकृष्णः[९४]—न सा राधा, न सा प्रीतिः, सोऽहं सम्प्रति नो[९५] हरिः ।
पुनश्चेदं विशालाक्षि ! अयि ! मा वद, मा वद ॥१६॥

विशालाक्षी – (दोहा)

नहि कहने परकार नहि, गेलहि पए[९६] पुनु आज ।
नारि मारि कए[९७] कओन फल, कहइहु[९८] ककरा लाज ॥५०॥

श्रीकृष्णः—(सक्रोधं) विशालाक्षि ! मां जानासि, तथापि दुराग्रहं न त्यजसि ।

(विशालाक्षी निष्क्रान्ता)

राधिका—विशालाक्षि ! सहि ! [९९]गदो कहणो ? [विशालाक्षि सखि ! गतः कृष्णः ?] (इति मूर्च्छति । ततः ससंश[१] गीतेन)—

मे । पाछिल – पहिलुका सन, जेहन पहिने कठोर छलहुँ ॥
(तखन श्लोक)—
श्रीकृष्ण—एखन ने ओ राधा छथि, ने ओ प्रेम अछि आ ने हमहीँ ओ श्रीकृष्ण छी । हे विशालाक्षी ! आब फेर जनु बाजू, जनु बाजू ॥१६

विशालाक्षी – परकार – तरीका, उपाय । कहइहु – कोन ॥५०॥
श्रीकृष्ण – (क्रोध सहित) विशालाक्षी ! हमरा जनैत छह, तैयो दुराग्रह नहि छोड़ैत छह ।
(विशालाक्षी बहार भय गेलि ।)
राधिका—विशालाक्षी ! सखि ! चल गेलाह कृष्ण ? (मूर्च्छित होइत छथि ।)

---

९१ पै खेमिए अवराधे । ९२ तर । ९३ जनि ।
९५—न । ९६—ओतए । ९७ – कए कोन – क ख । ९८ – कीबहु । ९९—० (एतय सँ 'मूर्च्छति' तक अभाव) । १—ततो राधा ।

[गीत संख्या--२७]

'परदेश गेल पहु परिहरि ।
काहि कहब दुख हरि हरि ॥
सुपुरुष जानि हमे[3] भजलिहु ।
'कोपहु कटु नहि बजलिहु'[5] ॥
सुमरि समागम तन्हिकर[6] ।
अहनिसि नीर नयन झर ॥
निअरहु बस मोर नागर ।
अंतर अछि जनि सागर ॥
आन करैत[7] भेल आने ।
बुझल[8] ने पुरुषक माने ॥
केओ जनु बोल मन्द माधव ।
भवितब छल पहु साधव ।
नरदीपति कह अनुभव ।
सबतहु दुख मनोभव ॥

(इति मूर्च्छति ।)

कनेक कालक बाद होशमे आबि गीतक द्वारा)—गीतसं० - २७
परिहरि – छोड़ि। हरि हरि – हाय हाय !! । भजलिहुँ — वरण कयल। कोपहु – क्रोधहु सँ । कटु – अप्रिय कथा । सुमरि – स्मरण कय । अहनिसि – दिनराति । निअरहु – निकटहु । नागर – कुशल नायक। अंत. – अन्तर, दूरी । सागर – समुद्रक । आन – करय लगलहुँ कोनो काज आ भेल कोनो दोसरे । माने – अभिमान । मन्द माधव – कृष्ण अधलाह छथि । भवितब – भावी । साधब – मनाएब । सबतहु – सबसँ अधिक । मनोभव काम ॥

(मूर्च्छित होइत छथि)

२ - बिरह वढल मोहि घरी घरी (बोलर चरनक कदमे) । ३ - हम भजलहु । ४ - केहुक दूब - क । ५ - बजलहु - क ख । ६ - तेहिकर । ७ - करैत हमे भेल । ८ - बुझल कठिन मे - क ख ।

विशालाक्षी—'समाश्वसिहि । [समाश्वसिहि ।]
राधिका[9] - (सशंसं) - (दोहा)-
सुपहुक[10] कहने कयल नहि, बड़ कए बड़ाओल सोक[11] ।
से आबे अपनहि चलल छिअ, कि कहत गामक लोक ॥५१॥
(इति निष्क्रान्ता ।)
(दोहा)-
राधा अबइत देखिकहु, कएल मलिन मुख-कांति ।
सूति रहल हरि कांछिकहु, दुहु दिश दोपटा जाति ॥५२॥
राधा - (श्रीकृष्णनिकटं गत्वा वदनाच्छादनं विमुच्य[12] सगद्गदाक्षरं गीतेन कथयति ।) [गीतसं०--२८]
माधव ! मोर निहोरी[13] ।
कोपहुँ बाजह[14] मोहि हेरि एक बेरी ॥
ने कर सुजन सुख बाधे ।
जँ अनुगत कर शत अपराधे ॥
[15]जौं ओहन वचन [16]उपाड़ी ।
सुरभि सुरभि नहि बह ताहि[17] छाड़ी[18] ॥

विशालाक्षी - धैर्य धारू ।
राधिका—(होश मे आबि) सुपहुक – प्रियतमक । सोक – दुःख वा सोख, मनोरथ ॥५१॥
(बाहर भय गेलि ।)
(दोहा)– राधा – राधाकेँ । मुखकांति – श्रीकृष्ण मुँहक कान्ति दुखी बनाय लेल । हरि – कृष्ण ॥५२॥
राधा – (श्रीकृष्णक लग आय हुनक मुँह पर सँ वस्त्र हटाय विह्वल स्वर मे गीतक द्वारा कहैत छथि ।) – गीतसं० – २८
निहोरी – प्रार्थना । कोपहुँ – तमसाइयो कय । हेरि – देखि । सुजन –

९—० । १० सुपहु कहने । ११ - सोक । १२ - विमुच्च । १३ - बिस हेरी - क । १४ - बाजह एक बेरी । १५ - जों ओहन । १६ - उपाली - क; उपकारी - ख । १७ - वहुला । १८—छाली - क ।

[१९]बेधलहु मानिक मोती ।
[२०]भए गर परित अधिक देह जोती ॥
नन्दीपति कवि भाने ।
सुपुरुष निठुर नर[२१] रहए निदाने ॥

(अपि च । गीतसं०—२६)

मोर मुइल मुख[२२] देखिअ ।
[२३]जओँ मोहि आवे[२४] उपेखिअ ॥
[२५]हमरहि कें लात मारिअ ।
[२६]जओँ किछु[२७] आन बिचारिअ ॥
[२८]आवे जओँ रूसलि रहीअ ।
पहु हमरहि लए करीअ ॥
[२९]हमरहि बिधुर नहाइ ।
[३०]जओँ मोर देल नहि खाइ ॥
नन्दीपति एह सुनइत ।
जाग उठल पहु हसइत ॥

नीकलोक। सुख-बाधो – सुख मे बाधा। अनुगत – शरणागतव्यक्ति। सत – सैकड़ो। पवन – वायु। उपाड़ी – गाछकेँ उपाड़निहार, उपद्रावी। सुरभि—वसन्तमे। सुरभि – सुगन्धि कें। बेधलहु – छेदो कयला पर। मानिक – मणि। गर परित – गरा मे पहि। सुपुरुष – उत्तम नर। निदाने – निर्णीत अछि॥

(आओरो। गीत सं०—२६)

मोर – हमर। उपेखिअ – उपेक्षा करी। पहु – पति। हमरहि बिधुर – हमर मुइला पर पत्नीहीन भय।

---

१९ – बेधहु। २० – तँओ तकर अधिक हो। २१—निठुरइ रहे। २२—मुह – क। २३—जौँ। २४ – आज। २५—हमरहि शोणित नहाइअ। २६ – जौँ। २७–एहि – क। २८—× × (दू पांतीक अभाव)। २९—० (स्थान रिक्त)। ३०—हमर देल।

श्रीकृष्ण:—(लोचने उन्मील्य राधिका – मुखमवलोक्य) —

(दोहा[३१]) –

"पिअसि[३२]-बिरह जे प्राण तेज से जन अछि केओ आन[३३] ।
कपटी कॉं कहइते[३४] सुन्दर, करइते कठिन निदान" ॥५३॥

(अंक—३, दोहा – १७)

[३५]जत जत तोहे धनि ! कहल छल, [३६]तत तत भेल परमान ।
जओँ हमे निवितहि आबे छिअ, किछु[३७] नहि तसु समधान ॥५४॥
हमरा ओ पितिऔत विधि, अहँकॉं सहोदर भाय ।
[३८]तोहे तु ओहाँकॉं पक्ष सबे, हमरा केओ न सहाय ॥५५॥
[३९]तारा कॉं नहि त्रास की, राहु गरासल [४०]चान्द ।
तकरहि मारथि जानि यम, जकरहि लाइ सबे कान्द[४१] ॥५६॥
जकरा अछि संसार सुख, तकरा जीबक काज ।
हमरे जिबने कोन फल मरण उचित थिक आज, ॥५७॥

श्रीकृष्ण – (आँखि खोलि राधाक मुँह देखि) पिअसि बिरह – प्रेमिकाक बिरहमे। कपटीकॉं – धोखेबाज कें। निदान – उपाय॥५३॥ परमान – प्रमाणित। तसु – ओहि बात सभक। समधान – समाधान, उत्तर॥५४॥ पितिऔत विधि – विधाता वा भाग्य प्रतिकूल अछि। सहोदर – अनुकूल। तोहे तु – अहाँ सब अहीँ छी॥५५॥ तारा – तरेगन। त्रास – डर (राहुक ग्रसित करबाक भय)। राहु गरासल – ग्रहणकाल मे राहु ग्रसित कयल। यम = यमराज। कान्द – कनैत अछि॥५६॥ संसार-सुख – संसारक सुख॥५७॥

एके करेँ – राधा अपन एक हाथ सँ। घोघट – घोघकेँ। हरि-

३१—द्विपदेन – क। (एतय 'ख' पोथी मे दोहासंख्या ५४ बोहरायल अछि।) ३२–पिअ मिमि। ३३ – ने। ३४—रहइतेँ। ३५—यत यत। ३६—० क ख। ३७—किछ नहि एहि मे यान—क। ३८—तोहे ओ—क। ३९ – तारा का नहि भाषा कि। ४० – चाँद।

[41]एके करेँ घोघट ससारिकहु, दोसरे करेँ लए पान ।
अति हठे हरिमुख पान दए, कए सुख, करुण निदान ॥५८॥
धरि धरि पाँज उठाएकहु, हरिकेँ सुवदनि लेल ।
विरह पराभव दुर गेल, मध कए सम्मिलन भेल ॥५९॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे)

इति द्वादश-नामाऽन्वित-महाकवि-नन्दीपति विरचित
श्रीकृष्णकेलिमालायां राधाकृष्णमानमोचनो
नाम तृतीयोऽङ्कः[43] ॥

मुख – कृष्णक मुँह मे । पान – ताम्बूल । करुण निदान – शोक छुटबाक उपचार ॥५८॥
सुवदनि – सुमुखी राधा । विरह पराभव – वियोगदुःख । सम्मिलन – सम्मिलन, समागम ॥५९॥

(सभ केओ बहार भय गेल ।)

इति द्वादश-नामसँ युक्त महाकवि नन्दीपतिक बनाओल
श्रीकृष्णकेलिमाला मे 'राधाक द्वारा कृष्णक मान छोड़ायब'
नामक तेसर अङ्क समाप्त ।

४२—रहे रे घोँघट । ४३ —तृतीयः स्कन्धः—क ख ।



अथ चतुर्थोऽङ्कः

(कन्दर्पावतार-माधवो राधादि-विलासकुशलः [1]सकल-गोपिकाभिः सह कतिचन[2] दिवसान् विहारं कृत्वा मथुरा-गमनं संचिन्तयति ।)

(अथ दोहा) —

व्रजवासी सानन्द सकल, अहोनिशि हरिक समाज ।
सर्गहु तह गोकुल अधिक, कोटि कोटि सुरराज ॥१॥
यमुना-तीर कदम्ब वन, वट निकुञ्ज सब ठाम ।
राधा माधव केलि कर, जनि रति[3]—सङ्गे काम ॥२॥
माधव भेल छवि गोपसुत, कारण गोपी – रास ।
वैकुण्ठहु[4] दुमिल[4] बुझव ई दिढ़ एहन विलास ॥३॥

(अथ रास-गीतमाह)—१

सभूषणा समस्त गोपिकाङ्गना कलावती ।
अनेक नायिका, मुरारि एक नायिका—पती ।

चारिम अङ्क

(कामदेवक अवतार स्वरूप सुन्दर श्रीकृष्ण राधा आदि गोपीसभक संग विलास करबा मे पटु भय सभ गोपीक संग कतोक दिन विहार कय मथुरा नगर जयबाक विचार करैत छथि ।)

अहोनिशि – दिनराति । हरिक समाज – कृष्णक लग । सर्गहु तह – स्वर्गहु सँ । सुर राज – देवताक रूप मे शोभित ॥१॥ वट – बड़क गाछ । निकुञ्ज – लतागृह । रति सङ्गे काम – कामदेव अपन पत्नी रतिक संग ॥२॥
छवि गोपसुत – गोआरक बेटाक रूप धारण कयने छथि । दिढ़ – निश्चय ॥३॥

(आब रास-गीत कहैत छथि) – १

गोपिकाङ्गना – सुन्दरी गोपी सभ । रती – केलि । कुमुद्वती – कुमुदिनी ।

१ – शकल । २ – कतिदिवसं । ३—रतिक – क ख । ४—दुर्लभ ।

विचित्र कओन जओ बहुत[५] कृष्ण सौं करए रती[६] ।
कि[७] एक चन्द्रिका, अनेक फुल्लिता कुमुद्वती ॥
प्रसून हार दए विहार हाव[८] कए विलासिनी ।
विकार कए विमोहथी कतेक हृद्य—हासिनी ॥
कतेक बेरि हाथ जोड़ि जोड़ि बीनती करए ।
कतेक कें कदर्थ क्रुद्ध[९] करथि पीडिता तरए ॥
समच्छ बच्छ राख[१०] तीरि बधि रज्जु बाहुकें ।
कतेक देरि चूमि चूमि बाधि[११] राधिकाहु कें ॥
नचाए नग्नि[१२] कए कतेक हस्ततालिकादि दए ।
बाजय गाब गोपिका कतेक नर्तकी भए[१३] ॥
कलावती कतेक बीपरीत[१४] लए बेआकुलि ।
हृदय बुझाब, गए लगाब कृष्ण भाल टीकुलि(१४) ॥
(१५)मुरारि कए बधूक भेष, गोपिका पुरुष कए ।
अथवक ई [१५]नथाक एहि रङ्ग रङ्ग केलि कए ॥
नितान्त कान्त विश्वरूप इष्ट भाव[१६] भावई ।
'सुबुद्धि' कामिनी [१७]हृदएक हाव राग [१८]गावई ।

प्रसून हार । फूलक गजरा । हाव – कामजनित चेष्टा । हृद्य – मनोहर । कदर्थ – अकारण, बेकसूर । समच्छ बच्छ – समक्ष मे बच्छा कें । तीर – झीकि । बधि रज्जु बाहु कें – डोरीरूपी बाँहि कें बढ़ाय । बाधि – छेकि वा बान्हि । नग्नि – नाङटि । हस्ततालिकादि – थपड़ी । बीपरीत लय – विपरीत रतिक हेतु । गए – जाय । कृष्णभाल – कृष्णक कपार मे । मुरारि – कृष्ण । बधूक – स्त्रीक । पुरुष कय – पुरुषक रूप धारण कय । नितान्त – अत्यन्त । कान्त – प्रिय । विश्वरूप – विराट् स्वरूप (श्रीकृष्ण) क । इष्ट भाव – अभिलषित भावनाक रूपमे । भावई – ध्यान करैत अछि । हाव – विलास चेष्टा ॥

५—बहुत । ६—रति - क ख । ७ - अनेकओ चन्द्रिका फुल्लिलता - क ख ।
८ - हार - क ख । ९—क्रुद्ध मएकथ । १०—राखती विवधि रज्जुबाहुकः ।
११—बाधिहु काहुकें—क ख । १२—नग्नी । १३—चए । (१४) - भालटी-क;
भालही-ख । १४—बिपरीत । (१५) - मुरारी । १५ - लथा करें ।
१६ - ० । १७ - हृदयक । १८ - गावही ।

राधिका—सहे ! [१९]लज्जेमि । विब्भला कि भणामि । [सखे ! लज्जे । विह्वला कि भणामि ?]

श्रीकृष्ण—प्रिये ! विपीदसीति युक्तं [२०]वरसा नाऽसि, ततो लज्जसे[२१] कथम्? षोडश-सहस्रसंख्यक-[२२]वरविलासवती त्वमेका केवलं नेव ?

(ततः श्लोकः)—

कृत्वा रासविलासं [२३]कान्तारादागतो भवनम् ।
गोपीभिः सह देवो विह्वल-कामो दामोदरो विज्ञः ॥१॥
(इति सर्वे निष्क्रान्ताः)

(अथ दोहा)

[२४]मानवाहु अति पीन उर, हरि हलधर दुहु भाए[२५] ।
यमुना तीर कदम्ब तर, प्रतिदिन सरम खेलाए ॥४॥
[२६]कंसे कहल ई सुनिकहु, केशी असुर बजाए ।
हरि हलधर दुहु मत्त अछि, तकरा मारह जाए ॥५॥

राधिका—प्रिय मित्र ! लजाइत छी । तें विह्वला हम की बाजू ?

श्रीकृष्ण—प्रिये ! विषाद करैत छी से उचिते, बच्ची तें नहि छी, तखन लजाइत छी कियेक ? सोलह हजार नायिका मे श्रेष्ठ विलासिनी अहाँ एकमात्र नहि छी की ?

(तखन श्लोक)—

गोपीसभक संग रास विलास कय ज्ञानवान् विह्वल-कामना-बला श्रीकृष्ण बन सँ घर अयलाह ॥१॥
(सभ बहार भय गेल ।)

(दोहा)—

मानवाहु – मनुष्यो भयकें । अतिपीन उर – अत्यन्त पुष्ट छातीबला । हरि हलधर – कृष्ण ओ बलराम । सरम – श्रम, कुश्ती, दण्डबैसक ॥४॥ केशी असुर – केशी नामक राक्षसकें । मत्त – गर्वयुक्त ॥५॥

१९—लजस्सी बहिर मो विह्वली - क ख । २०—वरसनासि । २१ सि । २२—वरविलास—क ख । २३—कान्तारात्ता । २४ - मानवाहुंति पीन - क ख । २५ - भाइ २६ - (एतय सँ केवल 'क' पोथीक पाठ थिक) ।

[तरङ्गासुर प्रवेशिका गीतम्]---२

केशी असुर देल परवेस ।
अति बलमन्त भयानक भेस ॥
हिंसि हिंसि खुरे खुरे मेदनि काट।
मद जल बरिसि पिछर कर बाट ॥
कुदए कुरङ्ग जकें दोस उड़ाए ।
जनि बिचे डोलए चओर फहराए ॥
लगें पवन-जित चलवह बान ।
कोपल देखि निरोधल कान ॥
नन्दीपति आबे नहि परकार ।
जखने होएत हरि कुदि असवार ॥

(ततः प्रविशति केशी)

(दोहा)

केशी इ कहल कृष्णकें, आबे कतए तोहें जाह ।
कोपल हरि ! असवार हमे, तरङ्ग समुद्र अथाह ॥६॥

(केशो दैत्यक प्रवेश करबाक गीत) - २

हिंसि – मारिकें हिंसाकय । खुरे – खुर सँ । मेदनि – मेदिनी, पृथ्वी । मदजल – मत्त हाथीक कनपट्टी सँ बहैत पानि । बरिसि – बरसाय । पिछर – पिच्छर । कुरङ्ग – हरिण । दोस – दोष, धूलि । बिचे – आकाशक बीच मे । चओर – चामर, चमरी मृगक केश । पवनजित – हवाकें जितनिहार, हवो सँ तेज गतिवला बाण । कोपल – क्रुद्ध भेल केशी कें । निरोधल – रोकल, निवारण कयल । कान – कृष्ण । असवार – चढ़ल ॥

(तखन केशी प्रवेश करैत अछि ।)

कोपल – क्रुद्ध भेल हम । तरङ्ग समुद्र अथाह – थाह-रहित समुद्रक लहरि स्वरूप हम तरङ्गासुर केशी ॥६॥

(तरङ्ग-भाषित-साकल्यं प्रतिवदति[27] हलधरो गीतेन)--३

रे रे अबल ! प्रबल[28] मने बूझसि, निज अभिमान पहारे ।
बड़हि पुरुष सञो रोस बढ़ाबसि, अधम इहो बेवहारे ॥
मुरुख पुरुष सेहे जकरथि कामो, तञि तोर एहन बिचारे ।
लघु कए लेखि देखि दुहु बालक, जासि करए परहारे ॥
काल-पुरुष सञो केओ न पारए, कुकुर बाघ सञो हारे ।
मृगपति छोट जइअओ रह तहुखने, करिवर कुम्भ बिदारे ॥
जेहने तरङ्ग ! तोहें छह तेहने, जसोदासुत असवारे ।
आज भला घर बेंन देलह अछि, सभे बल होएत बहारे ॥
नन्दीपति कह ई दिन अनिहह, एहि नहि आब बिलम्बे ।
प्रान गमाए परमपद पओलह, हरि न करए अवलम्बे ॥

(दोहा)--

केसी मारल कृष्ण कें, कुदि कुदि लाख लछाड़ ।
सुअरक कोड़ने सुनल अछि, उपड़ल कतहु पहाड़ ? ॥७॥

(श्रीकृष्णः सक्रोधं लाङ्गूलं गृहीत्वा वारत्रयं गगने प्रदक्षिणं कृत्वा तरङ्गासुरं भूमौ सन्ताडयति । केशी ....[29]...) ।

[अपूर्ण]

(तरङ्गासुरक सकल उक्तिक जबाब बलराम देने छथि गीतक द्वारा) - ३

अबल – कमजोर । प्रबल मने – अपना मने जोरगर । निज – अपन । अभिमान पहाड़ें – अहंकार पहाड़ सनक । रोस – द्वेष । मुरुख – मूर्ख । लघु – छोट । लेखि – लेखा कय । दुहु बालक – बलराम ओ कृष्ण । जासि – जकरा पर । परहारे – प्रहार । पारए – ऊपर अछि । मृगपति – सिंह । करिवर कुम्भ – हाथीक मस्तक के । जसोदासुत – कृष्ण । असवारे – चढ़ाइ कयने छथुन । घर बेंन – घर अबि निमन्त्रण । परमपद – सद्‌गति ।

(दोहा)--लाख लछाड़ – अनेको बेरि नोछड़लक । सुअरक – सूकरक ॥७॥

(श्रीकृष्णक क्रोधपूर्वक नाङरि पकड़ि तीन बेर आकाशमे घुमाय तरङ्गासुरकें भूमि पर पटकैत छथि । केशी ...... ।

[अपूर्ण]

२७—० (अभाव)—क । २८ - प्रबल बुझति - क । २९ - एतय सँ आगूक ग्रन्थ अनुपलब्ध अछि ।

परिशिष्ट

नन्दीपतिक स्फुट गीत

नन्दीपतिक स्फुट-गीतक विविध पाठभेद सहित संकलन डॉ॰ रामदेव झा 'नन्दीपति गीतिमाला' नामे मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरियासराय, दरभङ्गा सँ १९६५ ई॰ मे सम्पादित कय प्रकाशित करओने छथि। एहि मे विभिन्न 'गीतसंग्रह' ओ गाइनिसभक कापीसँ गीत संगृहीत अछि। प्रस्तुत संग्रह मे उक्त गीतिमालाक सकल गीत उचित-पाठ-ग्रहणपूर्वक पाठसंशोधन कय लेल गेल अछि। एक गीत (गीतसं॰—७) ७-११-१९८२क मिथिलामिहिर मे प्रकाशित डॉ॰ वेदनाथ झाक निबन्ध 'गीतकार बादरि' सँ लेल गेल अछि। सकल गीतक स्पष्ट ओ शुद्ध रूप प्रस्तुत करबाक प्रयास कयल गेल अछि।

प्रस्तुत संग्रहक संख्या	नन्दीपतिगीतिमालाक सं॰	
१ सँ ६	१ सँ ६	
७	×	—७-११-८२ 'मिहिर'।
८ सँ ११	८ सँ ११	
१२	७	
१३	१२	
१४	परिशिष्ट मे॰२	
१५	,, ॰१	
१६	१३	
१७	१४	
१८	१५	
१९	१६	
२०	परिशिष्ट मे॰३	
२१	,, ॰४	
×	१७ सँ २१	—कृष्णकेलिमाला।

नन्दीपतिक स्फुट गीत

गौरी पूजा

गीत संख्या--१

गिरिजा पूजय चलु चलु बाला ।
देथु अभय वर मदन गोपाला ।।
गोमतीक तट लसु फुलवारी ।
से फुल तोड़थि राजकुमारी ।।
बाटिहिँ चनान, करपूर तमोर ।
गौरिहि दय रुक्मिनि कर जोर ।।
पूजिअ गिरिजे ! शुभ यश लेहु ।
जगन्नाथ स्वामी मोहि देहु ।।
नन्दीपति भन सुनह सेआनि ।
देथु अभय वर - सारङ्गपानि ।।

महेशवानी गीतसं०--२

माला गाँथू हे गौरी ।
शिवशङ्कर केँ पहिरायब, माला गाँथू हे गौरी ।।
नहि घर हम सूत चरखा काटल, नहि बाँटल हम डोरी ।
पैँच उधार कहाँ सँ लायब, नहि घर दाम न कौड़ी ।।
एकसय आठ रुद्र केर माला, सौँसे सर्पक डोरी ।
निर्गुण बान्ह गेँठ दस बान्हल, नागफणा केर भूड़ी ।।
माला गाँथि कयल तैयारी, लय चलु शिवक दुआरी ।
पारवती-पति थिकथि दिगम्बर, देखि माल मुसकाई ।।

भनहि नन्दीपति सुनु ए मनाइनि, एहो पद थिक निरबानी ।
जातिपाति एको नहि हिनका, तीन-भुवन के दानी ।।

उचिती

गीतसं० --३

बड़ ऊँच हेमत पहाड़ रे । निकसल निरमल धार रे ।।
तनिकहु गङ्गा नाम रे । जनिक न पाव उपाम रे ।।
पुरुषक एहने बानि रे । सेवल से हम जानि रे ।।
से को होथि कठोर रे । तम नहि करथि उजोर रे ।।
कह कोविद अवधारि रे । सुपुरुख करथि विचारि रे ।।

गीतसं० --४

हम अबला अज्ञानि रे । शशि सेबल गुण जानि रे ।।
आज हमर बड़ भाग रे । एहन परसमनि पाव रे ।।
हम सोँ अनेक कुरीति रे । सुपुरुष ने तेज पिरीति रे ।।
डेङि बुड़ल मझधार रे । लय जहाज कए पार रे ।।
सात खण्ड कुसिआर रे । निकसल प्रेम पिआर रे ।।
कह बादरि अवधारि रे । गुनमन्त जग दुइ-चारि रे ।।

गीतसं --५

जओँ कए सुजन सिनेह रे । अनुपम पाहुन - नेह रे ।।
हेमहि मण्डप हेम रे । चानन बन कत नीम रे ।।
काग कोइली एक भाँति रे । भेम्ह भमर एक काँति रे ।।
हेम हरदि कत बीच रे । गुनहि चिन्ही उच-नीच रे ।।

मनि कादब लपटाए रे। तैओ न तकर गुन जाए रे॥
अलि कों कुसुम अनेक रे। मालति कें अलि एक रे॥
कह बादरि अवधारि रे। सुपुरुष जन दुइ चारि रे॥

गीतसं०--६

प्रथम समागम भेल रे। हठहि रइनि बिति गेल रे॥
नव तन नव अनुराग रे। विनु परिचय रस जाग रे॥
आव ने जिउब विनु कन्त रे। विरहे जीवक अन्त रे॥
नन्दीपति कवि भान रे। सुपुरुख ने करय निदान रे॥

तिरहुति

गीतसं०--७

हरि हरि बिलपि विलासिनि रे, लोचन जलधारा।
चिकुर तिमिर घन पसरल रे, जनि बिजुलि अन्धारा॥
उरज कुमुद, मुख हिमकरें, रे नहि कर परगासे।
निअरहि मदन विधुन्तुद रे, जनि करत गरासे॥
नील-वसने तन बेढ़ल रे, उर मोतिम हारा।
सजल जलदे कत झाँपल रे, जगमग कर तारा॥
उड़ि उड़ि खस कत योगिनि रे, विधि आजुति जाती।
पलक पवन परिपूरल रे, जनि भादव राती॥
दामिनि दमकि दमकि हनु रे, हनि विरहिनि वामा।
कह अनुभव कवि बादरि रे, धैरज धरु रामा॥

गीतसं०--८

चललि शयन - घर सुन्दरि रे, आनन अरविन्दा।
शिर सँ ससरल घोघट रे, जनि ऊगल चन्दा॥

चलइत नूपुर कङ्कण रे, दुहु रव एक काले।
दुर सँ हंस - सबद सुनि रे, सुनि बोल मराले॥
नाभि - विवर सँ निकसल रे, रोमावलि - सापे।
से सौतिन - बध - कारक रे, आँचर धर झाँपे॥
उड़हु न जान चकेवा रे, दुहु कुच उर छाजे।
पवन - परस उड़ आँचर रे, जनि झपटल बाजे॥
नव परिचय, नव कामिनि रे, भूषण अनुरागे।
कह अनुभव कवि बादरि रे, सुनइत सुख लागे॥

गीतसं०--९

ना धरु ना धरु हे, कर मोर कन्हाई।
हम पर - नागरि हे, तोहें यादव - राई॥
छीक पड़ल घर हे, दधि चललहुँ बीकय।
बाटहि झगड़ भेल हे, जओं पलटब नीकय॥
गोरस विरस भेल हे, नहि लेल गहिकिनिञ्ञा।
सासु ननदि घर हे, मोरा कहत कहिनिञ्ञा॥
सखि अगुआइलि हे, वन माँझ नड़ाई।
कि करब कानू हे, हम तोहर बड़ाई॥
नन्दीपति कहु हे, सुनु कुमर कन्हाई।
पार कइए दएह हे, तोरा नन्द - दोहाई॥

गीतसं०--१०

माधव! ई नहि उचित विचारे।
जनिक एहन धनि, कामकला सनि, से किए कर व्यभिचारे॥
प्रानहु ताहि अधिक छलि जे धनि, हृदइक हार समाने।
कोपरि, आन कञोन विधि ताकिय, कि कहब तनिक गेआने॥

पढ़ल पुरुष भए मुरुख भेलाह तोहें, सहजहि ई अरविन्दा ।
से सिनुआरि कुसुम, तेजि सेविय, सहजहि भम्हर मलिन्दा ॥
कृपन पुरुष कॉ केअओ ने भल कह, ई अछि जग उपहासे ।
निज धन अछइत से नहि भोगथि, केवल परहिक आसे ॥
भनहि नन्दीपति सुनिअ रसिक-जन ! की फल अधिक जनाई ।
माङि आनिअ वित, तें जँ होय नित, अपन करिअ कथलाई ॥

गीतसं० --११

माधव ! एहन दिवस भेल मोरा ।
अपन करम फल हम उपभोगब, ताहि दोष कोन तोरा ॥
जाहि नगर चानन नहि चीन्हथि, अइर आदर कए रोपे ।
बिनु गुन बुझले जनिक अनादर, उचित न तापर कोपे ॥
सगुन पुरुष निरगुन निन्दल जौं, जीवन जड़ कें देला ।
जौं करमी फुल सबहु सराहिए, तौं कि कमल-गुन गेला ॥
थल गुन आनठाम परगासल, तैं की तनिक अभेला ।
गिरि दरि ताहि तिमिर रहु, तापर रवि महिमा हिन भेला ?॥
जनिक सरस मन, ताहि कहिए गुन, पसु सिसु अबुझ न बूझे ।
नन्दीपति भन, तैं देखु दरपन, आन्हर कॉ की सूझे ॥

गीतसं --१२

सुन्दरि चललि शयन घर ना ।
हँसि हँसि सखि सब कर धरु ना ॥
जइतहि लागु परम डर ना ।
ससि जसु कांपथि राहु डर ना ॥
हार टुटिअ छिड़िआय गेल ना ।
भूषण बसन लोटाय गेल ना ॥

रोय रोय कजरा दहाय गेल ना ।
आदंकहि सिन्दुर मेटाय गेल ना ॥
नन्दीपति[1] कवि गाओल ना ।
दुख सहि सहि सुख पाओल ना ॥

बटगबनी

गीतसं --१३

चन्द्रबदनि नवि कामिनि सजनी, यामिनि अति अन्हियारि ।
सखि सङ्ग चलति केलिघर सजनी, करपल्लव दिप वारि ॥
पवन झकोर जोर बह सजनी, तें लेल अञ्चल झांपि ।
देखि उरज अति उन्नत सजनी, दीन रासि उठ कांपि ॥
झपझप कए कत कांपय सजनी, बिलखि धुनए निज माथ ।
कथिलए जनम देल मोर सजनी, चतुरानन बिनु हाथ ॥
नन्दीपति कवि गाओल सजनी, ई जग थीक कुमान ।
परस उरज अतिसुन्दर सजनी, माधव सिंह रस जान ॥

गीतसं --१४

एक हम नागरि बैसें सजनी गे, दोसर पिया परदेस ।
मोर मन विकल दहोदिस सजनी गे, केओ नहि कहय उदेस ॥
अहोनिस पहुपथ हेरि हेरि सजनी गे, चौदिस लागु अन्धार ।
विरह वेदन तन परसल सजनी गे, नयन बहय जलधार ॥
कोकिल मोर सोर सुनि सजनी गे, मन मन करिअ विचार ।
पाओस सकल निराएल सजनी गे, सरद कएल उपचार ॥

---

1 - 'बुद्धिनाथ' वा 'बुद्धिलाल' - पाठान्तर ।

चान-किरण सँ निकसल सजनी गे, मारु मदन समधानि ।
नागर नेह तेजल किए सजनी गे, पाब पराभव पानि ।।
नन्दीपति भन सुनु जग सजनी गे, पडि भय करि अनुमान ।
एहि सों भूप दोसर नहि सजनी गे, माधव सिंह समान ।।

गीतसं०—१५

रसमय समय बसन्त । कि करब लग नहि कन्त ।।
अति आकुल मन मोर । नयन ढरकि पड़ नोर ।।
निरदय दय सुख गेल । मन भरि मिलियो ने भेल ।।
एत दिन छल मोहि लाज । विरहेँ बेकत भेल आज ।।
परम करम मोर मन्द । विष भेल चानन चन्द ।।
एहि तह अधिक न सोग । पहिलहि बयस वियोग ।।
नन्दीपति कवि गाब । विष्णु सिंह बुझ भाब ।।

गीतसं—१६

भाँगहि चाहु चिकुर भर सजनी, सहजहिँ दूबरि देह ।
प्रथमहि सुपहु - समागम सजनी, उपजल अधिक सन्देह ।।
दूरहि सुतल विमुख भए सजनी, विरल बसने मुख झाँपि ।
अभिनव केलिक नामहि सजनी, नहि नहि कए उठ काँपि ।।
नूपुर काढ़ि नड़ाओल सजनी, हरल बसन अवशेष ।
भाव भरल नव नागर सजनी, उनमत भेल विशेष ।।
नयन नोर भरि बाजलि सजनी, भल शपथक निरबाह ।
पुरुष न जान नारिदुख सजनी, केवल निज सुख चाह ।।
आलस अलक बेआकुल सजनी, न रहलि निजवश नारि ।
अतिकौशल पुहु परसल सजनी, एहि अवसर अवधारि ।।

धैरज धए रहु सुवदनि ! सजनी, इएह उचित पुहि ठाम ।
नन्दीपति बिनु साहस सजनी, सुखद न होअ परिनाम ।।

गीतसं०—१७

की कहु, पहु परदेश गेल, सजनी गे, की कहु किछु ने सोहाय ।
फूजल केश, नीर बहु, सजनी गे, काजर गेल दहाय ।।
चूड़ी बसन भार भेल, सजनी गे, भेल यौवन अतिभार ।।
आङन मोरा लेखे बिजुवन, सजनी गे, घर भेल दिवस अन्हार ।।
हरि बिनु सेज सून भेल, सजनी गे, गेड़ुआ मोहि न सोहाय ।
जौँ नहि प्रीतम अओताह, सजनी गे, मरब जहर विष खाय ।।
नन्दीपति भन मन दय, सजनी गे, मन जनु करिय उदास ।
तकर कतेक अभिलाषय, सजनी गे, देलन्हि बहु बिसवास ।।

गोपी-कृष्ण

गीतसं०—१८

चललि मधुरपुर साजि रे, दधि बेचन बाला ।
यमुना निकट तट जाय रे, रोकल नन्दलाला ।।
मुख आँचर पट ओत रे, दए बिहुँसलि वामा ।
पुलक पुरल तन नेह रे, देखि सुन्दर श्यामा ।।
मुरली अधर बिराजे रे, सुन्दर सुख रासी ।
मन मोर हरल गोपाल रे, गोकुल केर बासी ।।
करब कओन परकार रे, सोचए ब्रजबाला ।
पड़ल कुञ्ज बन साँझ रे, बैरी भेल काला ।।
जाय देबन्हि उपराग रे, यशोमति महरानी ।
तोर पुत हटलो न मान रे, लुट माल बिरानी ।।

नन्दीपति[1] भन नेह रे, सुनु गोप-कुमारी।
तोहि छाड़ि भजहि ने आन रे, तोखे गिरिधारी ॥

गीतसं०—१९

जसोमति पूत मुरारि ना।
सखि हे! लेलन्हि जमुना घटबारि ना॥
चललि दही-दुध बीक ना।
सखि हे! संग दोसर नहि थीक ना॥
कत कत कयल निहोर ना।
सखि हे! नहि बुझ परम कठोर ना॥
आयल जमुना जल बाढ़ि ना।
सखि हे! भेलहुँ कदम तर ठाढ़ि ना॥
बाट भेटिअ गेल कान्ह ना।
सखि हे! ओही बृन्दावन माझ ना॥
नन्दीपति कवि भान ना।
सखि हे! नन्दतनय रस जान जा॥

गणपति-पूजा

गीतसं०—२०

मत्त-गजवर-मधुर-गामिनि, सबहु सखि मिलि चललि कामिनि,
केलि कौतुक, देखि शुभ घड़ि, हरषि सुख भय रे॥
साज कए कत सखी निकसलि, लाज कए पहु-पास बैसलि,
तखन अदभुत देखल बाला, कुसुम माला रे॥

१—'गौरीपति'—पाठान्तर।

रक्त-चानन जवा-जाला, हृदय-हारक फूल माला,
तिरा फुल मधुरीक डाला, बकुल फूल कत रे॥
(कमल नव करवीर ओड़हुल, फूल बकहुल रे॥)
अर्घ सुरसरि नोर ढारल, आनि चौमुख दीप बारल,
धूप दय नैवेद्य सांठल, [गीत गाओल रे] ॥
बादरि कृष्ण विचारि गाओल गौरि गणपति पूजि पाओल,
जेहन मन छल तेहन भेटल, दुःख मेटल रे॥

गीतसं०—२१

साजि सकल शृंगार माला, गौरि पूजय चललि बाला,
प्रिय सखी सभ सङ्ग लय कत, रङ्ग करयित रे॥
साजि चानन फूल डाला, ताहि ऊपर सिन्दुर माला,
अगर गुग्गुल धूप दय कत दीप चौमुख रे॥
दक्षिण चिर लय मण्डप छाड़ल, ताहि ऊपर कलस राखल,
बेढ़ल वन्दनवार पांती, भांति-भांतिक रे॥
कतहु वीणा वेणु गाजय, कतहु झालि मृदङ्ग बाजय,
कतहु किन्नर गीत गावय, भाव लावय रे॥
बादरि कृष्ण विचारि गाओल, गौरि गणपति पूजि पाओल
जेहन मन छल तेहन पाओल, दुःख मेटल रे॥

